Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

107

Kula Lakshmee

कुल-लक्ष्मी

(स्त्री-जाति के लिये अत्यंत उपयोगी पुस्तक)

बँगला के सुप्रसिद्ध लेखक बाबू सुरेन्द्रनाथ राय के
"कुललक्ष्मी" नामक ग्रन्थ का अनुवाद

Purshotam Das Lohia.

अनुवादक
पुरुषोत्तमदास लोहिया

SPS
305.4364 P 95 K
10522

प्रकाशक
हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग

तीसरा संस्करण] दीपमाला, १९८५ [मूल्य सवा रुपया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

10522

पहला संस्करण—दीपमाला, १९७६—१०००
दूसरा संस्करण—ज्येष्ठ, १९७८—२०००
तीसरा संस्करण—दीपमाला, १९८५—२०००

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीयुत रामकुमार नेवटिया

फतहपुर (जयपुर)

प्रिय बन्धु,

तुम स्त्री-शिक्षा के बड़े प्रेमी हो, और मेरे हृदय में तुम्हारे लिये बड़ा प्रेम है; अतएव मैं अपने प्रेम से तुम्हारे प्रेम की वस्तु, यह "कुललक्ष्मी" पुस्तक, तुम्हें समर्पित करता हूँ ।

पुरुषोत्तमदास लोहिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनुवादक का निवेदन

श्रीयुत बाबू सुरेन्द्रनाथराय-लिखित बंगला पुस्तक "कुल-लक्ष्मी" का बंगाल के शिक्षित स्त्री-समाज में बड़ा आदर है। यह पुस्तक देखनेपर मेरी यह प्रबल इच्छा हुई कि इसका हिन्दी-अनुवाद हो जाय तो हिन्दी जाननेवाली बहनें भी इससे लाभ उठा सकें। उसी प्रबल इच्छा की प्रेरणा से, किसी सुयोग्य अनुवादक द्वारा पुस्तक अनुवादित होने में विलम्ब की संभावना जानकर, मैंने स्वयं इस काम में हाथ लगा दिया। न तो मैं हिन्दी का लेखक हूँ और न साहित्यिक व्यवसायी ही हूँ, ऐसी दशा में मैंने यह बड़े दुस्साहस का काम किया है। अतएव अनुवाद में मेरी ओर से कितनी ही त्रुटियों का होना सम्भव है। उन सब का जिम्मेदार मैं हूँ, मूल लेखक महोदय नहीं। मुझ से जहाँतक हो सका, मैंने मूल लेखक महोदय के भावों को सर-लतापूर्वक समझाने का प्रयत्न किया है, और यथाशक्ति भाषा की सरलता का भी ध्यान रक्खा है। फिर भी जो त्रुटियाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रह गई हों उनके लिये मैं अपनी पढ़ी-लिखी बहनों से क्षमा चाहता हूँ। कोई त्रुटि मुझे बताई जायगी तो मैं बहुत अनुगृहीत होऊँगा और अगले संस्करण में उसका सुधार करने का उद्योग करूँगा।

यह पुस्तक कैसी है, इस विषय में मैं इतना ही कहना पर्याप्त समझता हूँ कि इसके मूल लेखक बंगला के सुप्रसिद्ध लेखकों में से हैं। ऐसी पुस्तक लिखकर, स्त्री-समाज का हित साधन करने के लिये मैं उन्हें अनेक धन्यवाद देता हूँ। जिस सद्भाव से प्रेरित होकर उन्होंने यह पुस्तक लिखी है, उसी सद्‌भाव से प्रेरित होकर मैंने इसका हिन्दी-अनुवाद किया है। अतएव मैं आशा करता हूँ कि सुरेन्द्र बाबू मेरी इस चेष्टा को भी सद्भाव की दृष्टि से देखेंगे।

इस पुस्तक के प्रकाशन का सब अधिकार मैंने अपने मित्र पण्डित रामनरेशजी त्रिपाठी को दे दिया है।

दीपावली, १९७६
५१।५२ बड़तल्ला स्ट्रीट,
कलकत्ता

पुरुषोत्तमदास लोहिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूची

विषय			पृष्ठांक
प्रस्तावना	...	...	
स्त्रियों के गुण	...	...	१
सौन्दर्य की सृष्टि	...	...	१
लज्जा	...	...	९
नम्रता	...	...	१३
गम्भीरता	...	...	१७
सरलता	...	...	१८
सन्तोष	...	...	२४
श्रमशीलता	...	...	३०
स्नेहशीलता	...	...	३२
अतिथि-सेवा	...	...	३४
देव-सेवा	...	...	३५
सेवा-शुश्रूषा	...	...	३७

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय			पृष्ठांक
सुजनता	...	...	३९
कर्त्तव्य-ज्ञान	...	...	४०
सतीत्व	...	...	४१
स्त्रियों के दोष	...	...	**५५**
आलस्य	...	...	५६
विलासिता	...	...	५८
स्वेच्छाचारिता	...	...	६२
अव्यवस्था	...	...	६६
कलह	...	...	७०
दूसरों की निन्दा और ईर्ष्या-द्वेष		...	७४
अभिमान और अहंकार	...	...	७६
स्वास्थ्य से लापरवाही	...	...	७८
हास-परिहास और व्यर्थ वार्त्तालाप		...	८२
असहनशीलता	...	...	८५
अपव्यय	...	...	८८
पति के प्रति स्त्री का कर्त्तव्य		...	**९०**
सास-ससुर के प्रति बहू का कर्त्तव्य			**११४**
अन्यान्य आत्मीयों के प्रति स्त्री का कर्त्तव्य			**१२४**
जेठ	...	...	१२४
देवर	...	...	१२६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय	पृष्ठांक
जेठानी, देवरानी और ननद इत्यादि ...	१२७
नौकर-नौकरानी आदि	१२८
रोज़ के काम	**१३२**
स्त्रियों का दायित्व	१३२
सबेरे के काम	१३३
रसोई	१३३
पान बनाना	१३५
स्वच्छता और सुव्यवस्था	१३५
लिखना-पढ़ना और दस्तकारी ...	१३६
रोजाना हिसाब	१३७
सेवा-शुश्रूषा	१३७
व्रत-उपवास	१३८
पढ़ने योग्य पुस्तकें	१३८
मितव्यय	१३९
पौराणिक नीति-कथा	**१४०**
लक्ष्मी और रुक्मिणी का संवाद ...	१४०
सुमना और शाण्डिली का संवाद ...	१४३
पार्वती का स्त्रीधर्म-वर्णन ...	१४६
द्रौपदी और सत्यभामा का संवाद ...	१४९

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Chani Kumari Zutshi

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रस्तावना

स्त्री-शिक्षा का आवश्यकता

बाजे-गाजे और धूमधाम के साथ जब नई बहू पहले-पहल अपनी ससुराल में आती है तो घरवाले मारे ख़ुशी के फूले नहीं समाते और बहू के प्रति अत्यन्त स्नेह तथा आदर प्रकट करने लगते हैं। सास यह सोचकर प्रसन्न होती है कि बहू के द्वारा गृहस्थी के काम-धंधे में सहायता मिलेगी। और ससुर यह सोचकर हर्ष मनाते हैं कि बहू हमारी सेवा करेगी, बुढ़ापा सुख से कटेगा। इधर पति अपने मन ही मन नाना प्रकार की कल्पनाएँ करता हुआ आनन्दपूर्वक उस नवबधू को ग्रहण करता है। इनके अतिरिक्त जेठ, जेठानी, देवर, देवरानो, ननद इत्यादि घर के सभी लोग नई बहू को पाकर कितने ही सुखों की आशा में निमग्न हो जाते हैं। परन्तु हा! ये सारी आशाएँ और सारे सुखस्वप्न देखते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही देखते दो दिन के बाद न जाने किधर चले जाते हैं! सबेरे और संध्या के समय आकाश में उदयास्त की लालिमा, उजेली रात में प्रभात के समय नदी के किनारे कमल के पत्ते पर पड़ी हुई पानी की बूँद और घनघोर बादलों में कौंधे की लपक जिस प्रकार क्षण भर अपनी शोभा दिखला कर विलीन हो जाती है, उसी प्रकार उन आशाओं की मोहिनी मूर्त्ति प्रायः सभी घरों में देखते ही देखते लुप्त हो जाती है। इसका कारण क्या है? क्या किसी ने क्षणमात्र के लिए भी इस पर विचार किया है? हमारी समझ में स्त्री-शिक्षा का अभाव ही इस दुर्भाग्य का मुख्य कारण है! यदि हमारी गृहदेवियाँ अपने पिता के घर से उपयुक्त शिक्षा ग्रहण कर के आवें, अथवा पति-गृह में आकर शीघ्र ही वह शिक्षा प्राप्त कर लें तो यह दशा अनेक अंशों में दूर हो सकती है। परन्तु इस विषय में एक सन्देह है—

बहुत से लोग यह कह सकते हैं कि क्या हमारे देश में पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ नहीं हैं? फिर उनमें से भी कितनी ही ससुराल में जाकर अपने घरवालों की प्रीतिपात्र क्यों नहीं बन सकतीं? इस प्रश्न के उत्तर में हम जो कुछ कहेंगे, वह यद्यपि कुछ गूढ़ जान पड़ेगा, तथापि ध्यानपूर्वक पढ़ने और विचार करने से अच्छी तरह समझ में आ जायगा। स्त्री-शिक्षा का अर्थ केवल पढ़ना-लिखना ही नहीं है। पत्र-व्यवहार करना आ गया, पुस्तकें पढ़ना जान लिया,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दो चार परीक्षा भी पास कर डालीं, परन्तु इन सब से क्या हुआ ? स्त्री-शिक्षा की सीमा इन्हीं तक नहीं है। स्त्री-शिक्षा का सच्चा अर्थ स्त्रियों का कर्त्तव्य-ज्ञान तथा धर्माचरण है। सदा सत्कर्म करना और सद्धर्म तथा सदाचार का पालन करना ही स्त्री-शिक्षा है। इस प्रकार की शिक्षा ग्रहण न कर केवल बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़ने अथवा बड़े-बड़े लेख लिखने या कई-कई परीक्षाएँ पास कर लेने से लाभ की आशा करना व्यर्थ है। जो स्त्रियाँ केवल बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़-लिखकर तथा परीक्षाओं में उत्तीर्ण होकर ही विदुषी कहलाने की इच्छा रखती हैं, उन्हें हम कदापि विदुषी नहीं कह सकते और न हम उन्हें कभी सच्ची कुललक्ष्मी के रूप में देखने की आशा कर सकते हैं। किसी प्रकार से पढ़-लिख कर स्त्रियाँ विदुषी या सुशिक्षिता हो सकती हैं, यह समझना सरासर भूल है। बल्कि कभी-कभी उस शिक्षा का फल हित के विपरीत ही होता है। आजकल प्रायः देखा जाता है कि जो स्त्रियाँ पुरुषों का अनुकरण करके विदेशी भाषा आदि की शिक्षा प्राप्त करती हैं और तरह-तरह की परीक्षाएँ पास कर के सुशिक्षा का दम भरने लगती हैं, वे अपने घरवालों की आँखों का काँटा बनी रहती हैं। हिन्दू-आदर्श और हिन्दू वधुत्व की शिक्षा प्राप्त न करके वे हिन्दू-आदर्शों से भिन्न कितनी ही व्यर्थ और अनावश्यक बातें सीखती हैं। फल यह होता है कि वे दिनां-दिन हिन्दू-स्त्री के आदर्श से दूर हटती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाती हैं। यही कारण है कि ऐसी नवशिक्षिता बहुएँ अपने सास-ससुर को प्रसन्न नहीं रख सकतीं और प्रायः यहाँ तक नौबत आती है कि वे अपने पति को प्रसन्न रखने में भी असमर्थ रहती हैं। ऐसी दशा में नाम के लिए सुशिक्षिता होते हुए भी कुटुम्ब और समाज में उनकी निन्दा हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। फिर, जो ऐसी शिक्षा प्राप्त कर के सुशिक्षिता बनी हैं, उन्हें हम सच्ची सुशिक्षिता कैसे कहें ?

मान लो, तुमने अँग्रेजी पढ़ी और इन्ट्रेन्स पास किया। इतिहास, भूगोल आदि की शिक्षा प्राप्त की। अङ्गरेज़ी शब्दों का प्रयोग सीख लिया। जल को क्या कहते हैं ? नमक को क्या कहते हैं ? पति को क्या कहते हैं ? सब जान लिया। अङ्गरेजी में किस प्रकार पति को माई डियर (My Dear) ···अमुक—अर्थात् नाम के सहित—लम्बे लम्बे प्रेमपत्र लिखे जाते हैं, सो भी अच्छी तरह सीख लिया। परन्तु ऐसी दशा में यदि तुम एक हिन्दू-घर में प्रवेश करने के साथ ही इच्छापूर्वक इस शिक्षा का परिचय देना शुरू करो तो भला कौन सास-ससुर उसे देखकर चुप रह सकते हैं। हिन्दू-बहू अपने सास-ससुर को किस भाव से देखती है, पति को किस भाव से देखती है, अपना आचरण-व्यवहार कैसा रखती है—यह कुछ तुमने नहीं सीखा है, और ऐसी दशा में यदि तुम अपने आने के दूसरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही दिन सबेरे से कुर्सी-मेज लगाकर चाय पीना शुरू करो और घूँघट खोलकर सास-ससुर अथवा किसी बाहरी आदमी से भी किसी प्रकार की लज्जा न करके सब के साथ निःसंकोच हास-परिहास और वार्त्तालाप करने लगो। नमक को कहो साल्ट, जल को कहो वाटर, दुपहर के भोजन को कहो डिनर, सबेरे को कहो मार्निङ्ग, सन्ध्या को इव्निङ्ग, पति को कहो हस्बेन्ड ! खैर जाने दो, यदि, यह सब कुछ न भी करो, खाली घर का काम-धन्धा छोड़कर केवल बनी-ठनी बैठी ही रहो अथवा तरह-तरह की अङ्गरेज़ी पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ आदि लेकर भिन्न-भिन्न देशों की ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक तथा राजनैतिक बातें जानने में लगी रहो, तो क्या तुम्हारी यह भयङ्करी शिक्षा बिचारे सीधे-सादे सास-ससुर को भयभीत कर डालने के लिए काफ़ी नहीं है ? इसीलिए कहते हैं कि केवल लिखना-पढ़ना सीख लेना ही विद्या नहीं है। केवल विद्यालय की परीक्षाएँ पास करके ही स्त्रियाँ सुशिक्षिता नहीं बन जातीं। वरन् इसके लिए उन्हें सच्ची स्त्री-शिक्षा प्राप्त करनी पड़ेगी। लिखने-पढ़ने के साथ ही साथ उन्हें यह भी सीखना होगा कि स्त्री-धर्म क्या है ? गृहस्थी क्या है ? उसके प्रति स्त्रियों के क्या कर्त्तव्य हैं ? स्त्री-सुलभ गुण कौन-कौन से हैं ? और स्त्रियों को अन्य किन-किन गुणों की आवश्यकता है ? और वे कैसे प्राप्त किये जा सकते हैं ? तभी तुम सच्ची कुललक्ष्मी बनकर अपने घरवालों को प्रसन्न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रख सकोगी, अन्यथा ऐसी आशा करनी व्यर्थ है। इस प्रकार की सच्ची सुशिक्षिता कुलदेवियाँ भी कभी-कभी अकारण ही कलङ्कित होती देखी जाती हैं; परन्तु बहुत ही कम। इसकी चिन्ता बिलकुल छोड़ देनी चाहिये। ऐसी अनहोनी घटनाएँ कहीं बिरले ही होती हैं, और उनका भी कोई विशेष कारण अवश्य होता है। जिनके सास-ससुर दुष्ट स्वभाव के हैं और पति कुमार्गगामी हैं, वे ही ऐसी विपत्ति में पड़ सकती हैं। परन्तु यह भी याद रक्खो कि सास-ससुर अत्यन्त दुष्ट स्वभाव और निर्दयी होते हुए भी स्त्रियों के देवता हैं, अतएव स्त्रियों को जीते जी उनकी अवज्ञा कदापि न करनी चाहिये। फिर यह भी मान लो कि सास-ससुर और पति तुम्हारे साथ बुरा बर्त्ताव करके अधर्म करते हैं, तो भी उनके साथ-साथ तुम क्यों उनका अनादर करके अधर्म कमाओगी? तुम यदि बुद्धिमती हो, पढ़ी-लिखी हो, गुणवती हो तो वे एक न एक दिन तुम से अवश्य ही प्रसन्न होंगे। सदा ही वे कदापि तुम से असंतुष्ट नहीं रह सकते। यदि रहें तो उसे अपने पूर्व जन्म के पापों का फल ही समझना और यह जान लेना कि उन्हीं पापों का प्रायश्चित्त हो रहा है। प्रायश्चित्त के द्वारा पाप जितनी जल्दी खण्डित होता है, उतना ही अधिक आनन्द प्राप्त होता है। इसलिए घबराना नहीं, धैर्य और सहनशीलता को छोड़ अपने गुरुजनों का अपमान करके नया पाप गले न लगाना। एक न एक दिन परमात्मा अवश्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम्हारी ओर दया-दृष्टि करेंगे, धैर्य के साथ उस दिन की प्रतीक्षा करो। समय आते ही परमात्मा फिर एक दिन तुम्हारे जीवन को सुख-मय बना देंगे।

यहाँ तक स्त्री-शिक्षा की उपयोगिता और उसके ढङ्ग के सम्बन्ध में कहा गया। अब यह बतलाना है कि उपयोगी शिक्षा किन उपायों से प्राप्त की जा सकती है। कोई यह न समझ बैठे कि हमारी यह छोटी सी पुस्तक पढ़ लेने ही से स्त्री-शिक्षा की समाप्ति हो जायगी। इस गर्व को लेकर मैं आपके सामने उपस्थित नहीं हुआ हूँ। स्त्री-शिक्षा पुरुषों की शिक्षा से सर्वथा भिन्न होने पर भी सहज नहीं है। पुरुषों की शिक्षा का क्षेत्र जिस प्रकार कठिन विषयों से परिपूर्ण है, स्त्रियों का भी वैसा ही है। किसी का दायित्व एक दूसरे से कम नहीं है। पुरुषों पर धन पैदा करने और परिवार की रक्षा करने का दायित्व है, स्त्रियों पर गृहस्थी के समुचित प्रबन्ध और घर की सुख-शान्ति का भार है। दोनों की आवश्यकता समान है। जिस प्रकार पुरुषों के धनोपार्जन न करने से परिवार का पालन नहीं हो सकता, उसी प्रकार यदि स्त्रियाँ गृहस्थी का काम-धन्धा न सँभालें और अपने मधुर भाषण आदि सद्व्यवहारों से पुरुषों को आनन्दित और उत्साहित न करती रहें तो परिवार की रक्षा असम्भव हो जाय। नम्रता और मधुर भाषण गृहस्थी के सुख-पूर्वक निर्वाह का मुख्य साधन है। स्त्रियों के ये गुण गृहस्थी की नींव हैं। इन गुणों के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अभाव से कितने ही भरे-पूरे घर मटियामेट हो गये हैं।

जिनका कर्त्तव्य इतना गुरुतर और महत्त्वपूर्ण है, उनकी शिक्षा को सहज कौन कहेगा? स्त्रियां को शिक्षा के लिए यथोचित शास्त्र-ज्ञान प्राप्त करना पड़ता है। हिन्दू-शास्त्र में स्त्रियों के कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में कितनी-महत्त्वपूर्ण बातें लिखी गई हैं। सती-धर्म का गूढ़ रहस्य, पातिव्रत-महिमा, व्रत, पूजा आदि का मुख्य अभिप्राय; इत्यादि, अनेक जटिल प्रश्नों का निर्णय उनमें किया गया है। उन सब का ज्ञान प्राप्त करने पर हिन्दू स्त्रियां का कितना उपकार हो सकता है, यह कहना कठिन है। परन्तु जिस देश के पुरुषों का ही शास्त्र-ज्ञान ऋजु-पाठ के तृतीय भाग तक समाप्त हो जाता है, उस देश की स्त्रियां को एकदम लीलावती, गार्गी आदि के समान विदुषियों के रूप में देखने की आशा करना कहाँ तक उचित है?

फिर क्या उपाय है? उपाय है अवश्य। सच्चे मार्ग को ग्रहण करने में यह एक भारी चमत्कार है कि यदि थोड़े दिन बिना समझे-बूझे भी कोई उस पर चलता रहे तो अपने आप ही उसके प्रति हार्दिक प्रीति और श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है, और फिर चाहे कोई कितनी ही चेष्टाएँ करे, वह पथिक उस सच्चे पथ से भ्रष्ट नहीं हो सकता। हमें भी इस समय उसी पथ का अवलम्बन करना पड़ेगा। यदि हम अपने शास्त्र और समाज की नीति-कथाओं को सरल भाव और सरल भाषा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में (उनके वास्तविक अभिप्राय और गूढ़ आशय को न छोड़ कर) लिखकर स्त्रियों को उपहार में दिया करें तो बहुत कुछ सफलता हो सकती है। यदि भारतीय महिलाएँ इन नीति-कथाओं के उपदेश को शास्त्र और समाज का आदेश मानकर ग्रहण करें और उसका पालन करने की चेष्टा करें तो थोड़े ही दिनों में उनका वास्तविक अभिप्राय और गूढ़ आशय भी धीरे-धीरे उनकी समझ में आ जाय। इस समय सैकड़ां उपाय करने पर भी जो बात हम उन्हें नहीं समझा सकते उसे वे कुछ दिनों में अपने आप ही समझने लगेंगी, इसमें कोई सन्देह नहीं। कुछ दिन बिना जाने बूझे अन्ध रूप से ही उन नीति-नियमों का पालन करने पर बाद में ज्ञात होगा कि अन्धता के पर्दे को फाड़कर एक उज्ज्वल ज्योति हृदय में आ डटी है। उस समय यह खेद भी जाता रहेगा कि हमने बिना जाने-बूझे एक अज्ञात मार्ग का अनुसरण किया था। इस शास्त्रीय नीति-शिक्षा के लिए पाठिकाओं को रामायण, महाभारत इत्यादि ग्रन्थों को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिये। वर्तमान समय में भारतीय स्त्रियों को शिक्षा देने के लिए इसकी अपेक्षा उत्तम और कोई उपाय नहीं है।

शास्त्रीय स्त्री-धर्म की शिक्षा प्राप्त करने का यह उपाय है। परन्तु केवल शास्त्रीय स्त्रीधर्म-शिक्षा प्राप्त कर लेने ही से स्त्रियाँ आदर्श-बहू नहीं बन सकतीं; साथ ही साथ स्त्रियों के सामाजिक आचार-व्यवहारों की शिक्षा भी प्राप्त करनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पड़ेगी। आचार-व्यवहार यद्यपि सिर्फ सामाजिक नियम मात्र हैं, तथापि आजकल लोग प्रायः आचार-व्यवहार देखकर ही अच्छे-बुरे का निर्णय किया करते हैं। इसलिए इसकी भी बड़ी आवश्यकता है। सामाजिक आचार-व्यवहारों के सम्बन्ध में कोई निश्चित नीति अथवा पौराणिक ग्रन्थ नहीं है। इसलिए स्त्रियां को कुछ कष्ट उठाकर अपने परिवार की बड़ी-बूढ़ियों से इनकी शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये। जिन्हें यह शिक्षा अपने घर की वृद्धाओं से न मिले, अथवा किसी अन्य कारणवश इस शिक्षा से वंचित रहें, उन्हीं के लिए हम इस छोटी सी पुस्तक में उक्त विषय की मोटी-मोटी शिक्षाओं का उल्लेख करेंगे। सभी वृद्धाएँ सब बातों को इकट्ठे रूप में नहीं समझा सकतीं; फिर सब के घर की वृद्धाएँ ऐसी होतीं भी नहीं कि जिन्हें शिक्षा देने या समझाने का चाव हो। इसलिए हमें आशा है कि हमारी इस पुस्तक से समाज का कुछ कल्याण-साधन होगा। इसी आशा से हमने इस कार्य में हस्तक्षेप किया है। एक और विशेष कारण है जिससे वृद्धाओं के उपदेश पर हमें अपने (पुरुषों के) उपदेश की प्रधानता जान पड़ती है। वह कारण यह है कि स्त्रियों के कर्त्तव्यों का अधिकांश भाग पुरुषों के प्रति है। और पुरुष क्या चाहते हैं? किन गुणों से, किन व्यवहारों से वे स्त्रियों को देखना चाहते हैं? ये सब बातें स्त्रियां—वृद्धाओं की अपेक्षा पुरुष ही अच्छी तरह समझ सकते हैं। अपना काम चलाने के लिए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन्होंने एक दिन ये सब बातें संभवतः बहुत अच्छी तरह सीख रक्खी थीं, परन्तु अब उनमें भी गड़बड़ है। बात यह है कि सामाजिक आचार-व्यवहारों में फेर-बदल होता रहता है। जो रीति आज अच्छी है वही शायद सौ-पचास बरस बाद समाज में घृणित और निन्दनीय समझी जायगी। अतएव उन्होंने बहुत दिन पहले आचार-व्यवहार की जो शिक्षा प्राप्त की है, वह सदा ही हमारा उपकार कर सकेगी, यह नहीं कहा जा सकता। समाज की पूज्य वृद्धाएँ—दादी, बुआ आदि—शायद यह देखकर कि उनका काम हम अपने हाथों में ले रहे हैं, हमारे ऊपर क्रोध प्रगट करें; परन्तु हम अत्यन्त नम्रतापूर्वक उनसे निवेदन करते हैं कि हम उन्हीं की सुविधा के लिए, उन्हीं की सहायता के लिए इस ओर अग्रसर हुए हैं। उनके असंतुष्ट होने का कोई कारण नहीं। वे अबतक एक मुद्दत से बड़े परिश्रम के साथ ये शिक्षाएँ बारम्बार दोहरा—दोहराकर अपनी ऊँघती हुई बहुओं को सुना रही थीं। अतएव इस समय जाकर वे एक गहरी नींद सो लें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुल-लक्ष्मी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुल-लक्ष्मी

स्त्रियों के गुण

सौन्दर्य की सृष्टि

हमने इस पुस्तक का नाम 'कुल-लक्ष्मी' रखा है। हमें यह बताना है कि किन उपायों से बालिकाएँ ससुराल में आकर कुल-लक्ष्मियाँ बन सकती हैं।

कुल-लक्ष्मी बनने के लिए बालिकाओं को पहले-पहल क्या करना उचित है? हिन्दू-स्त्रियाँ चाहे कितनी ही लिखी-पढ़ी और गुणवती क्यों न हों, वे ससुराल में आते ही अपने गुणों का परिचय नहीं दे सकतीं। विवाह के बाद कई दिनों तक उन्हें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिलकुल चुपचाप बैठे रहना पड़ता है। उन दिनों कोई उन्हें कुछ काम नहीं करने देता। बातचीत करने की स्वतन्त्रता उन्हें नहीं प्राप्त होती। अपनी समझ से किसी काम में हाथ डालने की आज्ञा तक भी उन्हें नहीं दी जाती। अतएव ऐसी दशा में उनके गुणों का परिचय न प्राप्त होने के कारण कई दिनों तक उनके आचार-व्यवहार के सम्बन्ध में कोई कुछ निर्णय नहीं कर सकता। परन्तु हाँ, फिर भी लोग कुछ न कुछ निर्णय कर ही डालते हैं। बहू के आने के बाद दोही चार दिनों में, बल्कि कोई कोई तो दोही चार घंटे में बहू का आकार-प्रकार देखकर अपनी एक राय स्थिर कर लेते हैं और तुरन्त ही उस राय को प्रगट भी कर देते हैं। अतएव उस समय बहू को अपने बाहरी भाव और चाल-ढाल की परीक्षा देकर ही प्रशंसा और ख्याति प्राप्त करनी पड़ती है।

कितने ही सास-ससुर तो इस समय बहू की सुन्दरता को देखकर ही उसके आदर की मात्रा को घटा या बढ़ा देते हैं। यदि बहू सुन्दरी हुई तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फूले नहीं समाते, और यदि कुरूपा हुई तो बहुत ही खिन्न होते हैं। इसलिए सुन्दरता न होने पर भी बहुओं को चाहिये कि उस समय खूब सफ़ाई से रहें। शरीर की सुन्दरता या चमड़े का रङ्ग अपनी इच्छा से किसी के गढ़ लेने की चीज़ नहीं है; तथापि शरीर की सुन्दरता और चमड़े की उज्ज्वलता ही स्त्रियों के सौन्दर्य की जड़ भी नहीं है। उत्तम आचार-व्यवहार से प्रायः काले-कुबड़े शरीर भी लोगों का मन हर लेते हैं, और स्वभाव तथा आचार-व्यवहार अच्छा न होने पर गोरे और सुन्दर शरीर भी घृणा की दृष्टि से देखे जाते हैं। इसलिए जिन उपायों से चाल-चलन सुधरे और हाव-भाव तथा आचार-व्यवहार अच्छे रहें, उनको ध्यान में रखना चाहिये। नवविवाहिता बहुओं को इसकी बड़ी आवश्यकता है। यद्यपि स्त्रियाँ ससुराल में जाते ही अपने गुणों को प्रकट नहीं कर सकतीं, तथापि उनके हाव-भाव पर हर घड़ी सब की नज़र रहती है। ऐसी दशा में यदि वे अपना हाव-भाव, उठ-बैठ, बोलचाल ऐसा रक्खें, जिससे ससुरालवाले प्रसन्न हों तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वे विवाह के बाद तुरन्त ही उनके मन को लुभा सकती हैं।

हाव-भाव से हमारा यह मतलब नहीं है कि बहुएँ किसी प्रकार के बनावटी ढङ्ग से हाथ-पाँव हिलाने का नाटक करें। सास-ससुर को किसी तरह का धोखा देने के समान स्त्रियों के लिए दूसरा पाप नहीं है। बालिकाओं को चाहिये कि वे अपने माइके से ही हाव-भाव, उठ-बैठ और बोलचाल की ऐसी शिक्षा ग्रहण करके आवें कि ससुराल में आने पर लोगों को यह प्रतीत हो कि उनकी बोल-चाल, और चाल-ढाल स्वभाव ही से अच्छी है। बनावटी चाल-ढाल कभी किसी को प्रसन्न नहीं कर सकती।

कुछ लोग सौन्दर्य्य और हाव-भाव की बात को हँसी में उड़ा देते हैं। वे कहते हैं कि सौन्दर्य कौन चीज़ है, जिसके लिए यह सब कुछ करें? वह असार है। परन्तु हम कहते हैं कि ऐसा नहीं है। सौन्दर्य का आदर कौन नहीं करता? जो यह बात कहते हैं उनके सम्बन्ध में भी हमारा यह विश्वास नहीं कि वे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुन्दरता को देखकर लट्टू न हो जाते हों। देवता भी सुन्दर फूलों के गुच्छों को पसन्द करते हैं, तुम कौन चीज़ हो? फिर सौन्दर्य के आदर को क्यों बुरा समझते हो? सच्चे सौन्दर्य का आदर करना बुरा नहीं है, अच्छा है। विधाता का नियम है कि सौन्दर्य का सब आदर करते हैं। गुलाब का फूल पाने पर तुम धतूरे के फूल को हाथ से नहीं छूना चाहते; अच्छा घर मिलने पर मैले-कुचैले घर में नहीं रहना चाहते; सुगन्ध मिलने पर दुर्गन्ध से दूर रहते हो, मैले और बुरे चरित्रवाले की अपेक्षा उजले और अच्छे चरित्रवाले को प्यार करते हो, बुरी सन्तान के बदले अच्छी संतान पाने की कामना करते हो। कहो, करते हो कि नहीं? साफ़-साफ़ कह डालो, मन की बात छिपाओगे तो चोरी ठहरेगी। देखो, अभी सब साबित हो जायगा। कपट करना ठीक न होगा।

सच बात यह है कि जो वास्तव में सुन्दर है उसका सभी आदर करते हैं। परन्तु वास्तव में सुन्दर कौन है? इसे सब समझ नहीं सकते। जिसका रंग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गोरा है वही सुन्दर है, यह ठीक नहीं। कोमल हाथ-पाँव, बड़ी-बड़ी आँखें, ऊँची नाक, पतली ठोड़ी—यही सुन्दरता के चिन्ह नहीं हैं। ये सब बातें होने पर भी यदि कोई स्त्री सर्वथा निर्लज्ज हो तो उसकी शारीरिक सुन्दरता को धिक्कार है! उसका शरीर सुन्दर है अवश्य, परन्तु उसके हृदय का मैल उसकी सारी शारीरिक सुन्दरता पर एकदम पानी फेर देता है और उस समय उसका सारा सौन्दर्य मिट्टी में मिल जाता है।

वास्तव में सुन्दर कौन है? यह जानने के लिये भीतर बाहर चारों ओर देखना पड़ेगा। आन्तरिक सुन्दरता ही सब से अच्छी सुन्दरता है। क्योंकि आन्तरिक सुन्दरता का नाश कभी नहीं होता और बाहर की शारीरिक सुन्दरता नाशवान् है। आन्तरिक सुन्दरता शारीरिक सुन्दरता को बढ़ा सकती है; परन्तु शारीरिक सुन्दरता में यह शक्ति नहीं है, कि वह भीतर के बुरे भावों को छिपा सके। बुद्धिमती और गुणवती होने पर कुरूपा स्त्रियों के शरीर पर भी तेज झलकने लगता है और सुन्दरी होने पर भी मूर्खा और दुरा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चारिणी स्त्रियों का शरीर तेजहीन हो जाता है। थोड़ा सा ध्यान देने पर यह बात पाठक-पाठिकाओं की समझ में आ जायगी। तथापि यह हम नहीं मानते कि आन्तरिक सुन्दरता होने पर भी शारीरिक सुन्दरता सर्वथा अनावश्यक है। आन्तरिक सुन्दरता अर्थात् सदाचार आदि सद्गुण तो होने ही चाहियें, परन्तु यदि शारीरिक सुन्दरता भी मिलती हो तो क्यों छोड़ें ? आन्तरिक सुन्दरता होने पर भी शारीरिक सुन्दरता न हो तो न सही; परन्तु आन्तरिक सुन्दरता और शारीरिक सुन्दरता दोनों ही आ मिलें—तब तो मानों, सोने में सुगन्ध !

जब यह सिद्ध हो गया कि सौन्दर्य की पूजा अथवा सौन्दर्य का आदर करना कोई दोष नहीं है तो यह भी निःसंकोच कहा जा सकता है कि सास-ससुर की प्रीतिपात्र बनने के लिए बहुओं को सुन्दर हाव-भाव और अच्छे चलन-व्यवहार सीखना भी परम आवश्यक है। वे अच्छे हाव-भाव और चलन-व्यवहार कौन से हैं ? यह आगे ज्ञात होगा।

आजकल प्रायः स्त्रियाँ अपना सौन्दर्य बढ़ाने के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिए सुगन्धित तेल मलती हैं, रङ्ग बिरङ्गी फूलदार साड़ियाँ पहनती हैं, तरह तरह से बालों को सजाती हैं, गहनों से सारा बदन ढक लेती हैं। पर इनके सिवाय भी कुछ अन्य उपायों से वे सुन्दरी बन सकती हैं, यह उन्हें ज्ञान ही नहीं। वे क़ीमती कपड़े पहनती हैं, आभूषण पहनती हैं, पान खाकर होठ लाल करती हैं, झाँझों को झनझन बजाना जानती हैं; परन्तु फिर भी सब की प्रिय नहीं बन सकतीं। इसका कारण क्या है? क्या किसी ने समझने की चेष्टा की है? कारण यही है कि विलासिता सच्चे सौन्दर्य की सीढ़ी नहीं है। जो विलासिता मनुष्य को अभिमानी, अपव्ययी, आलसी और निकम्मा बना देती है, वह सौन्दर्य की सीढ़ी भला किस प्रकार हो सकती है? यह तो बुराइयों की ओर ले जानेवाला एक सीधा रास्ता है। नई बहुओं को भरसक उद्योग करके वह रास्ता छोड़ना चाहिये और सब की नजरों में सुन्दर और आदरणीय बनने के लिए अन्य अच्छे मार्ग को ग्रहण करना चाहिये। यह मार्ग कौन सा है? क्रम-क्रम से हम उसका उल्लेख करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लज्जा

स्त्रियों को सब से पहले लज्जा की रक्षा करनी उचित है। क्योंकि स्त्रियों के लिए लज्जा के समान दूसरा भूषण नहीं है। पहले पहल ससुराल में जाकर जब वे किसी के साथ बातचीत नहीं कर सकतीं, उस समय लज्जा की सहायता से वे सब की प्रीति-भाजन बन सकतीं हैं। लज्जावती बहू को सभी प्यार करते हैं, सभी उसे प्रसन्न रखने की चेष्टा करते हैं। रूप न भी हो, लज्जा है तो सब उसे रूपवती समझते हैं। लज्जा न होने से रूपवती स्त्री होने पर भी लोग उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं। जिस प्रकार मिट्टी की प्रतिमा पर जब तक कोई रङ्ग न चढ़ाया जाय, तब तक उसमें चमक नहीं आती और ऐसी दशा में बड़ी अच्छी बनी हुई प्रतिमा भी अच्छी नहीं जान पड़ती। इसी प्रकार स्त्रियों में यदि लज्जा न हो तो उनकी शोभा नहीं। अत्यन्त सुन्दरी होने पर भी लज्जा के बिना वे निस्तेज और मलिन जान पड़ती हैं। अतएव यदि तुम अपने सास-ससुर व परिवार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को प्रसन्न रखना चाहती हो तो लज्जा को न छोड़ो, उसे अच्छी तरह पकड़े रहो। अनेक मूर्खा स्त्रियाँ लज्जा के महत्त्व को नहीं समझतीं और स्वतंत्रता-पूर्वक जिस किसी के साथ हास-परिहास करने को ही अपने गुणों के प्रकट करने का अच्छा उपाय समझ बैठती हैं। शायद उनका यह ख्याल होता है कि अधिक बातचीत करने, सवाल-जवाब की झड़ी लगाये रखने और पुरुषों की तरह स्वाधीनतापूर्वक रहन-सहन से ही लोग उन्हें पढ़ी-लिखी, बुद्धिमती समझेंगे। यह उनकी भारी भूल है। लज्जा का पर्दा न रखने पर कोई स्त्री किसी पुरुष को प्रसन्न नहीं कर सकती। कुटुम्ब की स्त्रियाँ भी लज्जाहीन बहू से घृणा किया करती हैं।

लज्जाशील होने से एक और लाभ है। लज्जा-वती स्त्री में सब श्रद्धा रखते हैं, उससे डरते हैं, एवं उसका आदर करते हैं। लज्जाहीन स्त्री का वैसा आदर कोई नहीं करता। ऐसी अनेक लज्जाशील स्त्रियाँ हैं, जिन्होंने कभी 'क' 'ख' भी नहीं सीखा; किन्तु अपने परिवार में उन लज्जाहीन स्त्रियों की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपेक्षा अधिक प्रीतिपात्र और आदरणीय हो रही हैं, जिन्होंने बहुत कुछ पढ़ा-लिखा है और कई-कई परीक्षाएँ पास की हैं। इसलिए तुम सदा ही अपनी लज्जा को बनाये रखने की भरसक चेष्टा करती रहो। परन्तु लज्जा की भी अति कभी न करना। कितनी ही स्त्रियों को देखते हैं कि लज्जा करना आवश्यक समझ कर उसकी मात्रा को यहाँ तक बढ़ा देती हैं कि उसका फल अच्छा होने के बजाय बुरा होता है। किसी काम के लिये कहने पर वे काम ही नहीं करतीं। पति बीमार हो तो वे चाहे सामने-सामने बैठी रहें; परन्तु अति लज्जा के कारण उनकी सेवा-शुश्रूषा करने के लिये नहीं उठतीं, हाथ भर की जगह दो हाथ का घूँघट काढ़ लेती हैं। इतनी लज्जा अच्छी नहीं, जिससे हित के बदले अहित हो। ऐसी लज्जा से क्या लाभ ? समय के कर्त्तव्य को सदा दृष्टि में रखना चाहिये। अधिक लज्जा दिखाने के लिए अपने कर्त्तव्य को भूल जाना भारी भूल है।

लज्जा के व्यवहार में यह भी ध्यान रखना उचित है कि किसके सामने कम और किस के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सामने अधिक लज्जा करनी चाहिये। जो व्यक्ति जितना ही अधिक आदरणीय अथवा जितना ही अधिक अपरिचित हो, उससे उतनी ही अधिक लज्जा करनी चाहिये। कोई-कोई स्त्रियाँ सास, ससुर, स्वामी तथा ससुर घराने के अन्यान्य पुरुषों से लज्जा करना ही काफी समझती हैं, बाहरी आदमियों की लज्जा उन्हें व्यर्थ जान पड़ती है, यह प्रथा बहुत ही बुरी है। घरवालों की लज्जा तो भूल से एक घड़ी न भी हो, तो कोई हर्ज नहीं; परन्तु बाहरवालों के सामने, अपरिचित पुरुषों के सामने, लज्जा न करने से तुम अवश्य ही निर्लज्ज कहलाओगी और तुम्हारे दोनों ही वंशों की निन्दा और बदनामी होगी। कितनी ही ऐसी स्त्रियाँ हैं जो ससुर की भी लाज नहीं करतीं, सास की भी नहीं मानतीं, किसी की नहीं मानतीं, परन्तु स्वामी के पास आते ही मानों लज्जा की मूर्त्ति ही बन जाती हैं। ऐसी स्त्रियाँ बहुत ही नासमझ हैं। स्वामी से लज्जा करनी चाहिये, पर संकोच न रखना चाहिये। स्वामी में श्रद्धा रखनी चाहिये, भक्ति रखनी चाहिये, उनका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आदर करना चाहिये, उनसे प्रेम करना चाहिये और लज्जा भी करनी चाहिये; परन्तु लज्जा करके उनके निकट कोई बात न छिपानी चाहिये। स्वामी और स्त्री दोनों एक हृदय हैं, दोनों एक दूसरे का आधा भाग हैं। ऐसी दशा में यदि स्वामी के निकट तुमने अपने को छिपा रक्खा तो उनसे तुम्हारी एकता और अभिन्नता कब रही? स्वामी के सामने लज्जाशील रहो, उनमें श्रद्धा रक्खो, भक्ति रक्खो, प्रीति रक्खो, परन्तु उनसे अपना कोई भेद कभी न छिपाओ।

नम्रता

लज्जा के बाद नम्रता। जिस प्रकार लज्जा स्त्रियों का गहना है, उसी प्रकार नम्रता भी उनका भूषण है। लज्जा और नम्रता स्त्रियों की जितनी शोभा बढ़ाती हैं, सोने के हज़ार गहनों से भी उतनी शोभा नहीं बढ़ सकती। विधाता ने स्वभाव ही से स्त्रियों को कोमल और पुरुषों को कठोर बनाया है। स्त्रियों की शोभा लज्जा, नम्रता, प्रेम, और स्नेह में है, पुरुषों की शोभा साहस, तेज, वीरत्व और पौरुष में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। जिस प्रकार शक्ति, सामर्थ्य और साहस न होने पर पुरुषों का आदर नहीं होता, उसी प्रकार लज्जावती, नम्र और स्नेहशील न होने पर स्त्रियों की कदर नहीं होती। इसलिये सब की प्रीतिपात्र बनने के लिये स्त्रियों को नम्रता और कोमलता की शिक्षा ग्रहण करनी उचित है। कभी भूल से भी उन्हें किसी पर क्रोध नहीं करना चाहिये। क्रोध स्त्रियों के लिये बहुत ही बुरा है। यह हम नहीं कहते कि यदि कोई अनुचित काम करे तब भी वे उससे नाराज़ न हों, अथवा क्रोध न करें। कितने ही अवसर ऐसे आते हैं, जब कि स्त्रियों को अनेक दुष्ट, अन्यायी और अत्याचारियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे अवसरों पर क्रोध करके, भय दिखा कर अथवा जो अन्य उपाय सूझ पड़ें उनसे उन दुष्टों को अवश्य ही नीचा दिखाना चाहिये। परन्तु जब तक ऐसा ही कोई विषम संकट उपस्थित न हो, तब तक नित्य की साधारण बातों पर स्त्रियाँ कठोरता अथवा क्रोध प्रकट करने और सब के साथ खरखरी आवाज़ से बातचीत, वादविवाद करने ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में अपनी बहादुरी समझती हैं। यह उनका भारी भ्रम है। एक समय था कि इस देश में स्त्रियों की वीरता बड़े आदर की दृष्टि से देखी जाती थी। राजपूताने की पद्मिनी, महामाया इत्यादि प्रातःस्मरणीया वीर महिलाओं का सुयश आज भी गाया जाता है। परन्तु वे निर्लज्जों के समान सब के साथ व्यर्थ की बकवाद, तर्क-वितर्क, वादविवाद और मौखिक प्रलाप करने में अपनी वीरता नहीं प्रकट करती थीं; वरन् कोई भारी विपत्ति उपस्थित होने पर, जब उन्हें और कोई उपाय नहीं सूझता था तब, अपने धर्म की रक्षा के लिए उसे काम में लाती थीं। यदि वैसी विपत्ति आ पड़े तो अवश्य ही स्त्रियों को अपना वीरत्व दिखाना चाहिये। हम पहले भी कह चुके हैं और फिर भी कहते हैं कि वैसा भयानक संकट आ पड़ने पर स्त्रियों को पुरुषों के समान ही साहस, पौरुष और क्रोध प्रकट करना उचित है; परन्तु इसके सिवाय कभी नहीं। अकारण ही अथवा साधारण कारणों में स्त्रियों को कदापि किसी के ऊपर क्रुद्ध न होना चाहिये। बात-बात पर बिगड़ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वाली स्त्रियों के प्रति लोगों के हृदय में प्रीति और भक्ति का भाव उदय नहीं होता, बल्कि निन्दा और घृणा उत्पन्न होती है।

और एक बात है। स्त्रियाँ क्रोध और कठोरता के स्थान पर दृढ़ता और गम्भीरता से काम लेकर अपने घर के नौकरों, दासियों तथा अपने से छोटे, घर के अन्यान्य व्यक्तियों पर अपना सिक्का न जमा सकें, सो भी नहीं। सास-ससुर आदि गुरुजनों के दोषों के सम्बन्ध में स्त्रियों को अवश्य ही चुप रहना पड़ता है; परन्तु जो पद में अपने से छोटे हैं, उनके दोषों को दूर करने की उन्हें भरसक चेष्टा करनी चाहिये। कठोर बर्त्ताव को काम में न लाने पर भी दृढ़ता, गम्भीरता और बुद्धिमत्ता के सहारे यह कार्य आसानी से पूरा हो सकता है। छिछोरी स्त्रियाँ हजार डाट-डपट करके भी जिसे नहीं सुधार सकतीं, बुद्धिमती और तेजस्विनी स्त्रियाँ केवल एकबार गम्भीर दृष्टि से देखकर अथवा तनिक उदास हो अपनी आखों के दो बूँद आँसू दिखाकर ही उसे सुधार लेती हैं। स्त्रियों के ऐसे ही दो एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महा अस्त्रों से पराजित हो न जाने कितने ही बड़े-बड़े राजा महाराजा, और भीषण अत्याचारी वशीभूत होकर उनके चरणों में गिरे हैं।

गम्भीरता

गम्भीरता में कैसी प्रबल शक्ति है, यह हम बतला चुके हैं। अब उसके अन्यान्य गुणों का उल्लेख करते हैं। जो स्त्रियाँ चंचल नहीं हैं, गम्भीर हैं, उनमें सब श्रद्धा रखते हैं, उनका भय मानते हैं और आदर करते हैं। लिखना-पढ़ना सीखा हो चाहे न सीखा हो, विद्या-बुद्धि हो अथवा न हो, यदि तुम भले प्रकार गम्भीर बनी रह सकती हो तो कोई तुम्हारा निरादर करने का साहस नहीं करेगा। इसके सिवाय गम्भीर स्त्रियों को एक और भी लाभ है। गम्भीर स्वभाव से स्त्रियों की बुद्धि स्थिर रहती है। स्थिर-बुद्धि होने पर वे सब काम-धन्धा नियमितरूप और अच्छे ढङ्ग से कर सकती हैं। चञ्चल स्त्रियाँ कभी कोई काम नियमित रूप से नहीं कर सकतीं। उनका दिमाग़ सदा गरम ही बना रहता है, उनका मन चारों ओर चक्कर लगाया करता है।

२

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोच विचारकर और विशेष ध्यान देकर उनसे कोई काम नहीं होता। इसलिए अपने घर के भले के लिये और स्वयं भली बनने और प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिये तुम सदा ही गम्भीर बनने की चेष्टा करो और हर-काम खूब सोच-समझकर स्थिर बुद्धि से करो। हर बात बड़े सरल और शान्तिभाव से कहो। अन्यथा तुम किसी को भी प्रसन्न न रख सकोगी, इसे निश्चय जानो।

सरलता

स्त्रियों के लिए और अत्यन्त आवश्यक गुण सरलता है। सरलता न रहने पर कोई किसी का विश्वास नहीं करता। स्त्रियों के लिए अपने घरवालों के निकट अविश्वासपात्र होना बड़े ही दुःख और लज्जा की बात है। स्त्रियाँ घर की लक्ष्मी हैं, शान्ति की देवी हैं। पुरुष उनसे अपने सुख-दुःख की बात कह अपने मन का भार हलका करना चाहते हैं। ऐसी दशा में यदि स्त्री अविश्वासपात्र और कपटी स्वभाव की हो तो पुरुष उससे अपने मन की बात कहकर शान्ति पाने की आशा नहीं कर सकते। मान लो,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि तुम्हारे स्वामी ने तुमसे कोई सी सच्ची बात कही और तुम अपने कपटी स्वभाव के कारण उसका कुछ और ही मतलब निकाल बैठी, तो तुम्हारे स्वामी को उससे कितना दुःख होगा ? वह शायद तुम्हारे ऊपर विश्वास करके फिर कभी अपने मन की ठीक बात तुमसे न कहेंगे। एक आदमी ने अपनी कपट-स्वभावा स्त्री से एक दिन सरलता-पूर्वक पूछा कि तुम अपने पिता के घर जाना चाहती हो ? स्त्री ने उसके इस आदरपूर्ण प्रश्न को सुनकर सोचा कि ज़रूर इसमें कुछ भेद है। जान पड़ता है, मैंने बार-बार पिता के घर जाने के लिये कहा, इसीलिए ये ताना देकर मुझ से ऐसा प्रश्न कर रहे हैं। उसने नाक भौंहें सिकोड़ कर उत्तर दिया—चाहूँगी, तब चली जाऊँगी। इस मीठे अपमान की क्या ज़रूरत है ? पति बिचारा चुप रह गया। उस दिन के बाद उसने स्त्री के प्रति आदर प्रकट करने के लिये दिल खोलकर कभी कोई बात नहीं कही।

स्त्रियों की कुटिलता का एक ढङ्ग यह भी है कि वे प्रायः अपने मन में कुछ भाव रखती हैं और ऊपर कुछ दिखलाती हैं। यदि किसी से नाराज़ हैं तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाहर से उसका आदर करती हैं, मीठी-मीठी बातें बनाती हैं और भीतर से आग-बबूला बनी रहती हैं। यदि किसी से प्रसन्न हैं तो हृदय में तो प्रसन्न हैं, पर मुँह तीन कोने का बनाये रहती हैं। यह ढङ्ग बहुत ही बुरा है? फूलों की ढेरी में छिपे हुए साँप की तरह उनका यह व्यवहार प्रायः निर्दोष व्यक्तियों को हानि पहुँचा सकता है।

झूठ बोलना भी कुटिलता का ही एक अङ्ग है। कितनी ही स्त्रियाँ अपने सास-ससुर और अन्य घर वालों को धोखा देने तथा अपना दोष छिपाने के लिये प्रायः झूठ बोला करती हैं। कोई कोई लज्जा के कारण भी ऐसा करती हैं। यह अनुचित है। सरलता पूर्वक अपनी भूल को मान लेने और अपनी कमज़ोरी प्रकट कर देने पर लोग उस भूल का विचार नहीं करते हैं। इसके सिवाय इस प्रकार सरलभाव से अपनी भूल को प्रकट कर देने पर उस भूल को सुधारने के उपाय भी निकल आते हैं। भूल का कारण बताकर सास-ससुर आदि गुरूजन उन्हें सत्य और धर्म के मार्ग पर ले आते हैं। जब एक बार सत्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और धर्म का स्वाद मिल गया तो फिर कभी अधर्म के मार्ग पर नहीं जा सकतीं। क्योंकि सत्यमार्ग का मीठा स्वाद न मिलने ही तक लोग झूठ के पथ पर चलते हैं। जहाँ वह स्वाद मिला, बस वहीं यह समझ में आ जाता है कि हमने जिस मिथ्या मार्ग को ग्रहण किया था, उसकी अपेक्षा यह सत्यमार्ग कहीं अधिक शान्ति-प्रद और सुखदायी है। अतएव सत्यमार्ग का स्वाद पाने के लिये गुरुजनों के निकट अपने दोष और दुर्बलता को सरलभाव से स्वीकार कर लेना अत्यन्त आवश्यक है।

सरलता प्राप्त करने का मुख्य उपाय यह है कि कोई काम करने अथवा कराने का विचार करने से पहले यह सोचना चाहिये कि वे अपने उस विचार को गुरुजनों के सामने निःसङ्कोच प्रकट कर सकती हैं या नहीं। यदि प्रकट कर सकें, तब तो वह काम करना चाहिये, नहीं तो नहीं! ऐसा करने से भविष्य में हर बात को अपने गुरुजनों के सामने प्रकट करते रहने में उन्हें कोई सङ्कोच न होगा और सरलता अपने आप ही आ जायगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमारे इस कथन से यह न समझना चाहिये कि हम तुम्हें कोई भी बात गुप्त रीति से करने के लिए मना कर रहे हैं। मान लो, तुम्हारा कोई कुटुम्बी किसी भारी विपत्ति में फँसा हुआ है, तुम उसकी सहायता करना चाहती हो; परन्तु यह बात यदि किसी दूसरे को मालूम होगी तो उसकी विपत्ति और बढ़ जायगी। ऐसे मौके पर उसकी भलाई के लिए सहायता करने और उस बात को गुप्त रखने में कोई हानि नहीं। परन्तु सहायता करने के पहले यह सोच लेना चाहिये कि यदि आवश्यकता आ पड़े तो तुम तनिक भी लज्जित न होकर मुक्त कण्ठ से उसे सब के सामने स्वीकार कर सकोगी या नहीं। यदि आसानी से स्वीकार कर सको तब तो वह काम करना, अन्यथा नहीं। सबके सामने प्रकट करने की बात से हमारा यह मतलब नहीं है कि तुम जो कुछ करो, उसका ढोल पीटो। इसे तो वाचालता कहते हैं। वाचालता और सरलता एक नहीं है। जो सबके सामने व्यर्थ की बातें बके, वह वाचाल कहलाता है। हमारा मतलब यह है कि आवश्यकता पड़ने पर

10522

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही सबके सामने जो बात निःसङ्कोच, सरलभाव से, कही जा सके, वही सरल है। इस अन्तर को अच्छी तरह ध्यान में रखना। बिना आवश्यकता के कोई बात कभी न कहना; परन्तु जब आवश्यकता आ पड़े तो कहने में संकोच भी न करना।

यहाँ पर एक और बात कह देनी उचित है। बहुतेरी स्त्रियाँ अपने स्वामी की बात को संग-साथ की स्त्रियों से कहकर अपनी सरलता दिखलाती हैं। यह कदापि उचित नहीं। हमने ऊपर जितनी बातें कही हैं, वे स्वामी को छोड़कर अन्यान्य कुटुम्बियों और परिजनों के सम्बन्ध में कही हैं। स्वामी के साथ स्त्री का सम्बन्ध अत्यन्त गुरुतर है। पति-पत्नी के परस्पर व्यवहार की बातें सब के सामने प्रकट करने के योग्य कदापि नहीं। अतएव पति की बातों को प्रकट करके सरलता दिखलानी ठीक नहीं। पति-पत्नी की बात चाहे कितनी ही अच्छी और प्रशंसा के योग्य क्यों न हो, उसे सर्वसाधारण के सामने प्रकट करना अच्छा नहीं। पति-पत्नी दोनों ही को अपने आपस की बातों को गुप्त रखना उचित

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है, उनके पारस्परिक पवित्र प्रेम की धारा सरस्वती की धारा के समान सब की आँखों से ओझल रहकर निर्मलभाव से बहनी चाहिए।

सन्तोष

यों तो हर किसी को अपनी स्थिति पर संतोष रखना चाहिये, तथापि स्त्रियों को इसकी विशेष आवश्यकता है। ईर्ष्या और क्रोध आदि अवगुणों के कारण प्रायः लोगों के हृदय में असंतोष उत्पन्न होता है। असंतोष के भाव को दूर करने की चेष्टा के साथ ही साथ उक्त अवगुणों को दूर करने की चेष्टा भी करनी चाहिये। स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा अधिक सहनशील होना उचित है। क्योंकि परिवार का पालन करने में उन्हें अनेक दुःखों और मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। उस समय धैर्य छोड़ बैठने से काम नहीं चल सकता। हमने कितनी ही स्त्रियों को देखा है, जो पति की आर्थिक अवस्था अच्छी न होने की दशा में गृहस्थी के कष्टों से घबरा उठती हैं और बार बार अपने भाग्य को धिक्कारा करती हैं। वे वास्तव में बड़ी मूर्खा हैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बल्कि यह कहना चाहिये कि वे गृहस्थी के लिये कलंक-स्वरूप हैं। पति अच्छा हो या बुरा हो, धनी हो या कंगाल हो, स्त्रियों का कर्त्तव्य है कि उनके पति की जो दशा हो उसी दशा में वे संतुष्ट रहें और उसी में अपना गौरव समझें। पति अगर रूखी रोटी से अपना निर्वाह करता हो तो स्त्री को भी पूड़ी कचौड़ी तुच्छ समझकर रूखी रोटी को ही अमृत के समान समझनी चाहिये। तभी वे आदर्श-हिन्दू स्त्री बन सकती हैं, अन्यथा नहीं। पतिव्रत परायणा आर्य-रमणी सावित्री की ओर दृष्टिपात कीजिये। सावित्री राजकन्या थी। इकलौती सन्तान होने के कारण वह राजा को प्राणों से प्यारी थी। कन्या को सुखी रखने के लिए वे अपना सर्वस्व लुटा देने के लिए तैयार थे। परन्तु सावित्री ने क्या किया। उसने अपने वनवासी पति के साग-पात के भोजनों और वृक्षों की छाल के वस्त्रों के सामने राज-महल, राजभोजन तथा राजकीय आभूषणों को तिनके के बराबर भी नहीं समझा और पिता का राजमहल छोड़कर सदा के लिए वह वनवासिनी बन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गई। बन और बन के साग-पात को उसने राज-महल के ठाटबाट और साज-सामान से कहीं अच्छा समझा। पिता के दिये हुए मूल्यवान गहने भी ससुराल में आते ही उसने उतारकर रख दिये। उन्हीं सावित्री के पवित्र कुल में उत्पन्न होनेवाली आर्य-महिलाएँ क्या आज सर्वथा पतित हो गई हैं? महाभारत में एक सती स्त्री के आत्मत्याग की कहानी बड़ी महत्त्वपूर्ण और करुणा-जनक है। एक परम सुन्दरी स्त्री के पति को कुष्ट रोग था, कई स्थानों पर उसका शरीर बिल्कुल गल गया था। चल फिर नहीं सकता था। न बैठ सकता था। आवश्य-कतानुसार स्त्री ही उसे कंधों पर बैठाकर हर जगह ले जाया करती थी। भोजनों के समय अपने हाथ से उसके मुँह में कौर देती थी और अपने ही हाथ से पानी पिलाती थी। कपड़ा भी अपने ही हाथ से पहनाती थी। इन सब कामों के सिवाय नित्यप्रति गले हुए स्थानों को जल से धोकर पीप आदि निकाल बाहर करती थी। परन्तु इस पर भी उस स्त्री में तनिक भी अधीरता नहीं थी, जरा भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

असंतोष नहीं था। वह साध्वी बड़े आदर और श्रद्धा से रात-दिन पति की सेवा करती थी और उसके मुँह की ओर देख देखकर अपना खाना तक भूली रहती थी। ऐसा भयानक छूत रोग! जिसके रोगी को छूने से प्रायः अन्यान्य लोग भी सदा के लिए रोगी बन जाते हैं! परन्तु उस देवी को इसकी कुछ परवाह न थी। वह रात दिन पति को अपने तन से लगाये रहती थी। सोचने की बात है, कैसा कठोर कर्त्तव्यपालन था! परन्तु केवल कर्त्तव्यपालन की दृढ़ता और धीरता ही तक इस कहानी के महत्त्व का अन्त नहीं हो जाता। आगे क्या हुआ, सो सुनो। उस मन्द-भाग्य मनुष्य का केवल शरीर ही नहीं गला था बल्कि मन में भी रोग ने घर कर लिया था। गली हुई ठठरी के भीतर मन जो अबतक अच्छा बना था, वह एक दिन शरीर से भी अधिक गल गया। स्त्रियाँ अपने पति के मन को पाकर ही प्रसन्न होती हैं। पतिव्रता स्त्री अपने प्रियतम के मन को केवल ही चाहती है। परन्तु वह पुष्पवती रमणी एक दिन उससे भी हाथ धो बैठी। उसका प्यारा पति एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिन वेश्या के रूप को देखकर उस पर मोहित हो गया। ऐसी साध्वी स्त्री जो अपने सुख-दुख की कुछ भी परवाह न करके उसकी सेवा-शुश्रूषा किया करती थी, स्वयम् परम सुन्दरी होते हुए भी उसके सड़े गले शरीर पर ही मुग्ध रहती थी। उस साध्वी पर भी उसे तनिक दया न आई और वह उसे विष के समान देखने लगा। स्त्री ने स्वामी की यह दशा देख, पता लगाकर सब बात जान ली। जानकर उसने क्या किया, सो सुनो। जब उसने देखा कि स्वामी के मन को उस ओर से फेरने का कोई उपाय नहीं है और उस ललना के वियोग में उनकी जीवनशक्ति दिन-दिन क्षीण होती जा रही है, तब एक दिन वह स्वामी को अपने कंधों पर बैठाकर उस निन्दनीय वेश्या के घर ले गई और अपना सर्वस्व देकर भी उस वेश्या से अपने स्वामी के प्रति प्रसन्न होने का अनुरोध करने लगी। इसका फल जो होना चाहिये था, वही हुआ। उस करुण और अद्भुत दृश्य को देखकर उन दोनों पापियों की आँखें खुल गईं, पाप की वासना जाती रही।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्त्री अपनी सफलता पर हर्ष मनाती हुई अपने स्वामी को विजय में पाये हुए धन के समान घर वापस लाई। देश भर में उसकी प्रशंसा के गीत गाये जाने लगे। हम आशा करते हैं, कि हमारे घर की स्त्रियां भी इसी प्रकार गृहस्थी के सारे दुखों और क्लेशों को, धीरता और संतोष के साथ यथोचित उपाय करके, सुख में परिणत कर सकें। वास्तव में सुख-दुःख किसी की स्थिति में नहीं होता है, बल्कि मन में होता है। बहुतेरे ऐसे हैं, जो साग खाकर ही सुखी हैं। अभी जिस स्त्री का वृत्तान्त सुना चुके हैं, वह अपने कोढ़ी पति की सेवा-शुश्रूषा में जो सुख पाती थी, कौन कह सकता है कि राजमहल में रत्न-जड़ित पलंग पर लेट सैकड़ों दास-दासियों से अपनी सेवा-शुश्रूषा करानेवाली भाग्यवती महिलाएँ उस सुख का अनुभव कर सकती हैं, या नहीं। अतएव यह निश्चय है कि जो स्त्रियाँ धीर और गम्भीर स्वभाव की हैं; पति में पूरी श्रद्धा-भक्ति रखनेवाली हैं; वे सदा ही संतुष्ट और सुखी रहती हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्त्रियों का मन शान्त और सन्तुष्ट रहने पर घर का बड़ा उपकार होता है। घर की देवियाँ यदि बादलों से घिरे हुए आकाश की नाईं मुँह फुलाये बैठी रहें तो भला यहाँ सुख कैसे रह सकता है? उनके असंतुष्ट रहने पर कोई काम नियमितरूप से हो ही नहीं सकता। खाने-पीने में, सोने-जागने में, उठने-बैठने में प्रत्येक कार्य में घर के किसी व्यक्ति को कभी आनन्द ही नहीं आवेगा। इसलिए तुम यदि अपने घर की व्यवस्था ठीक रखना चाहती हो, अपने परिजनों के मंगल की कामना करती हो, तो सर्वदा ही अपने हृदय से असन्तोष का भाव दूर करने की भरसक चेष्टा करती रहो।

श्रमशीलता।

परिश्रमी बनने की आवश्यकता पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को कुछ कम नहीं है। पुरुषों को जिस प्रकार बाहर के सैकड़ों काम लगे रहते हैं, स्त्रियों को उसी प्रकार घर के भीतर गृहस्थी के सैकड़ों काम करने पड़ते हैं। उन कामों में आलस्य करना स्त्रियों का कर्त्तव्य नहीं; क्योंकि इससे शारीरिक, मानसिक और

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आर्थिक तीन तरह की हानियाँ होती हैं। रात-दिन घर के कामों में मेहनत के साथ लगी रहनेवाली स्त्रियों का शरीर चंगा रहता है और किसी प्रकार की चिन्ता या कोई रोग प्रायः उनके पास नहीं फटकने पाता। बुढ़ापा भी उन पर जल्दी अपना अधिकार नहीं जमा सकता। हर घड़ी काम में लगे रहने पर चित्त भी खूब प्रसन्न रहता है। पहले पहल अधिक काम करने में अवश्य ही कष्ट होता है, परन्तु धीरे-धीरे आदत पड़ जाती है। आलसी बनकर बैठ रहने से कुछ ही दिनों में चित्त निर्बल हो जाता है और स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है। "आलस्य" शीर्षक परिच्छेद में हम इस विषय पर कुछ और भी लिखेंगे। यहाँ पर हमें इस सम्बन्ध में केवल एक प्रश्न का निर्णय करना है। कुछ लोग यह प्रश्न कर सकते हैं कि जिनकी आर्थिक दशा बहुत अच्छी है और जिनके यहाँ सैकड़ों नौकर तथा नौकरानी लगी हुई हैं, वे यदि स्वयम् घर का काम-धन्धा न करें तो क्या हानि है? हमारी समझ में अवश्य ही हानि है। नौकर-नौकरानी यदि रखने हैं तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रक्खो, परन्तु इसके लिए स्वयम् आलसी बनकर रोग, दुःख, चिन्ता और चित्त की अप्रसन्नता को न्योता देकर बुलाने की क्या आवश्यकता? यदि चार नौकरानियों के रहने से तुम्हें घर का कोई काम-धन्धा नहीं करना पड़ता तो चार की जगह तीन ही रक्खो, एक के बदले अपने आप काम करो। ऐसा करने पर खर्च में भी कुछ बचत होगी और चित्त भी प्रसन्न रहेगा। इसके सिवाय तुम अगर साथ में लगी रहोगी तो वे तीन नौकरानियाँ भी खूब मेहनत करेंगी और सब काम ठीक-ठीक और अच्छा होगा। घर के लोगों की देख-भाल के बिना कोई काम अच्छा नहीं हो सकता। रुपया पैसा कितना ही क्यों न हो; परन्तु उसे व्यर्थ बरबाद करना ठीक नहीं।

स्नेहशीलता

जो स्त्री जितनी ही अधिक स्नेहशील होती है, उसका चरित्र उतना ही अधिक उच्च होता है। जिस प्रकार साहस, पौरुष आदि गुणों से पुरुषों की बड़ाई होती है, उसी प्रकार नम्रता, सौजन्य, कोमलता और स्नेहशीलता से स्त्रियाँ योग्य और आदरणीय समझी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाती हैं। कठोरता, निर्दयता, क्रोध और अभिमान–ये स्त्रियों के लिए अत्यन्त हानिकारक हैं। इन अवगुणों से स्त्री, स्त्री कहलाने योग्य नहीं रहती। इसलिए तुम सब को प्यार और स्नेह की दृष्टि से देखने की चेष्टा करो। दीन-दुखियों—यहाँ तक कि शत्रु को भी—कभी घृणा या क्रोध के भाव से न देखो। दूसरों का दुःख देखकर दुःखी होना, यह स्त्रियों के लिए बड़े महत्त्व की बात है। इससे उनकी प्रतिष्ठा और महिमा बढ़ती है। किसी विपत्तिग्रस्त व्यक्ति अथवा असहाय रोगी को यदि कोई स्त्री सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से देखती है और शक्तिभर उसकी सहायता या सेवा-शुश्रूषा करती है तो लोग उसे स्वर्ग की देवी कहते हैं। इस गुण से स्त्रियों की जितनी शोभा बढ़ती है, शायद तीन लोक के रत्न-आभूषण भी उनकी उतनी शोभा नहीं बढ़ा सकते। केवल अपने घरवालों, आत्मीयजनों, कुटुम्बियों तथा पति ही को नहीं, किन्तु एकमात्र पति के शत्रु को छोड़कर, संसार के मानव-मात्र को स्नेह की दृष्टि से देखना स्त्री का कर्त्तव्य है।

३

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अतिथि-सेवा

श्रमशीलता के साथ ही साथ अतिथि-सेवा का उल्लेख करना उचित है। स्त्रियों को चाहिये कि वे आदर के सहित शक्तिभर अतिथि की सेवा करें। बहुत प्राचीन काल से भारतवर्ष में अतिथि-सेवा स्त्रियों का एक प्रधान कर्त्तव्य माना गया है। पाण्डु की सहधर्मिणी कुन्ती तथा दानशील राजा कर्ण की रानी इत्यादि आर्य महिलाएँ अतिथि-सेवा का अद्वितीय आदर्श दिखाकर सारे संसार में अपना सुयश फैला गई हैं। कुन्तीदेवी ने दुर्वासा ऋषि को तृप्त मिष्टान्न भोजन करने के हेतु अपना हाथ ही जला डाला था। कर्ण की रानी ने अतिथि का हठ रखने के लिए तलवार हाथ में लेकर अपने प्राणों से प्यारे पुत्र को बध कर डालने में भी संकोच नहीं किया था। अतिथि-सेवा को परम धर्म और स्त्री-जाति का एकमात्र कर्त्तव्य समझकर ही उन्होंने ऐसा किया था, अन्यथा वे उसके सामने अपने शरीर और सन्तान को तुच्छ न समझतीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आजकल कितने ही घरों की स्त्रियाँ किसी अतिथि को दरवाजे पर देखते हुए भी वे उससे बात नहीं पूछतीं। बल्कि कभी-कभी उलटा उसका अपमान कर बैठती हैं। ऐसी मन्दभागिनी स्त्रियाँ निन्दा और घृणा की पात्र बनती हैं। तुम उस निन्दा और घृणा से अपने को बचाये रखने की भरसक चेष्टा करती रहो। कभी स्वप्न में भी अतिथि-सेवा से मुँह न मोड़ो।

देव-सेवा

अतिथि-सेवा के बाद देव-सेवा उल्लेखनीय है। देव-सेवा तथा व्रत-पूजा इत्यादि से स्त्रियों का मन जितना पवित्र और निर्मल हो सकता है, उतना और किसी उपाय से नहीं। सारे दिन के उपवास के बाद जब स्त्रियाँ चंदन, विल्वपत्र आदि सामग्री लेकर फूलों की ढेरियों के बीच में देव-पूजन करने के लिये बैठती हैं अथवा अन्यान्य पूजा-पाठ में लगती हैं तो जी में आता है कि बस इससे अच्छा और कुछ नहीं। उस समय उनके मन में जिस पवित्र भाव और अनुपम आनन्द का विकास होता है,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसे कौन समझ सकता है ? हम अनुरोध करते हैं कि तुम एक बार उस आनन्द को प्राप्त करने की चेष्टा अवश्य करो। स्त्रियों के व्रतों की कथाएँ बड़ी रोचक और उपदेशपूर्ण हैं। उनका पाठ करते समय पाठिकाओं तथा सुननेवाली स्त्रियों के हृदय में जो स्वर्गीयभाव उपस्थित होता है, उसे वही जानती हैं; औरों को उसका अनुभव नहीं हो सकता। आजकल नई पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ प्रायः देव-सेवा के पास नहीं फटकतीं। कभी किसी व्रत या पूजा के दिन आवश्यकता पड़ने पर पुजारी या ब्राह्मण के द्वारा ही वह काम करवा देती हैं। इससे अधिक दुर्भाग्य की बात और क्या हो सकती है ? इन नये दलवाली स्त्रियों को देवी-देवता मानों गले का बोझ हो रहे हैं। न तो उन्हें छोड़ ही सकती हैं और न आदरपूर्वक उनकी सेवा ही उन्हें रुचती है। परन्तु यदि वे एक बार कहीं मनसा, वाचा, कर्मणा से श्रद्धा भक्तिपूर्वक देवता को पुकार सकें तो सहज ही उनकी समझ में आजाय कि देव-सेवा में जो सुख, जो शान्ति और जो आनन्द है वह उनके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रत्न-आभूषणों, भोग-विलास के साज-सामानों तथा नाटकों और उपन्यासों में कहीं नाम को भी नहीं है। उन्होंने कभी परीक्षा के द्वारा इसका निर्णय नहीं किया, यही दुःख की बात है।

सेवा-शुश्रूषा

अतिथि-सेवा और देव-सेवा के अनन्तर अपने घरवालों की सेवा-शुश्रूषा की बात भी उल्लेखनीय है। सेवा-शुश्रूषा विशेषकर स्त्रियों का ही कर्त्तव्य है; क्योंकि स्त्रियाँ इस काम को जितनी अच्छी तरह कर सकती हैं, उतनी अच्छी तरह पुरुष नहीं कर सकते। पति की सेवा, सास-ससुर की सेवा तथा बाल-बच्चों की देख-भाल—टहल-पहल—यही स्त्रियों के प्रधान कर्त्तव्य हैं। उचित रीति से इन कर्त्तव्यों को पूरा करने पर हिन्दू-शास्त्र के अनुसार स्त्रियों को अक्षय स्वर्ग-सुख प्राप्त होता है। परन्तु केवल अपने परिवारवालों ही की नहीं, किन्तु अपने-पराये, शत्रु-मित्र सर्वसाधारण की सेवा करना स्त्रियों का मुख्य धर्म है। जिन उपायों से तुम इस धर्म का पालन यथोचित रीति से कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सको, उन्हें सदा ही अपने ध्यान में रक्खो।

चारपाई पर पड़े हुए रोगी का शुश्रूषा करनेवाली स्त्री के समान हितू कोई नहीं। उसकी अच्छी शुश्रूषा ही से रोगी को आराम मिलता हो सो नहीं, किन्तु उसके स्नेहशील स्वभाव और नम्र व्यवहार से पीड़ित रोगी के मन में जो आशा, प्रसन्नता और शांति उत्पन्न होती है उससे उसका आधा रोग जाता रहता है। रोगी इसके सिवाय और चाहता ही क्या है?

कुटुम्बी, पड़ोसी, यहाँ तक कि कोई भी परिचित व्यक्ति यदि रोगी हो अथवा किसी विपत्ति में फँसा हो, तो कोई विशेष रुकावट न होने की दशा में, स्त्रियों को उसकी सेवा के लिए तैयार हो जाना चाहिये। स्त्रियाँ हर किसी के सामने निःसंकोच नहीं जा सकतीं। ऐसी दशा में वे अपने स्वामी तथा सास-ससुर को पूछकर इसका निश्चय कर लें कि वे अमुक रोगी अथवा पीड़ित की सेवा कर सकतीं हैं या नहीं। हमारी समझ में ऐसे अवसरों पर स्वामी की आज्ञा ले लेना ही सब से अच्छा है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यदि वे उस रोगी अथवा पीड़ित व्यक्ति के पास जाने की आज्ञा देदें तो वह चाहे शत्रु ही क्यों न हो, उसकी सेवा में संकोच न करो। हम प्रायः देखते हैं कि जेठानी, देवरानी तथा ननद आदि से किसी बात पर यदि कुछ झगड़ा-टंटा हो जाता है तो कितनी ही स्त्रियाँ उनके बीमार पड़ने पर उनकी बात नहीं पूछतीं। यह व्यवहार निन्दनीय है। घर में किसी के बीमार पड़ते ही वैरभाव की बात को एकदम भुला देना चाहिये। हिन्दू-शास्त्र में पुरुष और स्त्री दोनों ही के लिए यही आज्ञा है।

सुजनता

लज्जा, नम्रता, गम्भीरता आदि की तरह सौजन्य भी स्त्रियों का एक प्रधान आभूषण है। मनुष्यों के मन पर अधिकार जमाने के लिए इससे अच्छा दूसरा ब्रह्मास्त्र नहीं है। स्त्री चाहे सुन्दरी हो, नम्र हो, गम्भीर हो; परन्तु यदि वह लोगों के साथ सौजन्य का व्यवहार नहीं कर सकती तो उसे उनसे स्वप्न में भी किसी तरह का आदर-सम्मान प्राप्त होने की आशा न करनी चाहिये। सुन्दरी, नम्र तथा लज्जाशील

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न होने पर भी अनेक स्त्रियाँ केवल सौजन्य के सहारे ही लोगों को प्रसन्न और संतुष्ट रखती हैं। इसलिए यदि तुम अपने घर में सब की प्यारी बनना चाहती हो तो इस गुण की शिक्षा लो। हर किसी के साथ उत्तम, नम्र, शान्त और शिष्ट वर्ताव करने को सौजन्य कहते हैं। जिससे जो बात कहो, मीठी वाणी से। प्रियवादिनी होना स्त्रियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। कटुभाषिणी स्त्रियों को कोई प्यार नहीं करता। नम्रभाव से प्रिय शब्दों में बात का उत्तर देने से सभी सन्तुष्ट होते हैं। गृहस्थी का सुख बढ़ाने के लिए स्त्रियों को हर किसी के साथ सौजन्य व्यवहार करना चाहिये। हृदय में शत्रुता और बैरभाव रखते हुए भी यदि मीठी वाणी से सब को सन्तुष्ट रख सको तो कौन सी हानि है? ऐसा करने से कितने ही लड़ाई-झगड़ों और वादविवादों से छुट्टी मिल जायगी और घर में कलह और अशान्ति न फैलने पावेगी।

कर्त्तव्य-ज्ञान

इन सब गुणों का उल्लेख करने के बाद हम एक अन्य साधारण गुण को प्राप्त करने के लिए पाठि-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काओं से अनुरोध करते हैं। इस गुण का नाम है—कर्त्तव्य-ज्ञान। जब कोई काम तुम्हारे सामने आवे, तो खूब सोच-विचारकर देख लो कि उस समय तुम्हें क्या करना उचित है। और उस काम के सम्बन्ध में तुम्हारे ऊपर स्त्री-धर्म का क्या दायित्व है। दूसरों की देखादेखी या कहने-सुनने से अथवा अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए कर्त्तव्यपथ से विचलित कदापि न होना। यदि कोई कठिन समस्या सामने आ जाय और तुम यह न समझ सको कि इस समय क्या करना उचित है तो यकायक अपनी इच्छानुसार कुछ न कर बैठो; बल्कि स्वयम् समझ-बूझकर, दूसरों से पूछकर और स्त्री-धर्म की शिक्षा ग्रहणकर जो उचित जान पड़े, सो करो। जब तुम्हें एक बार अपने कर्त्तव्य का ज्ञान हो जाय तो फिर तुम्हारी स्वार्थ-सिद्धि में कितनी ही बाधाएँ क्यों न पड़ें, उस कर्त्तव्य को न भूलो। अन्त में कर्त्तव्य-पालन से अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी, उसी सफलता की बाट जोहती रहो।

सतीत्व

यहाँ तक हम स्त्रियों के कितने ही गुणों के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सम्बन्ध में लिख चुके; परन्तु स्त्रियों का जो सब में श्रेष्ठ गुण है, सब में प्रधान धर्म है, उसके सम्बन्ध में अभी तक कुछ नहीं लिखा। आगे "कुटुम्बियों के प्रति कर्त्तव्य" वाले अध्याय में इस गुण के सम्बन्ध में विशेष रीति से लिखेंगे। यहाँ पर हम इस विषय में अपने एक मित्र की लिखी हुई एक पुस्तक में से कुछ बातें उद्धृत करते हैं :—

प्रसिद्ध विद्वान् स्वर्गीय ईशानचन्द्रराय चौधरी अपने "आर्य-धर्म-तत्व" नामक परमोत्तम ग्रन्थ में स्त्रियों के सतीत्व धर्म के सम्बन्ध में लिखते हैं :—

"विवाहिता स्त्री का एकमात्र पति के साथ जो धर्मानुकूल सम्मिलन है, उसी को सतीत्व-धर्म कहा जा सकता है। संसार के प्रायः समस्त स्त्री-पुरुष इस सतीत्व-धर्म का गौरव स्वीकार करते हैं। नीच प्रकृति के मनुष्य भी इस महाधर्म की अवहेलना करने का साहस नहीं करते। शास्त्र में विशेषतः सतीत्व-धर्म ही स्त्रियों का सर्वश्रेष्ठ धर्म बतलाया गया है। सतीत्व-रत्न से हीन स्त्री रूपवती होने पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी घृणित है और धनवती होने पर भी कङ्गाल है। इसके विरुद्ध अत्यन्त दीन-दरिद्र, कुरूपा स्त्री भी सतीत्व-रत्न से विभूषित होने की दशा में परम सुन्दरी है, महा धनवती है, अत्यन्त आदरणीय है। सतीत्व-धर्म की अपार महिमा है। अधिक क्या कहें, इस धर्म के प्रभाव से मृतक जीवित हो जाते हैं, अग्नि में शीतलता का गुण आ जाता है। शास्त्र और पुराणों में ऐसे अनेक दृष्टान्त सतीत्वधर्म के गौरव की घोषणा कर रहे हैं। इसी सतीत्व धर्म के प्रभाव से सती सावित्री ने अपने मृतक पति को नवजीवन दान दिया था। स्त्री-कुल-भूषण पति-परायणा सावित्री की वह घटना यद्यपि आज भूतकाल के सघन अन्धकार में छिपी हुई है, तथापि आज भी आर्य-स्त्रियों के धर्मानुरागी हृदय में उसकी स्वर्गीय ज्योति जगमगा रही है। आज भी आर्य स्त्रियाँ साल में एक दिन सती सावित्री के नाम का व्रत रखती हैं। उनका विश्वास है कि वे सावित्री के व्रत का विधिपूर्वक पालन करने पर अगले जन्म में सती-साध्वी होकर भारत-भूमि में जन्म लेंगी और आजन्म अपने पति के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साथ रहकर सुख और आनन्द का उपभोग करेंगी।

आर्य स्त्रियाँ सावित्री-व्रत के अतिरिक्त और भी कितने ही व्रत-अनुष्ठान करती हैं। वे सभी केवल पति-सौभाग्य की चाह, पति-प्रेम की प्राप्ति तथा आजन्म पति से वियोग न होने की कामना से किये जाते हैं। जो लोग हिन्दू-स्त्रियों के व्रत—उपवास आदि को अंध विश्वास कहकर उनकी निन्दा करते हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे पहले अपनी अन्धता को दूर करके सच्चे हृदय से हिन्दू-स्त्रियों के व्रतों के उद्देश्य और आशय को जानने की चेष्टा करें। फिर भी यदि वे उन्हें निन्दनीय समझ पड़ें तो निन्दा करें, हमें कुछ नहीं कहना। परन्तु बिना जाने बूझे उन्हें अवहेलना या अपमान की दृष्टि से देखना उनकी सरासर मूर्खता है।

आर्य स्त्रियाँ एकमात्र पति को ही अपना सर्वस्व समझती हैं। यदि वे पति के प्रेम-धन से धनी हैं तो सांसारिक दरिद्रता से वे तनिक भी खिन्न नहीं होतीं; कठिन से कठिन क्लेश भी उन्हें पीड़ित नहीं कर सकते। हँसते-हँसते वे सारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सांसारिक मुसीबतों को सह लेती हैं। स्त्री का घर लक्ष्मी का वासस्थान है। देवता भी सती के सहवास को धन्य मानते हैं। तरह-तरह के कष्टों से पीड़ित मनुष्य को सौभाग्य से यदि कहीं क्षणमात्र के लिए भी सती के सहवास का सुअवसर प्राप्त हो तो सती के पवित्र सत्संग से उसके सारे क्लेश दूर हो जाते हैं। सती के सहवास में जो अलौकिक सुख प्राप्त होता है, वह वर्णन-शक्ति के बाहर है। जिन पुण्यात्मा पुरुषों को भाग्य से वह सुख प्राप्त हुआ है, उनका जीवन धन्य है।

हिन्दुओं के पुराण-ग्रंथों में सहस्रों सती स्त्रियों के पवित्र चरित्रों का उल्लेख है। रामायण में जिस समय हम सीता के चरित्र का पाठ करते हैं, उस समय उसी स्वभाव की प्रिय बालिका हमारे मानस-नेत्रों के सामने पवित्र ज्योति से जगमगाती हुई खड़ी हो जाती है। हम उसकी अलौकिक सुन्दरता, अद्वितीय सरलता, अद्भुत सहनशीलता और असाधारण पति-भक्ति तथा स्नेह, प्रेम, दया आदि सद्गुणों को देखकर अपने को भूल जाते हैं, हमारा अभिमानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मस्तक धीरे-धीरे नीचा होकर उस पवित्र मूर्ति के चरणों में लोट जाता है और अन्त में क्षण भर के लिए हम इस पापपूर्ण पृथ्वी की बातों को भूल जाते हैं, स्वर्गीय आनन्द से अन्तरात्मा तृप्त हो जाती है, भक्ति और प्रेम की विमल धारा से मानसिक पापों के सारे धब्बे धुल जाते हैं। सती के चरित्र में, सती के आचरण में, सांसारिक मलिनता का लेश नहीं है, वह दैवी भावों से परिपूर्ण है। सीतादेवी के श्रीमुख से निकली हुई दो-चार बातें हम रामायण से उद्धृत कर पाठक पाठिकाओं के सामने रखते हैं। जैसे अवसरों पर ये बातें कही गई हैं, वैसे अवसरों पर आर्य महिलाओं के अतिरिक्त और किसी से ऐसी बातों की आशा नहीं की जा सकती।

साधारण प्रजाजन को सन्तुष्ट रखने के हेतु सूर्य-कुल-भूषण श्रीरामचन्द्र ने प्राणप्रिया जानकी को सर्वथा पवित्र चरित्रा जानते हुए भी निर्वासित कर दिया। वह राजपुत्री, राजबधू जानकी आज राजमहल से अलग होकर एकाकिनी वनवासिनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बनने जा रही है। श्रीरामचन्द्र के छोटे भाई वीराग्रणी लक्ष्मण सीता को भागीरथी के पार उतारकर दुःखित भाव से उनके सामने खड़े हैं। सरल हृदया, पतिप्राणा महारानी से वे बड़े भाई की कठोर आज्ञा का हाल कैसे कहें—इस चिन्ता से उनका चित्त व्याकुल हो रहा है। आँखों में आँसू छलछला रहे हैं, शोक के आवेग से कंठ रुक रहा है, शून्य दृष्टि से लक्ष्मण सीता के पुनीत चरणों की ओर देख रहे हैं। जानकी अपने प्यारे देवर की यह शोचनीय दशा देखकर किसी आकस्मिक विपत्ति की आशङ्का से व्याकुल हो रही हैं। वे लक्ष्मण से कहती हैं—"लक्ष्मण ! यकायक तुम इतने शोकाकुल क्यों हो रहे हो? बताओ तो क्या कारण है? क्या आर्यपुत्र का कोई अशुभ सम्वाद तो नहीं मिला?" सीता के ये वाक्य सुनकर लक्ष्मण का धैर्य जाता रहा। जिन आर्यपुत्र ने उसके साथ निर्दयी की भाँति कठोर व्यवहार किया, सीता पहले उन्हीं आर्यपुत्र की कुशलता पूछ रही हैं! सरल स्वभाव सीता के सरल शब्द सुनकर लक्ष्मण चिल्ला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर रो पड़े। सीता के बहुत कुछ अनुरोध करने पर लक्ष्मण को कहना ही पड़ा। उन्होंने कहा—"आर्ये! दुष्ट लक्ष्मण आर्य रामचन्द्र की आज्ञा से आप को वाल्मीकि के तपोवन में निर्वासित करने के लिए आया है। यही वह तपोवन है।" सुनते ही सीता के सिर में चक्कर आ गया, आँखों में अन्धेरा छा गया, वे काँपते-काँपते पृथ्वी पर गिर पड़ीं, चेतनता जाती रही। लक्ष्मण की ओर देखकर कहने लगीं—"लक्ष्मण! किस अपराध से प्राणपति ने मुझे निर्वासित किया है?" लक्ष्मण ने कहा—"आर्ये! चन्द्रमा में जलाने और अग्नि में शीतल करने की शक्ति का आ जाना भले ही सम्भव हो, परन्तु आप के निर्मल चरित्र में दोष का स्पर्श-मात्र भी असम्भव है। आर्य रामचन्द्र ने आप को सर्वथा शुद्ध चरित्रा और आदर्श पतिव्रता जानते हुए भी केवल लोगों को संतुष्ट करने के लिए ही आप को राजधानी से निर्वासित किया है।" यह सुनकर सीता का हृदय शान्त हुआ। मुख पर प्रसन्नता के भाव झलकने लगे। वे कहने लगीं—"लक्ष्मण! मैंने प्रभु का कोई अपराध नहीं किया,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिना ही अपराध के मैं त्यागी गई, यही मेरे लिए परम सौभाग्य की बात है। यदि आज मैं किसी अपराध के लिए आर्यपुत्र के द्वारा निर्वासित होती तो अपने उस कलंकित जीवन से संसार को कलंकित न करती। यह मेरे लिये और भी आनन्द का विषय है कि उन्होंने अपनी प्रजा को संतुष्ट करने के लिए मुझ तक को त्याग देने में संकोच नहीं किया। प्रजा को संतुष्ट रखना राजाओं का मुख्य धर्म है। मेरे प्राणेश्वर इस राजधर्म का प्रतिपालन करने में, ऐसी कठिन समस्या उपस्थित होने पर भी समर्थ हुए, स्त्री के लिए इससे गौरव की बात और क्या हो सकती है। लक्ष्मण ! इस अभागिनी के भाग्य में ऐसा दुर्लभ पति-सौभाग्य लिखा होने पर भी यह आज जिस शोकसागर में पतित हुई है, उसका किनारा दिखाई नहीं देता। परन्तु लक्ष्मण, मेरा भाग्य ही इस दुःख का कारण है, प्रभु का इसमें रंचमात्र भी दोष नहीं। विधि की इच्छा बड़ी बलवान है, होनी को टालना मनुष्य की शक्ति से बाहर है। मैं इन वनवास के कष्टों को किसी गिनती में नहीं ला सकती। यदि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रभु की चरण-सेवा प्राप्त होती तो यह दासी इनसे सौगुने क्लेशों को भी कुछ न समझती। जो हो, तुम प्रभु से कहना कि मैं उनसे केवल यही भिक्षा माँगती हूँ कि यद्यपि पत्नी-रूप से मैं उनके द्वारा त्याग दी गई तथापि प्रजा-रूप से मैं उन्हीं के अधिकार में रहूँगी। इसलिए उनसे मेरा सम्बन्ध नहीं टूटा है। इस निर्जन बन में रहते हुए भी यदि उनका कुशल-सम्वाद मुझे मिलता रहेगा तो मैं सुखी रहूँगी। अतएव एक साधारण प्रजा की भाँति मुझे राज्य का कुशल-समाचार मिलता रहे। जिस प्रकार इससे सीता वञ्चित न रहने पावे, वैसा करने के लिये प्रभु से कह देना।"

ऐसी सती साध्वी स्त्री संसार में दुर्लभ हैं। जब किसी पुण्यवती भारतीय महिला का चरित्र हम पढ़ते हैं तो हृदय में अपूर्व आनन्द का स्रोत उमड़ उठता है। सती का चरित्र इस प्रकार के स्वर्गीय आनन्द से परिपूर्ण होने के कारण ही शास्त्र में सतीत्व का इतना माहात्म्य वर्णन किया गया है।

भारतवर्ष की आर्य-स्त्रियाँ सतीत्व धर्म को प्राणों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से अधिक प्यारा जानती थीं, सतीदाह और जुहार-व्रत इसका दूसरा प्रमाण है। पति की मृत्यु के बाद जीवित पत्नी का मृतक पति के साथ चिता पर बैठ कर प्रसन्नतापूर्वक अपने शरीर को भस्मीभूत कर डालने का दृष्टान्त आर्य-स्त्रियों के अतिरिक्त संसार में और कोई न दिखा सका। पति ही सती का प्राण है। यद्यपि कालक्रम से आगे चलकर ज़माने में सती-दाह के पक्षपात ने भारतवासियों को अंधा बना डाला था और उस अंध अवस्था में यहाँ के मनुष्य, प्रायः सती होने की इच्छा न रहते हुए भी; स्त्रियों को स्वर्गप्राप्ति आदि का लोभ दिखाकर चिता पर बैठाल देते थे। तथापि यह मुक्तकंठ से स्वीकार करना पड़ेगा कि उस समय में सच्ची सतियों का अभाव न था। कितनी ही स्त्रियाँ पति की मृत्यु के बाद कुटुम्बियों के लाख मना करने पर भी स्वेच्छापूर्वक मृत पति के साथ हँसती हुई चिता पर बैठ जाती थीं और जलती हुई आग में जलते-जलते आनन्दसूचक गान गाते हुए स्वर्ग को प्रस्थान करती थीं। इस तरह के सतीदाह के अनेक वृत्तान्तों को कितने ही सत्य-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रिय अंग्रेजों ने भी मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया है और वे अपनी डायरियों में ऐसी सच्ची सतियों का वर्णन लिख गये हैं। पुस्तक के बढ़ जाने के भय से हम यहाँ पर उन वृत्तान्तों को उदाहरण के लिए उद्धृत न कर सके। पता लगाने की इच्छा रखनेवालों को सहज ही ऐसे सैकड़ों उदाहरण मिल सकेंगे।

दूसरा जुहारव्रत है। यह भी आर्य स्त्रियों के सतीत्व और आत्मगौरव का ज्वलन्त उदाहरण है। किसी प्रदेश पर यदि कोई शत्रु आक्रमण करता था और उस प्रदेश के राजा की हार हो जाती थी तो वहाँ की स्त्रियों को जैसे ही यह खबर मिलती थी कि उनके पति, पुत्र आदि युद्ध में मारे गये और देश पर शत्रु ने अधिकार जमा लिया; वैसे ही तुरन्त वे सब इकट्ठी होकर एक भारी चिता तैयार करती थीं और सतीत्वसूचक गीत गाती हुईं उस जलते हुए अग्निगुण्ड में कूदकर प्राण दे देती थीं। शत्रुओं का उनकी पवित्र देह को छूकर कलङ्कित करना तो दूर रहा, उनकी छाया भी उन्हें छूने को नहीं मिलती थी। सिंहिनी जिस प्रकार सियार को तुच्छ समझती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है और उसको छूने से घृणा करती है, उसी प्रकार आर्य स्त्रियाँ पर पुरुष के संसर्ग को तुच्छ समझती थीं। ये तो पुराने समय की बातें हैं। पर अभी कुछ बहुत जमाना नहीं गुज़रा कि बादशाह अलाउद्दीन ने जिस समय चित्तौर पर आक्रमण करके उस पर अधिकार जमा लिया तो राजपूताना के महाराणा भीमसिंह की पटरानी पद्मिनी देवी ने कितनी ही अन्य रानियों को साथ ले जलते हुए अग्निकुण्ड में कूदकर प्राण दे दिये। देश की प्रायः समस्त क्षत्रिय-स्त्रियों ने महारानी पद्मिनी का अनुसरण किया था। महारानी पद्मिनी अत्यन्त सुन्दरी थी। उसी को प्राप्त करने की दुष्ट इच्छा से अलाउद्दीन ने चित्तौर पर आक्रमण किया था। राजधानी पर अधिकार जमा लेने के बाद विजयी अलाउद्दीन ने बड़े आनन्द और उत्साह के साथ राजमहल में प्रवेश किया। परन्तु देखता क्या है कि वह आनन्दभवन श्मशान के रूप में परिणत हो गया है। धुएँ के बादल उठ रहे हैं और वीर राजपूत-स्त्रियों के सुन्दर शरीर राख में मिल चुके हैं। अला-उद्दीन को ऐसा प्रतीत हुआ कि मानों वह श्मशान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूमि खीसें काढ़-काढ़कर कामलोलुप बादशाह का उपहास कर रही है। उसका हृदय काँपने लगा और वह वहाँ क्षणमात्र भी ठहर न सका। उसका दिल टूट गया और वह यह सोचते-सोचते वहाँ से लौटा कि धन्य आर्य स्त्रियां का सतीत्व! धन्य उनका वीरत्व, जिन्होंने मुझ भारत सम्राट् के अतुल ऐश्वर्य और प्रताप को तनिक भी आदर न दिया! जब उन्हें यह सूचना मिली कि हमारे पति, पुत्र, भाई, बन्धु सब युद्ध में मारे गये तो उन्होंने सिंह का भोजन सियार के लिए योग्य न समझ प्यारे प्राणों का मोह छोड़कर आत्मसम्मान की रक्षा की।

यह हमारी कपोल-कल्पित कहानी नहीं है। महात्मा टाड साहब के लिखे हुए राजस्थान के इतिहास में बड़े गौरव के साथ यह वृत्तान्त लिखा गया है। जिन्हें इतिहास का थोड़ा भी ज्ञान है, वे इस वृत्तान्त को असह्य, कल्पित या अत्युक्तिपूर्ण कहने का साहस न करेंगे। हाँ, मूर्खों की बात ही दूसरी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्त्रियों के दोष

कौन-कौन से गुण होने पर स्त्रियाँ सच्ची कुलदेवी बन सकती हैं, यह बताया गया। अब हम संक्षेप में यह बतावेंगे कि कौन-कौन से दोष स्त्रियों के कुलदेवी बनने के मार्ग में बाधा डालते हैं।

स्त्रियों के दोष दो प्रकार के हैं। पीछे जिन गुणों का उल्लेख किया गया, उनमें से किसी का न होना ही एक दोष कहा जा सकता है। उनके सिवा कुछ और स्वतन्त्र दोष भी हैं।

पहले प्रकार के दोषों के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि, 'सत्यवादिता' एक गुण है, परन्तु उसका अभाव अर्थात् 'असत्यवादिता' एक दोष है। दूसरे प्रकार के दोष गुणों के अभाव से उत्पन्न नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैं। वे स्वतन्त्र हैं, जैसे—कलह, विवाद, पराई निन्दा, ईर्ष्या इत्यादि।

पहले प्रकार के दोषों को त्यागने के लिये स्त्रियों को उनके गुणों का संचय करना चाहिये। ऐसा करने पर वे दोष अपने आप ही दूर हो जायँगे, क्योंकि उन गुणों का अभाव ही दोष है। यदि गुणों का अभाव न हो तो उन दोषों का होना ही असम्भव है।

दूसरे प्रकार के दोषों को छोड़ने के लिये कठोर संयम की आवश्यकता है। मन को सदा अपने अधिकार में रखकर दृढ़तापूर्वक उन दोषों को दूर करना चाहिये।

आगे हम इन दोनों प्रकार के दोषों का संक्षेप से वर्णन करते हैं—

आलस्य

आलस्य जितना ही पुरुषों के लिए बुरा है उतना ही स्त्रियों के लिए। आलसी स्त्रियाँ घर की शोभा नहीं बढ़ा सकतीं; न घरवालों को प्रसन्न रख सकती हैं। स्त्रियाँ यदि आलसी न बनकर खूब काम करने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की आदत डालें और सदा ही मेहनत के साथ बड़ों की सेवा और घर का काम-धन्धा करें, तो आज कल की सास-बहुओं के झगड़े बहुत कम हो जायँ। कितनी ही स्त्रियाँ केवल रसोई तैयार कर देने ही तक अपने कर्त्तव्य का अन्त समझती हैं और किसी-किसी को वह भी भार जान पड़ता है। आजकल बड़े घरों की लड़कियाँ प्रायः आरामतलब होती हैं; कोई काम उनसे नहीं होता। वे घर के काम-धन्धे को—यहाँ तक कि रसोई बनाने को भी—छोटे घरों की स्त्रियों का काम समझती हैं। केवल सूई तागा लेकर रूमाल काढ़ने में लगी रहती हैं। रूमाल बनाओ, इस में कोई हानि नहीं। परन्तु साथ ही साथ घर का काम-धन्धा करके अपने घरवालों के लिए लक्ष्मी के समान बनने की चेष्टा भी करो। अन्यथा गृहस्थी का खर्च बढ़ेगा, कोई काम-धन्धा नियमित रूप से नहीं होगा, घर में अशान्ति रहेगी। इतना ही नहीं, तुम अपनी भी हानि करोगी। आलसी व्यक्ति का मन और स्वास्थ्य शीघ्र ही बिगड़ जाता है। आजकल स्त्रियों के रोग हिस्ट्रिया तथा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रसूत आदि सब आलस्य ही का परिणाम है। हमारी समझ में प्रसूत रोग, जो आजकल घर-घर में फैल रहा है, इसका मूल कारण स्त्रियों का आलस्य ही है, और कुछ नहीं। यदि स्त्रियाँ बचपन ही से शारीरिक परिश्रम कर के शरीर को स्वस्थ और सबल बनाने की चेष्टा करें तो यह भयानक रोग शीघ्र ही स्त्री-समाज से दूर हो जाय। हमारे बड़े घरों की अपेक्षा नीची श्रेणी के घरों की स्त्रियाँ आज भी स्वस्थ और बल देखी जाती हैं। यह भयानक रोग उनके पास तक नहीं फटकता। इसका कारण यही है कि वे हमारे बड़े घरों की स्त्रियों की तरह निकम्मी बैठकर समय नहीं गँवातीं; बल्कि मेहनत के साथ घर का सब काम-धन्धा किया करती हैं।

विलासिता

आजकल की स्त्रियों में विलासित भी बड़े जोरों से घुसी चली आ रही है। नई वधुओं के कमरों में इसका प्रताप विशेष रूप में देखा जाता है। आजकल जो स्त्रियाँ बालों में तेल-फुलेल मल सकती हैं, इत्र की सुगन्ध चारोंओर फैलाती हुई चल फिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सकती हैं, वही श्रेष्ठ गिनी जाती हैं। दूसरी स्त्रियाँ उनको विशेष सौभाग्यशालिनी समझती हैं, और उनकी नकल करने के लिए तैयार रहती हैं। कितनी ही स्त्रियाँ अपने इन शौक़ों को पूरा करने के लिए अपने स्वामी को परेशान किये रहती हैं। यदि स्वामी उनके लिए विलासिता की यह सब सामग्री न जुटा सकें तो वे अपने भाग्य को धिक्कारती भी हैं। इतना ही नहीं, प्रायः इन्हीं बातों पर पति-पत्नी में मनोमालिन्य बना रहता है। भारतवर्ष की स्त्रियों के लिए यह कलंक की बात है। जिस देश की स्त्रियाँ स्वामी के अतिरिक्त संसार के सारे पदार्थों को तुच्छ समझती थीं और सांसारिक सुख और सम्पत्ति की अपेक्षा आध्यात्मिक उन्नति को ही श्रेष्ठ समझती थीं, उस देश की स्त्रियों में विलासिता का प्रेम देखकर बहुत ही दुःख होता है।

यदि सामर्थ्य है तो तेल-फुलेल मलो, सजधज से रहो ; कोई हर्ज नहीं। परन्तु यदि सामर्थ्य नहीं है, खर्च की ज़्यादा गुञ्जाइश नहीं है तो उसके लिये दुःख काहे का ? क्या स्त्री जीवन के लिए विलासिता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इतनी अधिक आवश्यक वस्तु है कि उसके लिए अपने मानसिक सुख और शान्ति का नाश कर दिया जाय? अथवा घरवालों से झगड़ा ठाना जाय? जो यह समझती हैं कि तेल-फुलेल मलकर और इत्र की सुगन्ध उड़ाकर ही हम दूसरों में बड़ी बन सकती हैं, वे मूर्ख हैं, और उन्हें देखकर तुम यदि यह सोचती हो कि वे इन बातों से सौभाग्यशालिनी बनी हैं, उनका अनुकरण कर के हम भी सौभाग्यशालिनी बन सकती हैं तो यह तुम्हारी सरासर नासमझी है। यदि इत्र मलने और साबुन लगाने की सामर्थ्य तुम में नहीं है तो उन विलासिनी स्त्रियों के निकट लज्जित या सङ्कुचित होने का कोई कारण नहीं। यह सब टंटा छोड़कर यदि तुम अपने चरित्र को श्रेष्ठ बनाने की सब से अधिक चेष्टा करो तो वही तुम्हारे सच्चे गौरव का कारण होगा।

विलासिता केवल व्यर्थ ही हो, अथवा अनावश्यक ही हो, सो नहीं; किन्तु उससे हानि भी होती है। वह प्रायः स्त्रियों को आलसी, निकम्मी, रोगी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अभिमानी और असहनशील बना डालती है। स्त्रियों के लिए ये बातें अत्यन्त हानिकारक हैं। विलासिता से प्रेम रखनेवाली स्त्री में एक-एक करके धीरे-धीरे ये सब दोष अवश्य ही आ जाते हैं।

मान लो, आज तुमने विलासिता के लिए इन सब क़ीमती चीज़ों का व्यवहार करना आरम्भ किया और थोड़े दिनों में इनका व्यवहार तुम्हारे स्वभाव में दाखिल हो गया तो फिर इन चीज़ों के बिना तुम्हारी घड़ी न कटेगी। हर वक्त आराम में पड़े-पड़े तुम्हारा शरीर निकम्मा हो जायगा, कोई काम तुम से न होगा। काम की अनिच्छा के साथ ही साथ आलस्य उत्पन्न होगा। आलस्य के आते ही शरीर दुर्बल होने लगेगा और शारीरिक दुर्बलता के साथ ही साथ मानसिक दुर्बलता भी दिखाई देने लगेगी। इसके सिवाय जो तुम्हारी तरह ठाटबाट से नहीं रह सकती हैं, उन्हें तुम नीची नज़र से देखने लगोगी, दूसरों से घृणा करोगी, अपने को बड़ा समझोगी। एक अकेली विलासिता से इतने कुफल फलेंगे। अतएव ऐसे शत्रु को कभी पास न फटकने देना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

केवल इत्र-फुलेल आदि शौक की चीजें ही आजकल विलासिता की सामग्री हों, सो नहीं; बल्कि गहनों से प्रेम, घर के काम-धन्धों से घृणा, केवल सीने-पिरोने, पान खाने और गाने-बजाने में समय गँवाना तथा दूसरों को व्यर्थ ही बहुत सी चिट्ठीपत्री लिखना, ये भी सब विलासिता के अङ्ग बन रहे हैं। विशेष आवश्यकता न होने पर तुम इन बातों से भी अलग रहना।

स्वेच्छाचारिता

स्वेच्छाचारिता स्त्रियों के लिए अच्छी नहीं। हिन्दूशास्त्र के अनुसार स्त्रियों को जीवन-पर्यन्त पुरुषों की देख-रेख में रहना उचित है। मनु ने कहा है—

पिता रक्षति कौमारे भर्त्ता रक्षति यौवने।
रक्षन्ति स्थविरे पुत्राः न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति॥
बालया वा युवत्या वा वृद्धया वापि योषिता।
न स्वातन्त्र्येण कर्त्तव्यं किञ्चित् कार्यं गृहेष्वपि॥
बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत् पाणिग्राहस्य यौवने।
पुत्राणां भर्त्तरि प्रेते न भजेत् स्त्री स्वतन्त्रताम्॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थात्, कुमारी अवस्था में पिता, यौवन में पति और वृद्धावस्था में पुत्र स्त्री की रक्षा करे। किसी अवस्था में भी उसका स्वाधीन रहना उचित नहीं।

स्त्री चाहे बालिका हो, चाहे युवती हो अथवा वृद्धा हो, वह अपने घर में भी कोई काम स्वाधीन-भाव से न करे।

बचपन में पिता के, विवाह होने पर पति के और पति की मृत्यु के बाद पुत्र के अधीन रहे। कभी स्वतन्त्र न हो।

'महा निर्व्वाण-तन्त्र' में भी इसी आशय का एक श्लोक है—

तिष्ठेत् पितृवशे बाल्ये भर्त्तुः सम्प्राप्त यौवने।
वार्द्धक्ये पति बन्धूनां न स्वतन्त्रा भवेत् क्वचित्॥

अर्थात्, स्त्री बाल्यावस्था में पिता-माता के, यौवन में स्वामी के तथा वृद्धावस्था में स्वामी के कुटुम्बियों अर्थात् पुत्र आदि के वश में रहे। तीनों अवस्थाओं में वह इन तीनों संरक्षकों के आज्ञानुसार चले, कभी स्वतन्त्र न हो। इन बातों से सिद्ध होता है कि स्वाधीनता नाम की जो कोई वस्तु है, वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्त्रियों के लिए कदापि नहीं है। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में कार्यक्षमता और विचारशक्ति प्रायः कम होती है। अतएव अपने मङ्गल के लिए और संसार के हित के लिए पुरुष ही उनका एकमात्र अवलम्ब है। इसीलिए दूरदर्शी हिन्दू-शास्त्रकार यह नियम बना गये हैं कि वे सदा ही पुरुषों की अधीनता में रहें। और यही कारण है कि आजकल कितने ही दोषों के रहते हुए भी हिन्दू-स्त्रियाँ सर्वश्रेष्ठ मानी जाती हैं। तुम स्वाधीनता के द्वारा क्षणिक सुख प्राप्त करने की आशायें भूलकर अपनी इस मङ्गल-मय स्थिति को घृणा की दृष्टि से न देखना। ऊपर से देखने पर तुम्हें चाहे कुछ जान पड़े, परन्तु ध्यान से देखने पर ज्ञात होगा कि तुम्हारी इस अधीनता की अवस्था में स्त्रियों के एक अत्यन्त गौरवमय और शान्तिपूर्ण भाव का अंकुर छिपा हुआ है। यदि तुम एक बार उस अङ्कुर का पता लगाकर उसे बढ़ा-कर हराभरा कर सको तो तुम आजन्म इस परा-धीनता के गहने को पहने रहने की चेष्टा करोगी। कितने ही हिन्दू-घरों की स्त्रियाँ साहबी ढङ्ग की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहन-सहन को बड़े सौभाग्य की बात समझती हैं। गौन पहनकर, सिर पर टोप लगाकर सब के साथ वार्तालाप करना, बाजार की सैर करना और बाहर निकलकर हवा खाना ये उनके निकट बड़े सौभाग्य की बातें हैं। परन्तु जिन्होंने सच्चे हृदय से पति को प्रेम करना और सास-ससुर की सेवा करना सीखा है, घर के भीतर सन्तान का मुख देख-देखकर पवित्र स्नेह से जिनका मन प्रफुल्लित रहता है, क्या वे कभी इस अवस्था को गौरव की दृष्टि से देख सकती हैं ? घर के कोने में बैठकर जब वे अपने पति, पुत्र तथा कन्या के मुँह की ओर बारम्बार देखती हैं तो अपनी सुधबुध भूल जाती हैं, पल-पल में उनके हृदय में आत्मत्याग का भाव उत्पन्न होता है। ऐसी दशा में क्या वे कभी स्वप्न में भी उस घर को निन्दनीय या अशान्तिजनक समझ सकती हैं ? उस अनुपम स्नेह और प्रेम के आनन्द-समुद्र में निमग्न रहने पर क्या वे उन स्वतन्त्र स्त्रियों की स्वार्थपूर्ण बाहरी स्वाधीनता को घृणा और निरादर की दृष्टि से नहीं देखेंगी ? उन्हें निश्चय-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पूर्वक यह ज्ञात हो जायगा कि स्त्रियों का सुख आत्मसुख में नहीं, किन्तु आत्मत्याग में है। विलासिता उनके सुख का कारण नहीं, किन्तु त्याग है। उनका सुख बाहर नहीं; किन्तु भीतर ही है। हिन्दू-शास्त्र का यह गूढ़ रहस्य साधारण मनुष्यों की समझ में जल्दी नहीं आवेगा, और इसलिए हमारा एक दल सदा ही स्त्रियों की स्वाधीनता के लिए चिल्लाहट, पुकार मचाता रहेगा। परन्तु तुम से हमारा यह अनुरोध है कि तुम एक बार इस पराधीनता की स्थिति का रसास्वादन किये बिना दूसरे मैदान में कदम न रखना। एक बार जहाँ तुम्हें इसका स्वाद मिला तो तुम सहज ही जन्म भर के लिए उसे अपने हृदय में स्थान दोगी। उस समय दोनों प्रकार की रहन-सहन का अन्तर भी अच्छी तरह तुम्हारी समझ में आ जायगा।

अव्यवस्था

क्रमबद्धता एक गुण है; इस गुण का अभाव ही अव्यवस्था नहीं है, बल्कि वह स्वयम् एक भारी अवगुण है। जो स्त्रियाँ व्यवस्थित रूप से काम करना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं जानतीं, उनके घर की दशा सदा ही बिगड़ी रहती है। जिस प्रकार पुरुष बाहरी मामलों के कर्त्ता-धर्त्ता होते हैं, उसी प्रकार घर के कामों पर स्त्रियों का अधिकार रहता है। गृहस्थी के कार्यक्रम का भार पुरुष अपने माथे नहीं ले सकते; क्योंकि ऐसा करने से उन्हें बाहरी मामलों पर पूरी देखरेख रखने का अवसर नहीं मिल सकता। यह भार स्त्रियों ही के उठाने योग्य है। घर में क्या चीज़ है, क्या नहीं, कौन चीज़ किस स्थान पर रक्खी है, कौन चीज़ किस स्थान में रखने में सुभीता होगा, किस समय कौन काम होना चाहिये, किस काम के बाद कौन काम करना ठीक होगा—इन सब बातों पर स्त्रियों को ध्यान रखना पड़ता है। स्त्रियों के ऐसा न करने पर न सिर्फ घरवालों ही को विविध कष्ट उठाने पड़ते हैं बल्कि स्वयम् उन्हें भी बहुत क्लेश होता है। कौन चीज़ किस स्थान पर रक्खी है, यह याद न रखने पर, सम्भव है, सास-ससुर आदि कभी कोई चीज़ माँग बैठें और बहुत कुछ ढूँढ़ने पर भी उस समय वह चीज़ न मिले तो वे नाराज़ होकर तुम्हें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दो-चार उलटी-सीधी सुनाने लगें। सास-ससुर अथवा स्वामी जिस समय पूजा करने के लिए बैठें तो और सब काम छोड़कर यदि तुम ने पहले पूजा की सब सामग्री लाकर उनके सामने रख दी तब तो अच्छा है; परन्तु यदि तुम पहले उसे न करके किसी अगले काम का प्रबन्ध करने लगीं, तो ऐसी दशा में, कार्यक्रम पर ध्यान न देने के कारण, तुम्हारे ऊपर फटकार पड़ने की सम्भावना है। बहुत सी चीज़ों को यदि इकट्ठा एक ढेर में जमा कर रक्खोगी तो बहुत सम्भव है कि कुछ आवश्यक वस्तुएँ, जिनकी रोज ज़रूरत पड़ती है, कितनी ही अनावश्यक वस्तुओं के नीचे जा पड़ें और जब ज़रूरत पड़े तो ढूँढ़ते-ढूँढ़ते पसीने से तर हो जाने पर भी न मिले; व्यर्थ समय बरबाद हो, सो अलग। इसलिए सब चीज़ों को तरतीब के साथ यथास्थान रखना उचित है। इधर-उधर कोई चीज़ न फेंको, जिस स्थान पर जो चीज़ रखने से आवश्यकता पड़ने पर तुरन्त ही मिल सके, उसे उसी स्थान पर सजाकर रक्खो। जो चीज़ जितनी अधिक आवश्यक हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसे उतने ही अधिक सुभीते से मिल जाने योग्य स्थान में रखना चाहिये। सब चीज़ों को ऐसी तरतीब से सजाकर रखना चाहिये कि किसी चीज़ का नाम लेते ही फौरन ही वह जगह नजर में घूम जाय, जहाँ वह चीज़ रक्खी है। अपने निज के वस्त्र आभूषणों आदि के सम्बन्ध में भी ऐसा ही प्रवन्ध रक्खो जो चीज़ जिस तरह पहनने में अच्छी लगे, उसे उसी तरह पहनो। जिस काम की जिस समय आवश्यकता है, उस समय वही काम करो। जिसकी पहले ज़रूरत है, उसे छोड़कर आगे के काम में न लगो और न आलस्य के वशीभूत हो किसी ज़रूरी काम को अधूरा छोड़कर बैठ रहो।

जिस मामले की बातें करो, उसकी हरएक बात ऐसे सिलसिले से कहो कि क्रम भंग न होने पावे और सुननेवाले तुम्हारी सब तर्क-युक्तियों को अच्छी तरह समझ सकें। एक बात के बीच में दूसरी बात घुसेड़कर अथवा एक बात की युक्ति में दूसरी बात की युक्ति मिलाकर गड़बड़ाध्याय न कर डालो। हर बात अपने आशय को ध्यान में रख

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शान्तभाव से आहिस्ता-आहिस्ता कहो। ऐसा करने पर बात का क्रम कभी न बिगड़ेगा। जहाँ-तहाँ बैठना और इधर-उधर चीज़ों को तितर-बितर करके डालना छोड़ दो। इन्हीं बातों से अव्यवस्था उत्पन्न होती है।

कलह

यह दोष स्त्रियों के सब दोषों से अधिक निकृष्ट है। अन्तर में चाहे कितना विष क्यों न भरा हो, जब तक तुम उस विष के चिन्ह बाहर नहीं प्रकट करोगी, तब तक लोगों की प्यारी बनी रह सकोगी। मन में विष रखकर बाहर से शान्त और मीठे रहना भी यद्यपि कुछ अच्छा नहीं है, तथापि इसमें भी एक सुभीता है। ढाक के फूल में गंध नहीं होती और इसलिए अन्यान्य सुगंधित फूलों की अपेक्षा उसका आदर बहुत कम होता है। परन्तु यह होते हुए भी जिन फूलों में न तो सुन्दरता है और न सुगन्ध है उनकी अपेक्षा उसकी कदर कम नहीं है। जिस फूल में सुन्दरता भी नहीं है, उस फूल के सामने ढाक का सुन्दर फूल अवश्य ही अधिक आदरणीय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। इसी प्रकार जिसके अन्तर में भी विष है और बाहर भी कलह मचा सब की कड़वी बनी रहती हैं, उनकी अपेक्षा वही अच्छी हैं जो अपने मन का विष मन ही में रखती हैं, बाहर शान्त रहती हैं। इसलिए अंतर में क्रोध, अभिमान, ईर्ष्या-द्वेष, घृणा आदि रहते हुए भी तुम उन्हें बाहर प्रकट करके सर्व नाशक कलह-फसाद का बीज न बोना। क्योंकि क्रोध, ईर्ष्या, घृणा आदि दोषों से तुम्हें मन ही मन में क्लेश होगा, परन्तु यदि कलह मचाई तो बाहर भी थू-थू होगी। भीतर के दोषों को दूर करना सब से अधिक आवश्यक और प्रधान कर्त्तव्य है। क्योंकि ऐसा करने में इस लोक और परलोक में आत्मा को शान्ति मिलती है। तथापि बाहर के दोषों को दूर करना भी अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इससे इस लोक में तुम्हारा हित होगा।

कटुवादिनी और कलहप्रिय स्त्रियों को कोई प्यार नहीं करता। कितनी ही स्त्रियाँ कलह-फसाद के द्वारा अपने को निर्दोष सिद्ध करने और दूसरों पर अपना रोब जमाने की चेष्टा किया करती हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु इससे उनका उद्देश्य रंच भी सिद्ध नहीं होता; बल्कि फल बिलकुल विपरीत होता है। जिस दोष को छिपाने के लिए वे कलह मचाती हैं, वह दोष उनके चरित्र को उतना कलंकित नहीं करता, जितना कि उनकी कलहप्रियता उनके चरित्र को दूषित और कलंकित करती है। उस दोष के लिए लोग उन्हें जितना बुरा कह सकते, उससे कहीं अधिक वे उन्हें, उनकी कलह-प्रियता का परिचय पा कर धिक्कारने लगते हैं। अतएव जो स्त्रियाँ यह समझती हैं कि लड़ाई-झगड़ा मचाकर वे अपनी निर्दोषिता सिद्ध कर सकती हैं, दूसरों पर प्रभाव जमा सकती हैं और लोगों की दृष्टि में भली बन सकती हैं, यह उनकी बड़ी भारी भूल है। शान्त और सरलस्वभाव स्त्रियों की शत्रु भी प्रशंसा करते हैं। परन्तु लड़ाकी और कठोर स्वभाव स्त्रियों से घरवाले भी प्रसन्न नहीं रहते। इतना ही नहीं; बल्कि प्रायः देखा जाता है कि लड़ाकी स्त्रियाँ जिस के लिये कलह-फसाद मचाती हैं वह भी उनसे घृणा करने की इच्छा करता है। कितनी ही पतिभक्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्त्रियाँ अपने पति के लिये दूसरों के साथ जी जान से कलह मचाकर भी पति को प्रसन्न करने में असमर्थ रहती हैं। कारण यह है कि पति यद्यपि यह अच्छी तरह समझ लेता है कि मेरी स्त्री मुझ में पूरी श्रद्धा रखती है, मेरा अत्यन्त पक्षपात करती है और इसके लिए वह दूसरों के साथ लड़ाई-झगड़ा ठाने रहती है; परन्तु इस पर भी कटुवादिनी और कलहकारिणी समझकर वह अपनी स्त्री पर यथोचित स्नेह नहीं रख सकता। समझ देखो यह कितने बड़े दुर्भाग्य और लज्जा की बात है कि पति अपनी पत्नी के प्रति प्रेम तथा पति-भक्ति को जानते हुए भी कलहप्रिय होने के कारण हृदय से उसका आदर न कर सके।

इस कलह से केवल अपनी ही हानि नहीं होती, किन्तु घरभर में अशान्ति फैली रहती है। जिस घर में स्त्री कलहकारिणी है, उस घर में किसी को भी चैन नहीं मिलता। पति, पुत्र, नौकर-चाकर सभी दिनरात क्लेश में पड़े रहते हैं।

हमारे देश में एक कहावत है—"गूँगे का शत्रु कोई नहीं"। बात वास्तव में बड़ी महत्त्वपूर्ण है। कलह-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रिय स्त्रियाँ यदि इस बात को सदा याद रक्खें और इसके आशय को अच्छी तरह समझ लें तो वे जल्दी ही इसकी सत्यता का अनुभव कर सकेंगी। यदि तुम अपने घर में सदा शान्ति बनाये रहने की इच्छा रखती हो और पति, पुत्र, कुटुम्बी तथा नौकर-चाकर सभी को सुखी रखकर स्वयम् कुलदेवी बनना चाहती हो तो इस बात को सदा ही अपने ध्यान में रखना।

दूसरों की निन्दा और ईर्ष्या—द्वेष

हमारे देश की स्त्रियों को प्रायः दूसरों की निन्दा करने का बुरा रोग है। प्रायः देखा जाता है कि जहाँ चार-छः स्त्रियाँ एक जगह इकट्ठी हुईं कि बस, मुहल्ले की अन्यान्य स्त्रियों के रहन-सहन की समालोचना करने लगीं। यह समालोचना प्रायः यकतरफा होती है, किसी की प्रशंसा को इसमें स्थान नहीं दिया जाता, सिर्फ दोष ही दिखाये जाते हैं। किसने किस स्थान पर कौनसी भूल की है, किसने कौन सा बुरा काम किया है—बस, यही बातें हुआ करती हैं। मोहिनी की माँ ने कल अमुक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आदमी से बड़ी कड़ी बातें कहीं, किशोरी की माँ अमुक स्थान पर घूँघट खोले जा रही थी, मुन्नू की बहन ने उस दिन भूल से दाल में दो दफे नमक डाल दिया था। इसी तरह की और कितनी ही बातें खूब नमक-मिर्च लगाकर आपस में एक दूसरे से कहना आरम्भ कर देती हैं। यह स्वभाव स्त्रियों की उच्च हृदयता का लक्षण नहीं है। दूसरों में दोष ढूँढने की आदत बहुत ही बुरी है। यदि स्वयम् गुणवती बनना चाहती हो तो केवल दूसरों के गुणों की ओर ही ध्यान दो, उनके दोषों पर दृष्टि मत डालो। हाँ, यदि किसी के सम्बन्ध में तुम्हें यह निश्चय हो कि तुम्हारे कहने से उसके दोष दूर हो सकते हैं तो अवश्य ही ऐसा करो, कोई हर्ज नहीं। परन्तु ऐसी दशा में भी यह कहकर कभी घमण्ड न करना कि हमने उसके दोषों को दूर किया। जिसके दोषों को दूर करना चाहती हो उसकी निन्दा भी कभी न करना। सारे संसार को स्नेह की दृष्टि से देखो, तभी तुम अपना भला कर सकोगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस संसार में सभी को एक ईश्वर ने जन्म दिया है। अतएव उसकी किसी भी सन्तान को घृणा की दृष्टि से देखना सर्वथा अनुचित है। ईर्ष्या-द्वेष का न होना ही श्रेष्ठ अन्तःकरण का लक्षण है। ईर्ष्या-द्वेष के कारण ही पराई निन्दा करने की बुरी आदत पैदा होती है। इसलिए आदर्श-स्त्री बनने के लिये तुम्हें ईर्ष्या-द्वेष से दूर रहकर, सभी को स्नेह की दृष्टि से देखना चाहिये।

अभिमान और अहंकार

अभिमान कई तरह का होता है। माता पिता के प्रति अभिमान, स्वामी के प्रति अभिमान, आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए दूसरों के प्रति अभिमान इत्यादि।

अपने घरवालों अथवा कुटुम्बियों के प्रति किया जानेवाला अभिमान विशेष हानिकारक नहीं है। आजकल की नई बधुएँ प्रायः बात-बात में अपने स्वामी के प्रति अभिमान किया करती हैं; परन्तु वह अभिमान उनके गहरे हार्दिक प्रेम का एक ही रूप है। जहाँ पर प्रेम का घना सम्बन्ध है, वहाँ पर इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकार के अभिमान का अधिकार रहता ही है। परन्तु उस अभिमान को बड़ी सावधानी के साथ व्यवहार में लाना चाहिये। आवश्यकता से अधिक होने पर उस अभिमान से भी भारी हानि पहुँचने की आशंका है। इसलिए जहाँ तक हो सके, अभिमान को क़तई अलग रखना ही अच्छा। प्राचीन समय की स्त्रियाँ अपने स्वामी के प्रति लेशमात्र भी अभिमान नहीं रखती थीं, फिर भी उनमें परस्पर प्रगाढ़ प्रेम और अनुपम स्नेह रहता था। परन्तु आज-कल की स्त्रियाँ रातदिन अभिमान का राग अलाप कर भी प्रेम का प्रभाव नहीं जमा सकतीं। फिर भला ऐसे अभिमान से क्या लाभ? ऐसी दशा में जब इस प्रकार का प्रेम-सम्बन्धी अभिमान भी सर्वथा निर्दोष नहीं है तो दूसरों के प्रति किये जाने वाले अभिमान को कौन अच्छा कह सकता है? अभिमान से आप ही आप अहंकार की उत्पत्ति होती है। "मेरा ऐसा अपमान किया, मुझे कुछ समझा ही नहीं,"—बस, यह बात ध्यान में आई कि उसके बाद ही चित्त में यह भाव उत्पन्न हुआ—"क्यों, मैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्या कुछ हीन हूँ ? किसी से कम हूँ ?" जहाँ इस भाव ने हृदय में घर कर लिया, तो बस, स्त्री का सारा सौन्दर्य नष्ट हो जाने में देर नहीं लगती।

स्त्री के अहंकार से घर का नाश हो जाता है। उसे स्वयम् भी तरह-तरह की विपत्तियाँ झेलनी पड़ती हैं। हिन्दू-स्त्री त्याग की साक्षात् मूर्त्ति है। आदर्श हिन्दू-स्त्रियाँ सर्वदा ही अपने को दूसरे के हेतु निछावर समझती हैं। ऐसी दशा में अहंकार का प्रवेश होने पर हृदय में आत्मत्याग का भाव कदापि नहीं रह सकता। वास्तव में अहंकार का अभाव ही त्याग है। इसलिए यदि तुम सच्ची साध्वी स्त्री बनने की अभिलाषा रखती हो तो अहंकार और अहंकार के मूल अभिमान को कभी अपने पास न फटकने देना।

स्वास्थ्य से लापरवाही

इस देश की स्त्रियाँ स्वास्थ्य-रक्षा से जैसी बेखबर रहती हैं वैसी और किसी देश की नहीं। एक तो विलासिता के कारण वे दिनोंदिन योंही निकम्मी और निर्बल होती जाती हैं, तिसपर यदि वे अपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्वास्थ्य की ओर यथोचित ध्यान न देंगी तो किस प्रकार अपनी रक्षा कर सकेंगी। यही कारण है कि आजकल हमारे देश में हिस्ट्रिया और प्रसूतिका आदि दुष्ट रोग फैलते जाते हैं। यदि अभी से इनके नाश का उपाय न किया जायगा तो कुछ ही वर्षों में हमारे देश की स्त्रियों की दशा अत्यन्त शोचनीय हो जायगी, इसमें सन्देह नहीं।

पहले हमारे देश में विधवाओं की संख्या अधिक थी; परन्तु आजकल विधुरों (अविवाहितों) की संख्या धीरे-धीरे बढ़ती दिखाई देती है। सूतिका रोग से प्रतिवर्ष हज़ारों स्त्रियों के प्राण चले जाते हैं। वृद्धाओं की अपेक्षा प्रायः युवा स्त्रियों की मृत्यु-संख्या ही अधिक रहती है।

इस भयंकर स्थिति को दूर करने के लिए तुम सदा ही अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रक्खो। लज्जा के कारण अथवा तुच्छ समझकर किसी साधारण बीमारी की बात को छिपा रखना भारी दोष है। यदि तुम यह समझती हो कि ऐसा करके तुम घर का ज़्यादा भला कर सकोगी और बीमारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को प्रकट करने पर घर के काम धन्धे में बाधा पड़ेगी तो यह तुम्हारी बड़ी भूल है। कोई कोई स्त्रियाँ गृहस्थी के काम-काज में हर्ज होने के भय से छोटी-छोटी बीमारियों की बात को छिपाकर कुछ दिन बाद भयानक रोगों में फँस जाती हैं और फिर उनका रोग-शय्या से उठना दुर्लभ हो जाता है और उनकी उपर्युक्त भूल एक दिन घर का नाश कर डालती है। एक दिन एक ज़रूरी काम-धन्धा करने के लिए साधारण बीमारी को छिपाकर असाध्य रोग में फँस जाना और सदा के लिए उस काम-धन्धे को छोड़ बैठना कहाँ की बुद्धिमानी है ? इसलिए सदा ही अपने स्वास्थ्य पर ध्यान रखना उचित है।

केवल अपने ही भले के लिए नहीं, किन्तु अपने पति, अपनी सन्तान और अपने अन्यान्य कुटुम्बियों के हित के लिए तुम्हें अपने स्वास्थ्य पर ध्यान रखने की आवश्यकता है। जिस पति-पुत्र के लिए तुम अपना सर्वस्व त्याग सकती हो, उन पति-पुत्र के लिए क्या तुम्हें अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान रखना उचित नहीं है ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सदा संयम से रहो, ऐसी वैसी चीज़ें कभी न खाओ, सर्दी-गर्मी का सदा ख्याल रक्खो, ऐसा कुपथ्य भोजन न करो जो हानि पहुँचावे। सदा सफाई से रहो, रसोई बनाने के बाद शरीर को अच्छी तरह धो डालो, मैले कपड़े कभी न पहनो। लज्जा के कारण कभी कुपथ्य या लंघन न करो, किसी के आदर में आकर इच्छा से अधिक न खा जाओ। शरीर ज्योंही कुछ अस्वस्थ हो, किसी रोग के लक्षण जान पड़ें, तुरन्त ही निःसंकोच अपने स्वामी अथवा सास-ससुर से कह दो। आलस्य के वशीभूत होकर बेकार न बैठो, जहाँतक हो सके, मेहनत के साथ घर के काम-धन्धे में लगी रहो। हर काम नियत समय पर करो, सुस्ती के कारण कभी बेवक्त स्नान न करो और न बेवक्त खाना खाओ। सर्दी, गर्मी और धूप आदि से शरीर की रक्षा करने के लिए उपयुक्त कपड़े पहनो तथा अन्यान्य यथोचित उपायों का अवलम्बन करो। घर को झाड़बुहार कर उजला रक्खो। कूड़ा-करकट अलग करती रहो, जिससे साफ हवा घर के भीतर हर वक्त अच्छी तरह आ जा सके।

६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हास-परिहास और व्यर्थ वार्त्तालाप

हास-परिहास और व्यर्थ वार्त्तालाप में एक भेद है। व्यर्थ वार्त्तालाप न करके भी हास-परिहास किया जा सकता है। यदि देश, काल और पात्र को अच्छी तरह समझ-बूझकर परिहास किया जाय तो अनुचित नहीं है। अर्थात् उचित स्थान में, उचित समय पर उसी व्यक्ति के साथ परिहास किया जाय, जिसके साथ करना उचित हो। हमारे देश की स्त्रियों में अपने बहनोई, देवर तथा ननद आदि से परिहास करने का चलन है। यदि यह परिहास पवित्र और एक दूसरे को इससे कोई हानि न पहुँचे तो इसे निन्दनीय नहीं कहा जा सकता।

बनवास के अन्त में अयोध्या को लौटकर जब श्रीरामचन्द्र और सीतादेवी ने राज्य का भार ग्रहण किया तो एक दिन लक्ष्मण एक चित्र लाए और उसे उनके सामने फैलाकर देखने लगे। चित्र जनकपुर का था और उसमें चारों भाइयों के विवाह का दृश्य दिखलाया गया था। लक्ष्मण अंगुली से बता-बता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर सीतादेवी को उस चित्र के प्रत्येक स्त्री पुरुष का परिचय दे रहे थे—"देखो यह रघुनाथ हैं, यह आप बैठी हुई हैं, यह देखो आपके पार्श्व में पूज्या जनक-महिषी बैठी हैं, इस जगह यह देखो, आर्या माण्डवी हैं, उनके पीछे देखो, भौजाई श्रुतकीर्त्ति लज्जा से शिर झुकाये खड़ी हैं।" लक्ष्मण इसी प्रकार प्रत्येक का परिचय दे रहे थे; परन्तु एक चित्र किसका है, उसकी व्याख्या उन्होंने नहीं की। जानकी जानती थीं कि वह चित्र किसका है। वह चित्र स्वयम् चित्र-प्रदर्शक की पत्नी उर्मिला का था। लज्जावश लक्ष्मण उसे छोड़ गये। सीतादेवी समझ गईं। उन्होंने मुस्कुराते हुए बड़े गम्भीर भाव से पूछा—"वत्स लक्ष्मण, यह कौन है ? इन्हें तुमने नहीं बताया।" लक्ष्मण ने बड़े भाई के सामने संकुचित हो भौजाई को केवल बनावटी रोब से तनक टेढ़ी नजर करके उत्तर दिया। सीतादेवी का यह परिहास जितना ही पवित्र था, उतना ही मधुर। ऐसे परिहास से सुख होता है, दुःख नहीं। इसे हम बुरा नहीं कह सकते। हमारा कहना यह है कि परिहास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को वाचालता का रूप न दे डालो। वाचालता स्त्रियों के लिए बहुत बुरी है। अनावश्यक व्यर्थ ही बहुत सी बातें करने को वाचालता कहते हैं। किसी का हँसी-मज़ाक करते हुए यदि तुमने हद के बाहर कदम रक्खा तो वाचाल कही जाओगी। हँसी-मजाक या हास-परिहास करने के समय सीमा का उल्लंघन न करो। इसके सिवाय अन्यान्य बातें करने के समय भी इस बात पर ध्यान रक्खो कि तुम्हारी उन बातों की ज़रूरत भी है या नहीं, उनके द्वारा तुम्हारा या किसी दूसरे का कुछ हित-साधन होगा या नहीं। यदि ऐसा न हो तो उन व्यर्थ बातों में समय न गँवाओ।

कुछ लोग यह कह सकते हैं कि यदि सभी अनावश्यक बातें वाचालता में गिनी जायँगी तो आमोद-प्रमोद और खेल-कूद सभी को छोड़ना पड़ेगा। परन्तु बात ऐसी नहीं है। शारीरिक और मानसिक प्रसन्नता के लिए आमोद-प्रमोद और खेल-कूद भी आवश्यक है। इसलिए उनके सम्बन्ध की बातें अनावश्यक नहीं कही जा सकतीं। हाँ, उनकी भी सीमा होनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चाहिये। क्योंकि हर वक्त आमोद-प्रमोद की दुहाई देकर व्यर्थ की बक-झक ठीक नहीं। आवश्यक आमोद-प्रमोद के लिए जितनी बातों की ज़रूरत हो, उतनी ही करनी चाहिये, उनसे अधिक नहीं। अधिक होते ही वे वाचालता में गिनी जायँगी।

असहनशीलता

असहनशीलता अच्छी नहीं, यह हम पहले भी कह चुके हैं। स्त्री और पुरुष दोनों ही के लिए यह दोष हानिकारक है, तथापि स्त्रियों के लिए बहुत ही भयानक है।

असहनशीलता से स्त्रियों को बड़ी से बड़ी हानि पहुँच सकती है। जो स्त्रियाँ जितनी ही अधिक असहनशील हैं, वे उतनी ही मन्दभागिनी हैं।

हर प्रकार के दुःखों और विपत्तियों को सह-कर गृहस्थी को सुखमय बनाना स्त्री-जीवन का कर्त्तव्य है। ऐसी दशा में एक सहनशीलता न होने से स्त्रियों के और कितने ही गुण व्यर्थ हैं।

सीतादेवी ने गृहस्थी में आकर कौन से दुःख नहीं सहे। उनका सारा जीवन ही दुःख में बीत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गया। परन्तु फिर भी उन्होंने सहनशीलता की सीमा का उल्लङ्घन नहीं किया। आजीवन दुःख झेलने के बाद अन्त में जब सुख का समय आया, उस समय भी जब लक्ष्मण उन्हें बन में छोड़ आये, तब भी उन्होंने धैर्य्य नहीं छोड़ा, क्रुद्ध होकर किसी से कड़ी बात नहीं कही, अद्भुत सहनशीलता के साथ धैर्य्य-पूर्वक उन्होंने सब कुछ सहन किया। उन्हीं पूज्या सीतादेवी को तुम अपना आदर्श बनाओ।

सावित्री ने भी कहाँ तक सहनशीलता दिखाई थी, इस पर विचार करो। एक वर्ष बाद स्वामी की मृत्यु हो जायगी, यह जानकर भी उन्होंने उनके साथ विवाह किया। विवाह के बाद एक वर्ष तक इस दुःख को अपने मन में रखकर वे धैर्य्य धारण किये रहीं। सास-ससुर और पति को क्लेश होगा, इस भय से उन्होंने यह बात किसी पर प्रकट नहीं होने दी। अपनी रहन-सहन ऐसी रक्खी कि उनके बाहरी भावों को देखकर किसी को उनके आन्तरिक दुःख का पता नहीं लगा। वर्ष के अन्तिम दिन तक वे इसी प्रकार धैर्य्य बाँधे रहीं, पति की मृत्यु के क्षणभर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहले तक, बल्कि बाद में भी वे अधीर नहीं हुईं, धीर-भाव से अपने कर्त्तव्यों का पालन किया। इस दृढ़ता और सहनशीलता का फल यह हुआ कि उन्होंने यम को परास्त करके अपने स्वामी को पुनर्जीवित किया।

इसी प्रकार कुन्ती दमयन्ती, द्रौपदी, शैव्या आदि भारतीय महिलाएँ सहनशीलता के द्वारा ही कितने ही अद्भुत कार्य करके यशस्विनी और प्रातस्मरणीया बन गईं। अतएव सहनशीलता को त्याग देने से स्त्री जाति का कल्याण नहीं हो सकता।

दुःख पड़े, विपत्ति आवे, सबको प्रसन्नता-पूर्वक सह लो। धैर्य्य न छोड़ो, शोक से व्याकुल न हो, सुध-बुध खोकर अपना कर्त्तव्य न भूल जाओ। सास-ससुर, स्वामी अथवा अन्यान्य कुटुम्बी तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार न करें तो भी दुःख न मानो। समझ लो कि तुम सहने ही के लिए आई हो, सब कुछ सहते रहना ही तुम्हारा कर्त्तव्य है। यदि तुम इस कर्त्तव्य का पालन करोगी तो ईश्वर एक दिन तुम्हारा दुःख अवश्य ही दूर करेंगे। परन्तु यदि धैर्य्य खोकर अपने कर्त्तव्य को भुला दोगी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तो ईश्वर की अप्रसन्नता से तुम्हारी विपत्ति और भी बढ़ जायगी।

अपव्यय

गृहस्थी की रक्षा के लिए स्त्रियों को सदा ही मितव्ययता को ध्यान में रखना चाहिये। केवल रुपया-पैसा ही नहीं किन्तु घर की सब चीजें, जहाँ तक हो सके, किफायत के साथ काम में लानी चाहिये।

पुरुष जो कुछ पैदा करते हैं उसे लाकर स्त्रियों के पास रख देते हैं। व्यय का भार स्त्रियों के जिम्मे रहता है। यह उन्हीं का काम है। ऐसी दशा में यदि वे मितव्ययी न हों तो पुरुष कितना ही धन उपार्जन करके भी घर नहीं चला सकते। इसलिए स्त्रियों का उनके पैदा किये धन को ख़ूब सोच समझकर खर्च करना चाहिये। जिसकी जैसी आय है, उसे उसीके अनुसार व्यय करना उचित है। व्यर्थ एक पैसा भी बरबाद न करना चाहिये।

हर महीने में जितना धन मिले, उसका एक तिहाई अथवा एक चौथाई अंश संचित रखना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चाहिये। अचानक कोई विपत्ति पड़ने पर उस धन से बहुत काम निकल सकता है। शेष धन को खर्च के लिए रख लेना चाहिये। पहले ही से यह पता लगा लेना चाहिये कि इस महीने में इतना खर्च करना है, और ऐसा निश्चय रखते हुए उसे करना चाहिये कि इसमें से भी हमें कुछ बचाना है। क्योंकि ऐसा न करने पर कभी-कभी खर्च के लिए रक्खे हुए रुपये से पूरा नहीं पड़ता। कभी-कभी कुछ अनिश्चित कारणों से खर्च अधिक हो जाता है। ऐसी दशा में यदि पहिले का बचा हुआ कुछ रुपया हाथ में रहेगा तो वह इस अधिक खर्च के अवसर पर काम आयेगा। इस प्रकार का प्रवन्ध न करके बिना किसी हद्-हिसाब के खर्च करने से चाहे कितना ही धन क्यों न आवे, कभी पूरा नहीं पड़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पति के प्रति स्त्री का कर्त्तव्य

हिन्दूस्त्रियों को यह बताने की जरूरत नहीं कि पति-पत्नी का सम्बन्ध कितना महत्त्वपूर्ण और गुरुतर है। हिन्दूस्त्री की हड्डी-हड्डी में, नस-नस में पति-भक्ति का बीज वर्त्तमान रहता है। परन्तु शिक्षा के अभाव से प्रायः वह बीज पूर्णरूप से अङ्कुरित नहीं हो पाता। इसीलिए पति-पत्नी के सम्बन्ध की गुरुता को साधारण स्त्रियाँ नहीं समझ सकतीं। वा० रामायण में लिखा है—

"न पिता नात्मजो नात्मा न माता न सखी जनः।
इह प्रेत्य च नारीनां पतिरेका गतिः सदा॥

अर्थात् पिता, पुत्र, अपनी आत्मा, माता और सखी इत्यादि होने पर भी स्त्री के लिए एकमात्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पति ही गति है। सच्ची हिन्दू स्त्रियों के निकट पति के समान प्यारी दूसरी वस्तु नहीं। पति ही उनकी आत्मा है, पति ही उनका मन है; पति ही उनका शरीर है, पति ही उनका सर्वस्व है। केवल इतना ही नहीं, पति का स्थान उनके हृदय में और भी अधिक उच्च है—पति ही उनका एकमात्र गुरु और देवता है।

"पतिर्हि देवता नार्याः पतिर्बन्धुः पतिर्गुरुः।

वा० रामायण।

हिन्दूशास्त्र में लिखा है कि यदि कोई स्त्री तैंतीस कोटि देवताओं में किसी को भी न मानकर मन, वचन, कर्म से पति की सेवा करे तो उसकी मुक्ति होती है। इसके विरुद्ध पति का निरादर करके समस्त देवताओं की सेवा करने पर भी स्त्री का उद्धार नहीं होता है। इसी से तुम समझ सकोगी कि स्त्री के निकट पति का कितना महत्त्व है।

हिन्दूशास्त्र में यह भी लिखा है कि स्त्रियों के लिये न कोई व्रत है, न कोई यज्ञ है। पति-सेवा ही उनका एकमात्र व्रत है। जो स्त्री इस व्रत को त्याग कर स्वामी के रहते हुए अन्यान्य व्रत और यज्ञ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करती है, वह नरकगामिनी होती है।

जब पति-पत्नी का ऐसा गुरुतर सम्बन्ध है, तो पति-पत्नी का परस्पर एक दूसरे के साथ कैसा आचरण-व्यवहार रखना चाहिये, वह विशेष विचारणीय है।

हिन्दू-समाज के अटूट विवाह-बन्धन के अवसर पर विविध आनन्द—उत्सव के साथ पिता जब अपनी कन्या का हाथ पति के हाथ में देता है तो उस सरला बालिका के हृदय में एक प्रकार की बिजली सी दौड़ जाती है। उस समय का वह गम्भीर दृश्य, पुरोहित के द्वारा कहे हुए वे पवित्र मन्त्र और शुद्ध उपदेश एक साथ मिलकर उस समय उसे विह्वल कर देते हैं। संस्कृत भाषा को अच्छी तरह न समझ सकने के कारण बालिकाएँ उस समय उन पवित्र मन्त्रों के भावों को भलीभाँति नहीं समझ सकतीं। यदि समझ सकें तो उस दिन सुसज्जित मण्डप के नीचे उस अपरिचित पुरुष के साथ उनका जो गुरुतर सम्बन्ध स्थापित होता है, उसका नाश इस लोक में तो क्या, परलोक में भी न हो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"यदिदं हृदयं मम तदस्तु हृदयं तव।"

पति-पत्नी उस दिन इन पवित्र मन्त्रों का उच्चारण करके परस्पर एक दूसरे के हृदय को सदा के लिए वरण करते हैं। परन्तु हा! कितनी स्त्रियाँ इन बातों के सार को हृदय में रखकर स्वामी की सेवा के लिए अग्रसर होती हैं?

हिन्दू-समाज में प्रायः देखा जाता है कि विवाह के कुछ ही दिनों बाद कन्याएँ पिता के घर जाने के लिए व्याकुल होने लगती हैं, इसके लिए रोती पीटती भी हैं। यह अत्यन्त लज्जा की बात है। स्त्रियों के जीवन का प्रधान धर्म पति-सेवा तथा पति से सम्बन्ध रखनेवाले अन्यान्य कुटुम्बियों का आदर-सत्कार करना है। जो अपने इस कर्त्तव्य को अच्छी तरह निभा सकें, वे धन्य हैं। विवाह हो जाने के बाद तुरन्त ही उन्हें अपने कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए तैयार हो जाना चाहिये और सुखभोग के लिए विवाह के बाद तुरन्त ही पिता के घर न जाकर उन्हें अपने जीवन के सर्वश्रेष्ठ कर्त्तव्य पति-सेवा में तनमन अर्पण करना चाहिये। जो स्त्री ऐसा कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सकती है, देवता उससे सन्तुष्ट होते हैं। जो मूर्खता के कारण अथवा अपने सुख के लिए इसके विरुद्ध आचरण करती हैं वह अपना लोक और परलोक दोनों बिगाड़ती हैं। विवाह के बाद ही स्त्री को पिता के घर जाने के लिए अधिक उत्सुक देखकर और अपने प्रति उदासीन देखकर प्रायः पति को असन्तोष होता है, और मन ही मन वह अपनी स्त्री को उद्दण्ड और प्रेमहीन समझकर निरादर की दृष्टि से देखने लगता है। यदि पहले ही से पति के हृदय में स्त्री के प्रति ऐसा भाव जम गया तो भविष्य में कितने ही उपाय करने पर भी उस भाव को दूर नहीं किया जा सकता। दोनों के हृदय में एक दूसरे के लिए प्रेम भले ही उत्पन्न हो जाय, परस्पर एक दूसरे के साथ सद्व्यवहार भले ही करने लगें; परन्तु फिर भी मन में एक प्रकार का सन्देह बना ही रहता है। इसलिए विवाह के बाद माइके का मोह कम करके शक्तिभर स्वामी की सेवा में मन लगाने की चेष्टा करो। अवसर पर सीता और सावित्री के उदाहरण को अपने सामने रखना उचित है। विवाह के बाद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्त्री किस प्रकार अपने पति की अर्द्धाङ्गिनी बनती है और सब कुछ छोड़कर एकाग्रभाव से पति के घर की हो रहती है। इस विषय में तुम इन आदर्श आर्य देवियों के चरित्र से बहुत कुछ शिक्षा ले सकती हो। विवाह के बाद सीतादेवी बहुत समय तक अपने पति के घर रहीं, और फिर कभी लौटकर जनकपुर नहीं गईं। सावित्री का हाल भी ऐसा ही है। राजा की कन्या होकर भी उन्होंने एक दरिद्र पति को वरण किया और चिरकाल तक वे उनके साथ ससुराल में रहीं। इन उदाहरणों को सामने रखकर आजकल की बालिकाएँ यदि विवाह के बाद माइके के मोह को भुला देने की चेष्टा करें तो फिर घर-घर सीता और सावित्री जन्म ले सकती हैं।

सावित्री ने ससुराल में आते ही और जो एक काम किया था, उस पर आजकल की पढ़ी-लिखी स्त्रियों को विशेष ध्यान देना उचित है। सावित्री ने ससुर के घर आते ही पिता के दिये हुए सारे आभूषण उतारकर रख दिये। सावित्री के पिता राजा थे, उन्होंने बड़े प्रेमपूर्वक कन्या को वे सब आभूषण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिये थे। सास-ससुर भी बहू को वह सब गहने पहने देखकर बड़े प्रसन्न हुए, परन्तु सावित्री ने उन गहनों को अपने शरीर पर न रक्खा। उन्होंने सोचा कि जिसका पति वनवासी है, सन्यासी है, उसे इन राज-आभूषणों की क्या आवश्यकता? हा, आज कल इस बात के महत्त्व को कितनी स्त्रियाँ समझती हैं?

प्रायः देखा जाता है कि आजकल की स्त्रियाँ अपने आराम के लिए पति की नाक में दम किये रहती हैं। पति की आर्थिक दशा यदि अच्छी न हो और माइकेवाले धनवान हों तो प्रायः उस दरिद्र पति के घर में उनका मन नहीं लगता। पहले-पहल कुछ दिनों तक वे वर्ष का अधिकांश भाग माइके ही में बिताने के लिए व्याकुल रहती हैं। बाद में यदि उन्हें स्थायीरूप से ससुराल में रहने के लिए विवश होना पड़ा तो उनके रातदिन के तानों से बिचारे पति के प्राण संकट में पड़े रहते हैं। पिता के धन पर घमण्ड करनेवाली उस मूर्खा स्त्री की माँगों को पूरा करते-करते पति का नाकों दम आ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाता है। वह बिचारा रातदिन जी-जान होमकर, चोटी से एँड़ी तक पसीना बहाकर, परिवार का पालन-पोषण करने के लिए जो चार पैसे पैदा करके लाता है, उन पैसों को वह स्त्री मुहल्ले की स्त्रियों पर अपना रोब गाँठने और प्रभाव जमाने के लिए अपने ही शौकों को पूरा करने में खर्च कर डालती है। दरिद्र स्वामी नंगे, भूखे रहकर जो धन इकट्ठा करता है, वह उसे तेल-फुलेल, इत्र-पान और बढ़िया-बढ़िया कपड़ों में बरबाद करके बैठ रहती है। भला, इससे अधिक स्त्री-जाति का अधःपतन और क्या हो सकता है ?

तुम इन बुरी आदतों को अपने पास न फटकने दो। यदि कुलदेवी बनना चाहती हो, यदि आदर्श स्त्री बनने की इच्छा रखती हो तो कभी स्वार्थ के लिए पति से प्रेम न करो। यह माना कि सर्व-साधारण मनुष्यों के लिए निस्वार्थ प्रेम अत्यन्त कठिन है ? सर्वसाधारण ही क्यों, हज़ार में शायद दो-चार भी ऐसे नहीं निकलेंगे जो निःस्वार्थ प्रेम रख सकें। ऐसी दशा में यदि स्वार्थ ही के लिए सही, तो तुम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक महान् स्वार्थ के लिए अपने स्वाभाविक प्रेम को पति के चरणों में अर्पण करो। अर्थात् पति के प्रेम से जो अनुपम सुख प्राप्त होता है, पति का हित-साधन करने से जो अपूर्व शान्ति मिलती है, केवल उसी सुख और उसी शान्ति को प्राप्त करने के लिए अपना प्रेम, अपना सर्वस्व पति के चरणों पर निछावर करो। जीते जी कभी ऐसा व्यवहार न करो, जिससे पति को कष्ट हो, अथवा उनका कुछ अहित हो। पति यदि अपनी इच्छा से तुम्हारे साथ कोई बुरा बर्त्ताव करें तो भी तुम यह सोच उसे सह लो कि वह तुम्हारे स्वामी हैं, सर्वस्व हैं, तुम उनकी स्वामिनी नहीं हो। वह तुम्हारे साथ इच्छा-नुसार व्यवहार करें तो करें, परन्तु तुम्हारा कर्त्तव्य यही है कि तुम चुपचाप उनकी सेवा-टहल करती रहो। हजार दोषों के रहते हुए भी तुम उनके प्रति कभी असंतोष या अप्रसन्नता प्रकट न करो।

श्रीरामचन्द्र ने पतिप्राणा सीता को विना ही अपराध के बनवास दिया था। भयानक बन में एका-किनी रहकर उन्हें क्या क्या विपत्तियाँ झेलनी पड़ी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होंगी, परन्तु फिर भी इसके लिये उन्होंने श्रीरामचन्द्र के प्रति लेशमात्र भी असंतोष प्रकट नहीं किया। आँसू बहा-बहाकर उन्होंने केवल अपने भाग्य ही को धिक्कारा और कहा :—

पतिर्हि देवता नार्याः पतिर्बन्धुः पतिर्गुरुः।
प्राणैरपि प्रियं तस्माद्भर्त्तुः कार्यं विशेषतः॥

पति ही स्त्रियों का देवता है, पति ही स्त्रियों का बन्धु है, पति ही स्त्रियों का गुरु है, पति का कार्य मेरे लिए प्राणों से अधिक प्रिय है।

इसी आदर्श को सदा ही अपने मानस-नेत्रों के सामने रक्खे रहो।

पति-सेवा ही स्त्रियों का प्रधान धर्म है, यह कह चुके। अब यह विचारणीय है कि भलीभाँति सुव्यवस्थितरूप से किस प्रकार पति-सेवा की जा सकती है।

केवल रसोईं तैयार करके पति को भोजन करा देना अथवा घर का अन्यान्य काम-धन्धा करके पति के काम में सहायता करके ही पति-सेवा का अन्त नहीं हो जाता। बल्कि सदा ही इस बात पर ध्यान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रखना चाहिये कि कौन काम करने से पति को सन्तोष होता है और किस प्रकार के व्यवहार से वह प्रसन्न होते हैं।

अपनी बुद्धि से स्त्री को इन दोनों बातों का पता लगाते रहना चाहिये। क्योंकि पति प्रायः पत्नी के सामने अपनी रुचि की सब बातें साफ़-साफ़ नहीं कहते और कभी-कभी अपने मन का कोई भाव प्रकट करने में केवल यह सोचकर रह जाते हैं कि उससे स्त्री को कष्ट होगा। ऐसी दशा में अपनी बुद्धि से ही उनके मन की बात जान लेनी चाहिये।

स्त्री को उचित है कि वह अपने पति की स्थिति से ऊँची स्थिति में रहने की इच्छा कभी न करे। वह सदा पति के सुख में सुखी और पति के दुःख में दुःखी रहे। पति की इच्छाओं, पति के विचारों, पति के उद्देश्यों और पति के अन्यान्य हार्दिक भावों के साथ स्त्री को अपनी इच्छाएँ, विचार और उद्देश्य एक कर देने की चेष्टा करनी चाहिये। कारण यह कि पति और पत्नी दोनों एक आत्मा हैं। यदि एक के भाव दूसरे के भावों से भिन्न रहें तो दोनों का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हृदय एक नहीं हो सकता। पति जिसे प्यार करे, स्त्री भी उसे प्यार करने की चेष्टा करे। पति जिससे घृणा करे, स्त्री भी उससे घृणा करने की इच्छा रक्खे। पति के मित्र को अपना मित्र समझे और पति के शत्रु को अपना शत्रु माने।

यह बड़े दुःख की बात है कि आजकल हमारे समाज में कहीं-कहीं दो-एक स्त्रियाँ ऐसी पाई जाती हैं जो अपने पति के शत्रु को अपना शुभचिंतक समझने लगती हैं। कितने दुर्भाग्य का विषय है! अपनी स्त्री को अपने शत्रु की पक्षपातिनी देखकर पति के हृदय को कितना कष्ट होता होगा? यदि स्त्री यह अच्छी तरह समझ ले कि पति का शत्रु बिलकुल निर्दोष है और मेरे पति के दोष से ही उन दोनों में शत्रुता उत्पन्न हुई है, तो उस दशा में भी उसे शत्रु का पक्ष न लेकर अत्यन्त नम्रतापूर्वक एकान्त में अपने पति को उनकी भूल बतानी चाहिये और विनीत वचनों में समझा बुझाकर उसे दूर करने का उपाय करना चाहिये। यदि कभी अपने माता पिता भी पति से शत्रुता ठानने के लिए तैयार हों तो भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्त्री को सदा सावधान रहकर इसी प्रकार के उपायों का अवलम्बन करना उचित है।

यहाँ पर एक बात कह देना आवश्यक है। प्रायः देखा जाता है, कितनी ही स्त्रियाँ अपने धनवान पति के घर को लूट खसोटकर दरिद्र माता की सहायता किया करती हैं। दरिद्र की सहायता करो—यह अच्छा है, बुरा नहीं। परन्तु पति से छिपाकर ऐसा कदापि न करना। यह पति को धोखा देना है, और उसे सब से ज्यादा सगे तथा सबसे बड़े शुभचिंतक के पद से नीचे गिरा देना है। जो तुम्हारे सर्वस्व हैं, तुम्हारी आत्मा हैं, जिनका तुम्हारा हृदय एक है; उनसे तुम कोई बात कैसे छिपा सकती हो? जब किसी प्रकार उन्हें इस बात का पता लग जायगा तो वे निःसन्देह उसी क्षण सदा के लिये तुम्हें विश्वास के आसन से नीचे गिरा दूँगे और तुम्हारे कामों पर कड़ी देखरेख रखने लगेंगे।

स्त्री को चाहिये कि अपने पति के बनवाये हुए गहने-कपड़ों में ही संतुष्ट रहे। उनसे अच्छे पहनने के लिए जी न ललचावे। पिता-माता के दिये हुये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कीमती गहनों की अपेक्षा उन्हें अपने पति के दिये हुए साधारण गहनों में ही अधिक गौरव समझना चाहिये।

कुछ स्त्रियाँ ऐसी हैं, जो गरीब घर की बहू होने पर भी अच्छे-अच्छे गहने और कीमती कपड़े पनने के लिए ललचाती रहती हैं। पति बिचारा चाहे एक फटे-टूटे जूते और पुराने-धुराने कुरते से ज्यों-त्यों अपने दिन काटता रहे, परन्तु उन्हें इसकी कुछ परवा नहीं। वे हर वक्त अच्छे-अच्छे गहने-कपड़ों से सुसज्जित रहने में ही अपना गौरव समझती हैं। यदि उनके सामने कोई उनके पति को देखे तो उसे उनका पति सर्वस्व न समझ कर साधारण नौकर ही समझे। ऐसी स्त्रियों का मुँह न देखना चाहिये।

यदि पति की अवस्था अच्छी है, बिना किसी कष्ट के तुम्हें कीमती गहने-कपड़े पहना सकते हैं तो पहनो, उस दशा में हमें कोई आपत्ति नहीं। स्त्रियों के लिए इससे अधिक सौभाग्य की बात और क्या हो सकती है? शास्त्र में लिखा है, "जिस स्त्री पर पति का प्रेम है, संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो उसके पास न हो।" यह बिलकुल सत्य है उस प्रेम के सामने अन्य सांसारिक पदार्थ किस गिनती में हैं? अतएव यदि तुम्हारे पति दरिद्र हैं तो तुम उन्हें दरिद्रता की दशा में रखकर अपने ठाटबाट बनाने के लिए लालायित न होना। पति तुम्हारे देवता हैं, वे तुम्हारे सर्वस्व हैं। उनकी अपेक्षा ऊँची स्थिति में रहने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं।

कितनी ही स्त्रियाँ यहाँ पर यह प्रश्न कर सकती हैं कि दुर्भाग्य से यदि उनके पति कुमार्गगामी हों, उन पर अनुचित अत्याचार करें और घर का नाश करने पर उतारू रहें तो ऐसे पति पर वे कैसे श्रद्धा रक्खें और कैसे उनका आदर करें? यदि वह शराबी बनकर अपनी स्त्री का जी जलावें, अन्यान्य कुकर्म कर के निन्दा के पात्र बनें, धर्म-अधर्म का विचार न करें तो ऐसे पति पर भक्ति और श्रद्धा रखना कैसे सम्भव है? यदि यूरोप की स्त्रियाँ यह प्रश्न करतीं तो उनके नेता अवश्य ही उन्हें यह उत्तर देते—"कभी नहीं। ऐसे पति का मुँह देखना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनुचित है। उसे फौरन छोड़ (Divorce) दो।" परन्तु हमारी शिक्षा, हमारे उपदेश और हमारे आदर्श दूसरी तरह के हैं और सब से अच्छे हैं। हमारे आदर्श मानुषी नहीं, दैवी हैं। इसलिए हम यह उत्तर देंगे—"पति अच्छा हो चाहे बुरा हो, मूर्ख हो या विद्वान् हो, सुन्दर हो या कुरूप हो, वह स्त्री का सर्वस्व है। स्त्री इस लोक और परलोक में कभी उस पति से न्यारे होने की इच्छा न करे। प्राणपण से सदा उसे सुखी रखने की चेष्टा करे।" यदि पति कुमार्गगामी है तो स्त्री को इस पर विचार करना चाहिये कि वह किस प्रकार उसे सुमार्ग पर ला सकती है। अपनी बुद्धिमत्ता से पति को अच्छे मार्ग पर लाने की कोशिश करनी चाहिये। यदि तुम में दृढ़ता है और पति में तुम्हारी पूर्णश्रद्धा है तो तुम पति के दोष दूर करने में अवश्य ही सफलता प्राप्त करोगी। इतिहास में इसके कितने ही प्रमाण पाये जाते हैं। एक न एक दिन पति तुम्हारे गुणों पर अवश्य ही ध्यान देंगे और तुम्हारे उचित उपदेश को स्वीकार करेंगे। सहन करो, प्रतीक्षा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करो, लगातार चेष्टा करती रहो, एक दिन तुम्हारे पति सुमार्गपर लौटेंगे और फिर लौटेंगे; तुम्हारे ऊपर प्रेम करेंगे और फिर करेंगे। यदि ऐसा न हो तो समझ लेना कि तुम्हारी चेष्टा में कुछ कमी रह गई। पूर्ण उद्योग के फल को कोई रोक नहीं सकता। कितनी ही स्त्रियाँ हैं जो अपने पति के मूर्ख अथवा कुरूप होने पर मन ही मन असन्तुष्ट रहा करती हैं। मनुष्य जाति में इस प्रकार का असन्तोष स्वाभाविक ही है, परन्तु फिर भी विचारकर देखो, हिन्दू-स्त्रियों के लिए यह बड़ी भारी भूल है। हिन्दू-स्त्रियाँ पति के साथ अपने सम्बन्ध को केवल इसी लोक का सम्बन्ध नहीं समझतीं। उनका निश्चय है कि पति के साथ पत्नी का सम्बन्ध अनन्त काल के लिए है। इस संसार में हम लोग सिर्फ कुछ दिनों के लिए अपने-अपने मानसिक बल का परिचय देने आते हैं। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर अन्त में, परलोक में हमारा अनन्त मिलन होगा और हम अनन्त सुख प्राप्त करेंगे। अतएव स्त्री को सदा यह ध्यान में रखना चाहिये कि इस जीवन के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाद हमें अनन्तकाल तक अपने पति के साथ सुख और ऐश्वर्य का भोग प्राप्त करना है। फिर इस दो दिन के जीवन में सौन्दर्य का सुख और ऐश्वर्य न भी होने से क्या हानि है? स्त्री अपने उद्योग से जब अपने पति को कुमार्ग से सुमार्ग पर ला सकेगी और दोनों धर्म्माचरण के द्वारा परलोक की उन्नति का मार्ग उज्वल कर सकेंगे तो फिर चिन्ता काहे की? पति को कुमार्ग से सुमार्ग पर लाना, बुरे से भला बनाना स्त्री के हाथ में है। अतएव पति के मूर्ख या कुरूप होने पर भी स्त्रियों को असन्तुष्ट होना उचित नहीं। समझ लो कि ईश्वर इस दशा में तुम्हारी परीक्षा ले रहे हैं। अच्छे को तो सभी प्यार करते हैं; पर तुम यदि उस मूर्ख और कुरूप व्यक्ति को प्यार कर के अपना बना सकती हो, उसके चरणों में अपना सर्वस्व अर्पण कर अपने को धन्य समझ सकती हो तो इसी में तुम्हारी बड़ाई है और इसी से तुम्हारा दुःख दूर होगा। कुछ ही दिन के बाद तुम उसी मूर्ख पति को अनन्त विद्या, अनन्त सुख और अनन्त ऐश्वर्य के साथ अनन्त काल के लिए प्राप्त करोगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुरूप या मूर्ख होने पर भी दूसरे रूपवान, गुणवान और बुद्धिमान व्यक्ति की अपेक्षा पति हज़ार-गुना पूजनीय है। स्वप्न में भी किसी दूसरे को पति से श्रेष्ठ न समझना। तुम्हारे सर्वस्व वही हैं। धार्मिक हों अथवा अधार्मिक हों, सुन्दर हों अथवा कुरूप हों, तुम्हारे लिए सब से श्रेष्ठ हैं। भूलकर भी यदि तुमने दूसरे को अपने मन में स्थान दिया तो तुम्हारे सर्वनाश में देरी न लगेगी। हिन्दू-शास्त्र के अनुसार पतिव्रता स्त्री को क्षणमात्र के लिए भी पर पुरुष को अपने मन में स्थान देने का अधिकार नहीं है।

हिन्दू स्त्री के लिए पतिव्रत एक अमूल्य रत्न है, प्राणों से अधिक प्रिय वस्तु है। केवल पर पुरुष की इच्छा न करना ही पतिव्रत नहीं है, किन्तु पतिव्रता स्त्री को उचित है कि पति की इच्छा और उसकी भलाई के विरुद्ध वह कभी कोई काम न करे। सदा ही इस बात पर उसे ध्यान रखना चाहिये कि पति उसकी कैसी रहन-सहन से प्रसन्न होते हैं।

कितनी ही स्त्रियाँ छोटी-छोटी बातों को लेकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पति का चित्त दुखाया करती हैं। वे इस पर कुछ विचार नहीं करतीं कि किन कामों और किन व्यवहारों से पति को सन्तोष होगा ; यदि विचार भी करती हैं तो उसके अनुसार कार्य नहीं करतीं। कितनी ही बातों के सम्बन्ध में यह सोचकर कि ऐसी छोटी-मोटी बातों से क्या हानि हो सकती है,—वे प्रायः पति की इच्छा के विरुद्ध काम किया करती हैं। यह अत्यन्त अनुचित है। स्वामी की इच्छा के विरुद्ध, यथाशक्ति किसी छोटे-मोटे काम में भी हाथ न डालना चाहिये। प्रायः इन्हीं छोटे-मोटे कामों से आपस में मनोमालिन्य पैदा हो जाता है। इसलिए कोई भी काम करने के पहले यह सोच देखो कि तुम्हारे इस काम से तुम्हारे पति को सुख होगा अथवा दुःख। यदि सुख होगा तो उसे करो, अन्यथा न करो। कितने ही पति अपनी स्त्री को बहुत बातें करते देखकर अप्रसन्न होते हैं। ऐसी दशा में बहुत बातें करने की आदत को छोड़ देना चाहिये। कितने ही पति अपनी स्त्री को निर्लज्ज भाव से हर किसी के साथ बातचीत करते देखकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुःखी होते हैं, ऐसी दशा में पति के मुँह खोलकर न कहने पर भी अपनी बुद्धि से उनके मन का भाव समझकर तुम्हें वह आदत छोड़नी चाहिये। इसका भी ध्यान रक्खो कि तुम्हारे पति किसके साथ तुम्हारा बैठना-उठना, मिलना-जुलना, बातचीत करना पसन्द करते हैं और किस-किस के साथ नहीं। जिसके साथ मिलने-जुलने में उन्हें आपत्ति हो, उसके पास न फटको। अपनी चाल-ढाल और रहन-सहन वैसी ही रक्खो, जैसी तुम्हारे पति चाहते हैं। उनको प्रसन्न रखने की भरसक चेष्टा करो। जिन कामों में उनका हित हो, उन सब कामों को, बिना किसी प्रकार के असंतोष या उदासीनता के, हर्षपूर्वक, बड़े चाव के साथ करती रहो। पति के प्रिय कार्यों में असन्तोष या उदासीनता प्रकट करना स्त्री के लिए महान् पाप है।

पति को विपत्ति के समय साहस और दुःख के समय धैर्य बँधाना चाहिये। अच्छे कामों के लिए सदा उत्साहित करते रहना चाहिये। उनकी उन्नति के मार्ग में अपने स्वार्थ के लिए कोई बाधा डालनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनुचित है, ऐसा कदापि न करना। पति के यश और पति की भलाई तथा उन्नति के कामों में तन मन से सदा सहायक रहो। शास्त्र के अनुसार स्त्री अपने पति की अर्द्धांगिनी और सहधर्मिणी है। पति के सुख-दुःख और पाप-पुण्य सभी में उसका आधा भाग है। पति का भविष्य यदि उज्ज्वल होगा तो उसके साथ ही साथ स्त्री का भी। इसलिए स्त्री को सदा ऐसा प्रयत्न करते रहना चाहिये, जिससे पति की प्रवृत्ति सद्धर्म और सत्यकर्मों की ओर रहे।

किसी प्रकार का गर्व करके पति का दिल न दुखाना चाहिये। उनके दुःख में यदि तुम्हें सुख जान पड़े तो इससे अधिक दुःख और आश्चर्य की बात और क्या हो सकती है? यदि तुम निःस्वार्थभाव से पति में प्रेम रक्खोगी तो गर्व अपने आप ही तुम्हारे पास होकर नहीं निकलेगा। कितनी ही स्त्रियों के अनुचित गर्व से उनके स्वामियों के हृदय को प्रायः विशेष दुःख होता और उस दुःख में वे अपने कर्त्तव्य तक को भूल जाते हैं। अतएव तुम ऐसा गर्व कभी न करना, जिससे तुम्हारे पति के हृदय को इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकार की पीड़ा पहुँचे। हाँ, केवल मनोरञ्जन के लिये छोटी-मोटी बातों पर गर्व करने की बात दूसरी है।

यह अच्छी तरह बताया जा चुका है कि पति और पत्नी का सम्बन्ध कितना गुरुतर है। अतएव उसे ध्यान में रखकर कभी कोई ऐसा काम न करना चाहिये जो इस सम्बन्ध की गुरुता और महत्त्व के प्रतिकूल हो। कितनी ही स्त्रियाँ अपने भाई, माता-पिता तथा आत्मीय जनों के सामने अपने पति की निन्दा किया करती हैं, कोई-कोई पति की अपेक्षा अन्यान्य कुटुम्बियों की ज्यादा सगी बनती हैं। ऐसी स्त्रियों का मुँह देखना भी पाप है। सदा उनसे अलग रहने की चेष्टा करो।

आजकल की नवीन स्त्रियों में परस्पर इन बातों की गहरी जाँच-पड़ताल हुआ करती है—किसके पति अपनी स्त्री पर कैसा प्रेम रखते हैं? किसके पति किसके साथ कैसी बातचीत किया करते हैं? कौन किसके लिए कैसी चिट्ठियाँ लिखता है? इत्यादि। इन बातों से कभी-कभी बड़ी हानि हो जाती है। इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तरह के वार्त्तालाप से पति-पत्नी के सम्बन्ध की गुरुता हृदय से जाती रहती है। इसके सिवाय प्रायः यह भी देखा जाता है कि कोई-कोई पति अपने आपस की बात को दूसरी जगह प्रकट करने से नाराज होते हैं। ऐसी दशा में वे सब बातें दूसरी स्त्रियों के बीच में कह डालना सरासर अनुचित है। पति-पत्नी के पवित्र प्रेम की बातें दूसरों के दिलबहलाव के लिए नहीं होतीं। पति-पत्नी दोनों को उचित है कि उन बातों को कभी अपने हृदय से बाहर न करें। सर्व-साधारण के सामने प्रकट करने से उनका महत्त्व जाता रहेगा।

प्रत्येक दशा में पति के चरणों में पूर्ण श्रद्धा रख-कर सदा अपने कर्त्तव्यों का पालन करती रहो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सास-ससुर के प्रति बहू का कर्त्तव्य

आजकल सास-ससुर में स्त्रियों की श्रद्धा प्रायः बहुत कम हो गई है। इससे अनेक हानियाँ हो रही हैं। जो बालिकाएँ ससुर के घर आते ही आते मालकिन बनकर बैठ रहने के लिए आतुर होने लगती हैं, वे बड़ी अदूरदर्शिनी और नासमझ हैं। गृहस्थी का भार उठाना कोई सहज काम नहीं है। कितने ही विद्वानों ने इसे राज्यभार के समान कठिन और महत्त्वपूर्ण बतलाया है। बात बिलकुल ठीक है। ऐसी दशा में तुम सिर्फ अपनी ही जानकारी के बल पर इतनी बड़ी जिम्मेदारी के काम को अपने सिर लेना चाहो तो यह परले सिरे की अदूरदर्शिता नहीं तो और क्या है? इसलिए तुम्हें अपने सास-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ससुर की देख-रेख में रहकर उन्हीं की राय से हर काम करना चाहिये। जिन स्त्रियों को सास-ससुर की देख-रेख और उनकी सम्मति का सुअवसर प्राप्त है, उन्हें अपने को सौभाग्यवती समझना चाहिये। जिनके भाग्य में सास-ससुर का सुख नहीं है, वे मन्दभागिनी हैं। बढ़ी-चढ़ी नदी में बिना मल्लाह के नौकारोही के समान गृहस्थी में उन्हें तरह-तरह की विपत्तियाँ झेलनी पड़ती हैं। भाग्य से जिन्हें सास-ससुर मिले हैं, वे यदि उनकी शिक्षाओं को स्वीकार करने से विमुख रहें तो वे न सिर्फ़ मन्द-भागिनी हैं; बल्कि परले सिरे की मूर्खा भी हैं। वे अपने पाँव में आप ही कुल्हाड़ी मारती हैं। गृहस्थी के जिस दायित्व-पूर्ण भार को सहन करने में पद-पद पर अनेकों कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती हैं, उस भार को सास-ससुर के ऊपर रखकर ही स्वयम् निश्चिन्त हो उनके स्नेह की छाया में रहने से अधिक सुख और किसमें है ? सास-ससुर बिना किसी कारण के अपनी बहू से कदापि असंतुष्ट नहीं रह सकते। यदि तुम बुद्धिमती हो, सुशील हो, सास-ससुर में श्रद्धा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रखती हो तो कोई कारण नहीं कि सास-ससुर तुम से नाराज रहें। प्रेम से जङ्गली जानवर भी वश में आ जाते हैं, मनुष्य की तो बात ही क्या? फिर मनुष्य भी कौन—तुम्हारे सास-ससुर, तुम्हारे पति के माता-पिता रातदिन तुम्हारे पति का हित चाहने वाले। भला फिर वे क्यों न वश में आवेंगे और क्यों न तुम्हारे शुभचिन्तक रहेंगे? यह ठीक है कि सब आदमी एक से नहीं होते। सम्भव है, किसी-किसी के सास-ससुर वास्तव में दुष्ट स्वभाव के हों; परन्तु ऐसा होने पर भी क्या उनका अपमान करना या उन से अलग रहने की चेष्टा करना उचित है? दुष्ट होने पर भी क्या कोई अपने आत्मीय जनों का संसर्ग छोड़ सकता है? तुम्हारे माता-पिता और पुत्र आदि यदि क्रूर-स्वभाव भी हों तो भी तुम उनसे अपना स्नेह नहीं तोड़ सकतीं; परन्तु यदि तुम्हारे सास-ससुर तुम्हारी मर्ज़ी के विरुद्ध ज़रा सा भी काम करें या तुम से तनिक भी कड़ी बात कहें तो फौरन् तुम्हारी त्योरी बदल जाती है। क्या यह उचित है? जिस प्रकार माता-पिता और पुत्र-कन्या तुम्हारे सगे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और आत्मीय हैं उसी प्रकार सास-ससुर भी। बल्कि उनसे भी अधिक हैं। हिन्दू-शास्त्र के अनुसार सास-ससुर माता-पिता से भी अधिक पूजनीय और आदरणीय हैं। क्योंकि वे तुम्हारे माता-पिता नहीं हैं, किन्तु उनके माता-पिता हैं; जिनके प्राण तुम्हें अपने प्राणों से भी अधिक प्यारे हैं। यदि तुम उन पर पूर्ण श्रद्धा न रक्खोगी तो यह समझा जायगा कि अपने पति के लिए भी तुम्हारे हृदय में यथोचित श्रद्धा नहीं है। साध्वी स्त्रियाँ स्वभावतः ही अपने सास-ससुर में विशेष श्रद्धा रखती हैं। जिनमें अपने सास-ससुर के प्रति पूर्ण श्रद्धा न हो, उन्हें समझ लेना चाहिये कि वे सच्ची साध्वी नहीं हैं और उनके हृदय में अपने पति के लिए जो प्रेम है वह सर्वथा स्वार्थ-पूर्ण है। स्वार्थ के साथ ही उसकी उत्पत्ति हुई है, स्वार्थ के साथ ही उसका अन्त हो जायगा। अन्यथा क्या कारण है कि उनके एकमात्र देवता—पतिजी जिनमें श्रद्धा और भक्ति रखते हैं उनमें वे श्रद्धा-भक्ति नहीं रखतीं।

जो हो, यदि अपने पराये का किस्सा छोड़ भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिया जाय और थोड़ी देर के लिए मान लिया जाय कि सास-ससुर तुम्हारे कोई नहीं, तो भी केवल स्वार्थ की ओर दृष्टि रखते हुए भी तुम सास-ससुर के महत्त्व को भलीभाँति समझ सकती हो। कितने ही मनुष्य बहुत सा रुपया ख़र्च करके भी अनुभवी आदमियों की सहायता नहीं प्राप्त कर सकते। ऐसी दशा में यदि परमात्मा ने सहज ही तुम्हें अनुभवी सास-ससुर की सहायता प्राप्त करने का सौभाग्य प्रदान किया है तो उस सुलभ सहायता से वंचित रहना कहाँ की बुद्धिमानी है? इसलिए स्वयम् घर की मालिकिन बन जाने के लोभ में फंसकर दुर्लभ सास-ससुर की सहायता को कभी तुच्छ न समझना। सदा ही ऐसी चेष्टा करो, जिससे तुम्हें उनकी देख-रेख में काम करने, उनकी छाया में रहने और उनको प्रसन्न करने का सुअवसर प्राप्त रहे। यदि तुम उनमें श्रद्धा रक्खो तो वे कितने ही क्रूर क्यों न हों, तुम्हें सदा प्यार करेंगे। उनकी किसी बात का और का और अर्थ कभी न लगाना। यदि वे तुम्हारे ऊपर क्रोध भी करें तो समझ लेना कि वे तम्हारे हित के लिए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही ऐसा कर रहे हैं। हृदय से वे सदा तुम्हारा हित चाहते हैं। सम्भव है, किसी बात को अच्छी तरह न समझ सकने के कारण वे तुम से नाराज हों परन्तु उससे यह न समझना कि वे तुम्हारा अहित चाहते हैं।

वृद्ध होने पर लोगों की प्रायः बुद्धि कम हो जाती है। उस समय उनसे एक आध भूल हो जाना स्वाभाविक है। उनकी ऐसी भूलों को मन में न लाना चाहिये। यदि उस दुर्बल दशा में तुम उनकी भूलों को सहन न करोगी, उनकी यथोचित सेवा न करोगी तो और कौन करेगा? अपने बाल बच्चों ही की ओर देखो। आज इतने कष्ट सहकर तुम उनका लालन-पालन कर रही हो, क्या सदा ही इस प्रकार उनका लालन-पलन कर सकोगी? वृद्धा अवस्था में जब तुम उनका इतना लालन-पालन न कर सकोगी, तब क्या कभी तुम यह चाहोगी कि वे तुम में अपनी श्रद्धा कम कर दें? उस समय तुम्हारी बहू यदि यह चाहे कि तुम्हारे पुत्र तुम में कम श्रद्धा रक्खें और तुम्हारा कम आदर करें तो बतलाओ तुम्हें कितना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुःख होगा ? हरएक समय इन बातों को ध्यान में रखकर सास-ससुर की यथोचित सेवा करना।

प्रायः सास-ससुर की सेवा ही से स्त्रियों की पति-भक्ति का परिचय मिलता है। युवा और सबल होने के कारण पति को हर काम के लिए स्त्री का मुँह नहीं ताकना पड़ता; परन्तु वृद्ध सास-ससुर का बहू की उचित सहायता के बिना काम नहीं चल सकता। ऐसी दशा में सास-ससुर की सेवा से ही पतिव्रता स्त्री का सच्चा पतिव्रत प्रकट होता है।

कितने ही पुत्र अपने माता-पिता के आज्ञाकारी नहीं होते। ऐसी दशा में बहू का कर्त्तव्य है कि वह अपने पति को माता-पिता का आज्ञाकारी बनाने की चेष्टा करे। परन्तु आजकल हमारे देश में यह बात दुर्लभ सी हो रही है। अपनी चेष्टा से ऐसा करना तो दूर रहा, बहुतेरी स्त्रियाँ अपने पति और सास-ससुर के बीच झगड़ा फ़साद कराने के लिए तैयार रहती हैं। उन्हें चाहिये कि वे स्वयम् सास-ससुर की सेवा करें और पति को भी उनका आज्ञाकारी सेवक बने रहने की सलाह दें। सास-ससुर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का काम नौकर-नौकरानियों के द्वारा न कराकर, जहाँ तक हो सके, अपने हाथ से करें। तुम्हारे हाथ के काम से उन्हें जो आनन्द होगा, वह नौकर-नौकरानियों के द्वारा किये हुए काम से कदापि न होगा। इसके सिवाय उनके सब कामों और ज़रूरतों को नौकर-चाकरों की अपेक्षा तुम्हीं ज्यादा समझ सकती हो।

जिस वक्त जो कार्य आरम्भ करो, पहले सास-ससुर से पूछ लो। घर के काम-धन्धे में चतुर होने पर भी उनकी आज्ञा और सम्मति के बिना कोई काम न करो। यदि वे कुछ भूल कर रहे हों, तो बड़ी नरमी के साथ उन्हें बतला दो; परन्तु उस समय की उस भूल के सम्बन्ध में किसी प्रकार का वाद-विवाद न करो। किसी साधारण सी भूल को यदि वे न भी मानें, तो तुम हठ न करके, जो वह कहते हों, उसी को मानो। सदा ही उनके हृदय के भावों को परखकर उत्साहपूर्वक उनकी सेवा करती रहो। लज्जा अथवा स्नेह के कारण यदि वे तुम से किसी काम के लिए न भी कहें, तो तुम अपनी बुद्धि से उनके मन की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बात को जानकर वह काम कर डालो। कभी उनके ऊपर अपना प्रभाव जमाने की चेष्टा न करो। यदि तुम्हारे सास-ससुर गरीब हों तो तुम्हारे पास जो अपना रुपया हो, उसे भी अपने निज के खर्च में न लाओ। प्रायः स्त्रियाँ अपने धनवान माता-पिता के यहाँ से रुपया लाकर अपनी गरीब ससुराल में खर्च किया करती हैं। इससे प्रायः गरीब सास-ससुर के हृदय को कष्ट होता है, और वे इसमें अपनी मान-हानि समझते हैं। ऐसी दशा में बुद्धिमती बहू को चाहिये कि वह रुपया अपने पति के हाथ में दे दिया करे। पति उस रुपये को अपने माता-पिता और बाल-बच्चों की आवश्यकताओं के पूरा करने में खर्च करे।

बहू को चाहिये कि वह सास-ससुर की यथोचित सेवाटहल करके और उन्हें भोजन कराकर तब स्वयं भोजन करे। उनका काम करने के बाद किसी और काम में हाथ डाले। इस प्रकार का व्यवहार रखने पर क्रोधी और कठोर स्वभाव के सास-ससुर भी बहू को प्यार किये बिना नहीं रह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सकते। हमारा अनुरोध है कि आजकल की नई बहुएँ इसकी परीक्षा कर देखें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अन्यान्य आत्मीयों के प्रति स्त्री का कर्त्तव्य

पति और सास-ससुर के बाद स्त्री का निकट सम्बन्ध जेठ, देवर, जेठानी, देवरानी और ननद आदि से है। बहू को चाहिये इनका भी सदा यथोचित आदर करे। जब बहू पहले-पहल ससुराल में आती है तो इन सब से उसका तनिक भी परिचय नहीं होता। अतएव उस समय बड़ी होशियारी के साथ इन्हें अपनाने की चेष्टा करनी चाहिये। जिस घर की बहू इन सब के मन को अपनी ओर खींच सके और इन सब की प्यारी बन सके, वह स्वर्ग के समान है।

जेठ

बहू को अपने जेठ पर विशेष श्रद्धा रखनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शास्त्रकारों ने स्त्री को सास-ससुर की अपेक्षा भी जेठ में अधिक भक्ति रखने का उपदेश दिया है। इसका कारण यह है कि सास-ससुर तो वृद्ध हैं और माता-पिता के समान हैं; उनके निकट यदि तुम कोई भूल भी करो तो क्षमा माँग सकती हो। परन्तु किसी बराबरवाले व्यक्ति को किसी प्रकार से अपमानित करने का फल बहुत ही बुरा होता है। यदि जेठ को कहीं यह ख्याल हुआ कि बहू उन्हें हीन समझती है, अथवा कुछ गिनती-गाँठती नहीं; तो अवश्य ही वे इसमें अपनी मानहानि समझेंगे। परन्तु सास-ससुर बहू को कन्या की दृष्टि से देखते हैं, और अपनी सन्तान के समान ही उसको प्यार करते हैं; इसलिए वे बहू के द्वारा अपनी मानहानि का ख्याल मन में नहीं लाते। इसलिए सास-ससुर की अपेक्षा भी स्त्री को जेठ के प्रति बहुत सावधानी के साथ व्यवहार करना चाहिये।

जेठ के सामने बहुत ही सरलता और गम्भीरता के साथ रहना चाहिये। उनके सामने तनिक भी चञ्चलता या निर्लज्जता प्रकट करनी अत्यन्त अनु-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चित है। सदा उनके प्रति श्रद्धा रखनी चाहिये और अपने कामों से उन्हें प्रसन्न करने की चेष्टा करनी चाहिये। कभी उनके सामने ज़ोर से बात न करो। सास-ससुर के समान ही उनकी सेवा करो और आज्ञाओं का सदा पालन करती रहो।

देवर

देवर को ठीक अपने छोटे भाई के समान समझना चाहिये। देवर और अपने भाई में यदि कुछ अन्तर समझती हो तो तुम अपने को और पति को एक कैसे समझ सकती हो? जिस दिन देखो कि तुम्हारा भाई और पति का भाई तुम्हारे लिये दोनों बिलकुल एक हैं, उसी दिन यह समझ लेना कि तुम्हारा हृदय और तुम्हारे पति का हृदय वास्तव में एक है। अन्यथा चिट्ठी-पत्री या खाली मौखिक बातों में पति 'अर्द्धाङ्ग' अथवा 'सर्वस्व' लिखने या कहने से क्या फल हो सकता है। अपने भाई को जिस स्नेह की दृष्टि से देखती हो, देवर को भी उसी स्नेह की दृष्टि से देखो। जिस प्रकार अपने छोटे भाई का लाड़-प्यार करती हो उसी प्रकार देवर का भी लाड़-प्यार करो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जेठानी, देवरानी और ननद इत्यादि

जेठानी और बड़ी ननद को बड़ी बहन के समान और देवरानी तथा छोटी ननद को छोटी बहन के समान समझना चाहिये। कारण यह कि देवर की तरह ये भी तुम्हारे पति के अत्यन्त निकट सम्बन्धी स्वजन हैं। आजकल प्रायः जेठानी और ननद आदि से बहुओं की लड़ाई ठनी रहती है और आपस में द्वेषभाव रहता है। बहुओं के लिए यह लज्जा की बात है। वे चाहे जितना ही बुरा व्यवहार क्यों न करें, बहू यदि उसके बदले में उनके साथ अच्छा व्यवहार करे और उन पर अपना स्नेह कम न होने दे तो दस-पाँच रोज में वे आप ही बहू के वश में आ जायँगी। यह स्वाभाविक बात है। इसलिए उनमें चाहे कितने ही दोष क्यों न हों; बहू को उनके साथ किसी प्रकार का वाद-विवाद या लड़ाई-झगड़ा न ठानना चाहिये और सदा ही अपनी बहन के समान उनके प्रति स्नेह-शीलता और सहृदयता का व्यवहार करना चाहिये। उनके खाने-पहनने की भी सदा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विशेष चिन्ता रखनी उचित है। शक्तिभर ऐसी चेष्टा करनी चाहिये कि उन्हें कोई कष्ट न होने पावे।

नौकर-नौकरानी आदि

अपने घर के आत्मीयजनों के साथ कैसा व्यवहार करना उचित है, यह हम संक्षेप में बतला चुके। अब इस सम्बन्ध में भी कुछ कह देना ज़रूरी है कि नौकर-चाकर, नौकरानी, टहलुई, अतिथि, अभ्यागत तथा दूर के सम्बन्ध रखनेवाले अन्यान्य व्यक्तियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये। अपने घरवालों को तो प्रसन्न कर लेना सहज है। परन्तु जो ग़ैर हैं, जिनके साथ बहुत दूर का सम्बन्ध है, उन्हें सन्तुष्ट रखना बहुत कठिन है। इसलिए उनके साथ बहुत होशियारी के साथ व्यवहार करना उचित है। नौकर-नौकरानी एक तो ग़ैर, दूसरे अपढ़, ऐसी दशा में उन्हें अपने वश में रखने के लिए उनके साथ विशेष स्नेह और सहानुभूति का बर्ताव करना पड़ेगा। नौकरों के विश्वास-पात्र और आज्ञाकारी न होने से गृहस्थी के कामों में बड़ी कठिनाई पड़ती है। उनको आज्ञाकारी बनाने के लिए उनके साथ अच्छा व्यव-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हार करने की जरूरत है। उनसे काम कराने के लिए सदाही बड़ी नरमी के साथ कहो और समय पर उनका वेतन आदि चुकाती रहो। हर वक्त उन पर अपना ऐसा भाव प्रकट करो, मानो वे भी तुम्हारे घर में हिस्सा रखते हैं और तुम्हारे ही हैं, पराये नहीं। ऐसा न करने से उनके हृदय में तुम्हारे घर के प्रति प्रेम उत्पन्न नहीं होगा। यह हम नहीं कहते कि दोष देखने पर तुम उन्हें दण्ड न दो या उनसे नाराज न हो। यथोचित डाँट-डपट न रखने से प्रायः नौकर बिगड़ जाते हैं और मालिक का रोब नहीं मानते। हमारा कहना यह है कि यदि उन्हें डाँट-डपट भी करो, दण्ड भी दो, तो वह भी स्नेह से खाली नहीं। जिस प्रकार अपने बालबच्चों को डाँट-डपट करती हो, उसी प्रकार स्नेहपूर्वक उन्हें भी डाँट-डपट करो। ऐसी दशा में सख़्त व्यवहार से भी वे ढीठ या गुस्ताख़ न बन सकेंगे।

अतिथि-अभ्यागत की सेवा इस लोक और परलोक दोनों ही के लिए कल्याणकारक है। हम पहले ही कह चुके हैं कि अतिथि-सेवा स्त्रियों का एक

९

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रधान गुण है। इससे लोक और परलोक में सुख मिलता है। इसके सिवाय सर्वसाधारण में यश प्राप्त करने के लिए भी अतिथि-सेवा अत्यन्त आवश्यक है। अतिथि-अभ्यागत जिनकी सेवा से सन्तुष्ट होते हैं, उनकी सब जगह बड़ाई करते हैं, और इस प्रकार चारों ओर उनका यश फैल जाता है, और सभी उन्हें स्नेह और आदर की दृष्टि से देखने लगते हैं। अतिथि-अभ्यागत अथवा दूर का सम्बन्ध रखनेवाले अन्यान्य व्यक्ति किसी के यहाँ रोज-रोज नहीं आते। इधर-उधर घूमते-फिरते संयोग से कभी आ जाते हैं, और कुछ ही देर में या कुछ ही दिनों में दूसरी जगह चले जाते हैं। उस समय उनके साथ जो जैसा बर्ताव करता है, वह बर्ताव ही उन्हें याद रह जाता है। ऐसी दशा में उनके साथ बहुत सावधानी से व्यवहार करना चाहिये। उस थोड़े से समय में यदि उनका अपमान किया गया, अथवा उनके साथ कोई अनुचित व्यवहार किया गया तो उस थोड़ी सी देर के काम से बहुत दिन की बदनामी हाथ आती है। इसलिए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने घर में कोई भी अतिथि आवे तो यथोचित आदर-सत्कार करके उसे प्रसन्न करो।

कभी-कभी किसी असहाय और भाग्यहीन व्यक्ति को दरिद्र-दशा में पड़कर अपना घर छोड़ने के लिए विवश होना पड़ता है। कितने ही लोग उस दशा में उसका अपमान करते हैं। उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं और घर आने पर उसे धिक्कारते हैं। यह अत्यन्त निठुरता और निर्दयता का कार्य है। अत्यन्त दीन-दशा में पड़कर उस बिचारे को दूसरे की शरण लेनी पड़ी, यही उसके लिए क्या कम दुःख की बात है। तिस पर उसके साथ निठुरता का व्यवहार करना कितनी बड़ी हृदय-हीनता और अनुदारता का काम है! इस प्रकार दुःखी को दुःख पहुँचाना अधर्म है, पाप है। जो ऐसा करते हैं, उन पर दैव का कोप होता है। और उन्हें यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि दैव के रुष्ट होने पर उन पर भी वैसी ही विपत्ति आ सकती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रोज के काम

स्त्रियों का दायित्व

पुरुष बाहर अपने कर्त्तव्यों को पूरा करते हैं और स्त्रियाँ घर में अपने कर्तव्यों का पालन करती हैं। पुरुषों का कार्यक्षेत्र घर के बाहर है, स्त्रियों का कार्यक्षेत्र घर के भीतर ही है। परन्तु इस बात से तुम कहीं यह न समझ बैठना कि इस छोटे से घर के भीतर तुम्हें जिन कर्तव्यों का पालन करना पड़ेगा वह भी छोटे हैं। विचारकर देखने से ज्ञात होगा कि मनुष्यों के लिए एकमात्र घर ही शान्ति का स्थान है। यदि घर की व्यवस्था अच्छी है तो वे बाहर कितने ही क्लेश भोगते हुए भी सुखी हैं। परन्तु यदि घर में शान्ति और सुव्यवस्था नहीं है तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वे सारे संसार में सम्मानित होते हुए भी दुःखी हैं। इसलिए शक्ति भर सदा ऐसी चेष्टा करती रहो, जिससे घर में सुख और शान्ति रहे।

सबेरे के काम

प्रति दिन तड़के उठकर भगवान का नाम लो। बाद को पति के चरणों में प्रणाम कर घर के कामों में लग जाओ।

औरों के उठने से पहले ही घर आँगन चारों ओर झाड़-बुहार डालो और गोबर आदि से लीप कर पवित्र कर लो। यदि घर में नौकरानी हों तो इस काम में उनकी सहायता ले सकती हो।

रसोई

भोजन बनाना स्त्रियों का प्रधान कार्य है। सास-ससुर, पति, पुत्र तथा अन्य घरवालों को अपने बनाये हुए भोजनों से तृप्त करना स्त्रियों का मुख्य कर्त्तव्य है। आजकल कितनी ही स्त्रियाँ आलस्य और विलासिता के वशीभूत हो अपने भोजन आप न बनाकर इस काम के लिए रसोइया या मिसरानी को नौकर रखती हैं। ऐसी स्त्रियों के जीवन को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धिक्कार है। तुम चाहे कितने ही अमीर घर की बहू क्यों न हो, परन्तु शरीर में शक्ति रहते ऐसा कदापि न करना। तुम्हारे बनाये हुए भोजनों से घरवालों की जो तृप्ति हो सकती है, वह एक ग़ैर आदमी के बनाये हुए भोजनों से कदापि नहीं। इस बात को सदा ध्यान में रखना।

अच्छी तरह रसोई तैयार करके प्रतिदिन ठीक समय पर सब को भोजन कराओ। थाली, कटोरा, गिलास आदि माँजकर साफ़ रक्खो। अच्छे-अच्छे पदार्थ भी मैले बरतनों में परोसने से खानेवाले की तृप्ति नहीं होती।

कुछ स्त्रियाँ अच्छी-अच्छी सामग्री होने पर ही अच्छे भोजन बना सकती हैं। साधारण सामग्री से भोजन तैयार करने में उन्हें अरुचि होती है। पर हम कहते हैं, खीर पूड़ी कोई रोज़ थोड़े ही खाता है, रोज़ खाने की चीज़ है रोटी-दाल। इसी को सदा अच्छी तरह बनाने की चेष्टा करो। अच्छी सामग्री से तो अच्छे पदार्थ सभी तैयार कर सकते हैं। तुम यदि साधारण सामग्री से अच्छे भोजन तैयार करके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूसरों को तृप्त कर सको तो इसी में तुम्हारी तारीफ़ है।

पान बनाना

सब स्त्रियाँ अच्छे पान नहीं बना सकतीं। एक दिन में यह काम सीखा जा सकता है। यदि तुम्हारे घर में पान खाये जाते हों तो तुम्हें एक दिन पान बनाना अच्छी तरह सीख लेना चाहिये।

स्वच्छता और सुव्यवस्था

घर की सब चीज़ों को सुव्यवस्थितरूप में रक्खो, इधर उधर फैलाकर न डालो। धोबी को अधिक पैसे न देकर, जहाँ तक हो सके, घर के कपड़ों को अपने आप धो लिया करो। बाहर के बहुत से काम लगे रहने के कारण पुरुषों को हर बात तुमसे बार-बार कहने की याद नहीं रह सकती। इसलिए तुम स्वयं इन बातों पर ध्यान रक्खो कि घर में कौन कपड़ा मैला है, उसे साफ़ करने की ज़रूरत है, कौन कपड़ा फटा है, उसे सीने की ज़रूरत है, इत्यादि। तुम्हारे इन साधारण कामों से पुरुष को बहुत ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संतोष होगा। थोड़े से साबुन और पैसे दो पैसे के सुई-तागे से तुम ये काम कर सकती हो।

लिखना, पढ़ना और दस्तकारी

रसोई बनाने तथा घर के और काम-धन्धे से फ़ुर्सत मिलने पर लिखो, पढ़ो अथवा कुछ दस्तकारी करो। स्त्रियों की दस्तकारी में आजकल कितनी ही व्यर्थ चीजें आ घुसी हैं। कितनी ही स्त्रियाँ प्रायः उन दस्तकारियों में चिपटी रहतीं हैं, जिनसे लाभ तो कुछ होता नहीं उलटा समय बरबाद होता है और आँखें कमज़ोर होती हैं। केवल प्रशंसा प्राप्त करने के लोभ से इस प्रकार की अनावश्यक दस्त-कारियों में समय न गँवाना चाहिये। उन दस्त-कारियों में मन लगाओ, जिनसे गृहस्थी का कुछ भला हो सके। आजकल की स्त्रियाँ रूमाल, चैन, मोजे, दस्ताने आदि बुनने में ही लगी रहती हैं। घर में किसी कुरते की सीवन उधड़ जाय या किसी धोती में खोंप हो जाय तो उसे सीने सँभालने की ओर उनका ध्यान नहीं ज़ाता। यह दुःख का विषय है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रोजाना हिसाब

घर के सब कामों से निपटकर रात्रि को, सोने से पहले, दिन भर के आय-व्यय का हिसाब लिख लेना चाहिये। गृहस्थी के खर्च का हिसाब रखना पुरुषों के लिये कठिन है। सारे दिन परिश्रम करने के बाद सब ख़र्च की याद करके हिसाब लिखने में उन्हें अड़चन समझ पड़ती है। फिर गृहस्थी के सब खर्च स्त्रियों को ज्ञात रहते ही हैं, अतएव पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ ही इस काम को आसानी से कर सकती हैं। बाजार का हिसाब, धोबी की धुलाई का हिसाब, दूधवाले का हिसाब, नौकर-नौकरानी के वेतन का हिसाब इत्यादि, सारे हिसाबों को सोने से पहले लिख लेना चाहिये।

सेवा-शुश्रूषा

घर में किसी का शरीर कुछ अस्वस्थ हो तो उसकी यथोचित शुश्रूषा करो। कोई अतिथि-अभ्यागत आ जाय तो तुमसे जहाँ तक बन सके, उसकी सेवा करो। इस विषय में हम पहले भी बहुत कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिख चुके हैं, इसलिए अब दुबारा लिखने की ज़रूरत नहीं।

व्रत-उपवास

हिन्दूघरों में स्त्रियों को साल में कितने ही व्रत-उपवास रखने पड़ते हैं। इनके द्वारा मन शुद्ध होता है, शरीर नीरोग रहता है और चित्त में स्थिरता उत्पन्न होती है। इसलिए सदा शुद्ध तथा शान्तभाव से व्रत-उपवासों के मर्म को समझकर उनका पालन करो।

पढ़ने योग्य पुस्तकें

फ़ुर्सत के वक्त पढ़ो, परन्तु ऐसी-वैसी पुस्तकों को हाथ न लगाओ। कितनी ही पुस्तकें ऐसी होती हैं, जिन्हें पढ़ने से लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होती है। आजकल के नाटक और उपन्यासों की अपेक्षा पौराणिक कहानियाँ स्त्रियों के लिए विशेष उपयोगी हैं। आजकल की पुस्तकों में भी बहुतेरी पुस्तकें स्त्रियों के लिए विशेष लाभदायक और शिक्षा-प्रद हैं। गुरुजनों से पूछकर उन्हीं उपयोगी पुस्तकों को पढ़ना चाहिये। लिखते समय ऐसी चेष्टा करो जिससे अक्षर अच्छे बनें और सुन्दर हों।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मितव्यय

खर्च-वर्च में मितव्ययता पर सदा ध्यान रक्खो। यदि आय थोड़ी हो तो गृहस्थी के कामों में उसे ऐसी किफायत और होशियारी के साथ खर्च करो कि सब काम ठीक चलता रहे, और तुम्हारे दरिद्र पति को दरिद्रता का कष्ट तनिक भी न जान पड़े।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पौराणिक नीति-कथा

लक्ष्मी और रुक्मिणी का संवाद

एक दिन रुक्मिणी देवी लक्ष्मी से मिलने के लिए स्वर्ग को गईं। लक्ष्मी ने बड़े आदर से उन्हें अपने पास बैठाया और आपस में विविध वार्त्तालाप होने लगा। बहुत सी बातचीत के बाद रुक्मिणी देवी ने लक्ष्मी से पूँछा—"बहन, तुम किन स्त्रियों के पास सदा रहती हो? किस प्रकार की स्त्री तुम्हें प्यारी है? और किन उपायों से स्त्री तुम्हारी प्रीतिपात्र बन सकती है?

रुक्मिणी के प्रश्न को सुनकर लक्ष्मी कुछ हँसीं और मीठे वचनों में इस प्रकार उत्तर दिया—

"जिस स्त्री की अपने पति में अचल भक्ति है,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वही मुझे सबसे अधिक प्यारी है। मैं उसे क्षण मात्र के लिए भी नहीं छोड़ सकती। उसके पास रहने में मुझे हर्ष होता है। मैं उसके सत्सङ्ग की कामना करती हूँ और सदा उसके साथ रहती हूँ। सब गुणों से विभूषित होने पर भी यदि कोई स्त्री अपने पति में श्रद्धा नहीं रखती, तो मैं उससे घृणा करती हूँ और उसके पास होकर नहीं फटकती।

"जो स्त्रियाँ क्षमाशील हैं, अर्थात् किसी के कुछ अपराध करने पर भी उसे क्षमा कर देने के लिए तैयार रहती हैं, मैं उनके घर में निवास करती हूँ।

"सदा सच बोलनेवाली स्त्री मुझे विशेष प्रिय है। सरल स्वभाव स्त्री ही मुझे प्राप्त कर सकती है। जो स्त्री कपट और छल-चातुर्य के द्वारा दूसरों को धोखा देती है और झूठ बोलती है, उससे मुझे घृणा है। मैं उसे कभी दर्शन भी नहीं देती।

"जो स्त्रियाँ पवित्र हैं, शुद्ध चरित्र हैं, देवता और ब्राह्मण में भक्ति रखती हैं, पतिव्रत का पालन करती हैं, अतिथि की सेवा के लिए अग्रसर रहती हैं, वे शीघ्र ही मुझे प्राप्त कर लेती हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"जो जितेन्द्रिय हैं, पति के अतिरिक्त दूसरे पुरुष का मुँह देखना भी जिन्हें असह्य होता है, मैं उनके घर से कभी अलग नहीं होती, वे मुझे अपने वश में कर लेती हैं।"

इतना कह चुकने पर लक्ष्मी ने कहा—"बहन, यहाँ तक मैंने स्त्रियाँ बतलाईं, जिनको मैं प्यार करती हूँ और जिनसे मैं स्नेह रखती हूँ। अब ऐसी स्त्रियाँ बतलाती हूँ जिनसे मैं अप्रसन्न रहती हूँ और घृणा करती हूँ—

"जो सदा अपने पति का अप्रिय कार्य करती हैं, उसे तरह-तरह के कष्ट पहुँचाती हैं, उससे कटु वाक्य कहा करती हैं, ऐसी स्त्रियों से मुझे अत्यन्त घृणा है। मैं कभी उनका मुख नहीं देखती।"

"जो अपने पति का घर छोड़कर दूसरे के घर में रहने के लिए उत्सुक रहती हैं, पति के रहते हुए भी दूसरे व्यक्ति पर प्रेम रखती हैं, ऐसी स्त्रियाँ नरक की कीड़ा होती हैं। मैं कभी स्वप्न में भी उनके पास होकर नहीं निकलती।"

"जो लज्जाहीन हैं, लड़ाका हैं, कलहप्रिय हैं,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कटुवादिनी हैं, वाचाल हैं, जिस तिस के साथ वार्त्तालाप करती हैं, जिस तिस के साथ लड़ाई-झगड़ा ठाने रहती हैं, जिनका स्वभाव क्रोधी है, बात-बात पर सब से बिगड़ती रहती हैं, जो स्नेहशील नहीं हैं, जिनमें दया नहीं है, उदारता नहीं है, ऐसी स्त्रियों को मैं त्याग देती हूँ।"

"जो अपवित्रता से रहती हैं, बहुत सोती हैं, आलस्य के वश में हैं, बड़ों का कहना नहीं मानतीं, काम करने के समय उसके परिणाम पर ध्यान नहीं देतीं, घर में सुव्यवस्था नहीं रखतीं, गृहस्थी की चीज़ों को इधर-उधर तितर-बितर करके डाल रखतीं हैं; वे मुझे कदापि नहीं अपना कर सकतीं।

सुमना और शाण्डिली का संवाद

शाण्डिली नाम की एक स्त्री ने बिना किसी तपस्या तथा व्रत-अनुष्ठान के स्वर्गलोक को प्राप्त किया। यह देखकर सुमना नाम की एक देवबाला को बहुत ही आश्चर्य हुआ। वह शाण्डिली के पास गई और उससे पूछा—"देवि ! किन सुकर्मों के फल से तुम ने यह लोक पाया? शाण्डिली ने उत्तर दिया—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"देवि! सिर मुँड़ाकर, जटाएँ रखाकर, गेरुआ वस्त्र पहनकर अथवा और किसी भी प्रकार की तपस्या करके मैंने यह लोक नहीं प्राप्त किया। मैं केवल पति-सेवा की बदौलत ही यहाँ आई हूँ। जो स्त्री मन, वचन, कर्म से अपने पति की सेवा करती है वह अन्य किसी प्रकार की तपस्या न करके भी स्वर्ग में स्थान पाती है। भूलोक में मैंने किस प्रकार अपने पति की सेवा की थी, सो सुनो—

"मैंने कभी कोई ऐसी बात नहीं कही, जो मेरे पति को बुरी लगती, या जिससे उनका अहित-होता।

"एक बार जब मेरे पति विदेश को गये, तो मैंने सारे सुख-भोग और आमोद-प्रमोद से मुँह फेरकर एकाग्र चित्त और पवित्र हृदय से उनकी कुशल कामना में ही अपना सारा समय बिताया। जबतक वे विदेश में रहे, मैंने कभी बालों को नहीं सजाया। इत्र, आदि सुगन्धित चीज़ों का व्यवहार नहीं किया, और न किन्हीं अन्य उपायों से अपने शरीर की शोभा-सजावट बढ़ाने का यत्न किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मैं कभी बाहर के द्वार पर खड़ी नहीं होती थी और न किसी बाहरी आदमी के साथ बातचीत करती थी।

"प्रकट अथवा गुप्त किसी रूप से भी मैंने कोई अशुभ अथवा निन्दनीय कार्य करने की इच्छा कभी नहीं की।

"देवता, ब्राह्मण और गुरुजनों में मैंने सदा श्रद्धा रक्खी, व्रत-उपवासों का पालन किया और सास-ससुर की सेवा की।

जब मेरे पति विदेश से लौटे तो मैं एकान्त भक्ति और एकाग्र चित्त से उनकी सेवा-टहल में लग गई।

"खाने की जो चीज़ मेरे पति को अच्छी नहीं लगती थी, वह चीज मैंने कभी नहीं खाई।

"वह जबतक सो नहीं जाते थे, तबतक मैं कोई विशेष कार्य होने पर भी उनसे अलग नहीं होती थी।

"किसी वचन को पूरा न करने के कारण तरह-तरह के कटुवाक्य कहकर मैं उन्हें असंतुष्ट नहीं करती थी।

"गुप्त बात को मैं कभी किसी के सामने प्रकट नहीं करती थी। जो स्त्रियाँ अपने पति और अपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घर की गुप्त बातों को जहाँ-तहाँ कहती फिरती हैं, ऐसी स्त्रियों से मैं कभी नहीं मिलती थी।

"पुत्र, कन्या तथा अन्यान्य आत्मीयों के लिए नित्य जिन कामों की आवश्यकता पड़ती थी, प्रति दिन प्रातःकाल उठकर नियमितरूप से मैं उन सब कामों को अपने हाथों किया करती थी।

"घर और घर की सब सामग्री को सदा साफ सुथरा रखती थी।"

पार्वती का स्त्री-धर्म-वर्णन

एक बार देव-देव महादेव ने पार्वती से स्त्रीधर्म के सम्बन्ध में कुछ सुनने की इच्छा प्रकट की। इस पर पार्वती ने कहा—स्वामिन्! मैं स्त्रीधर्म के सम्बन्ध में जो कुछ जानती हूँ, वह आप को सुनाती हूँ, सुनिये-

"माता-पिता आदि गुरुजनों की आज्ञा और सम्मति के अनुसार उपयुक्त पात्र के साथ विवाह करना स्त्री का मुख्य कर्त्तव्य है।

"पतिभक्ति ही स्त्री का सब से प्रधान धर्म है। यही उसकी तपस्या है, यही उसका स्वर्ग है। पति-सेवा के अतिरिक्त स्त्री के लिए दूसरा धर्म या व्रत नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"पति ही स्त्री का परम देवता है, परम बन्धु है और परम गति है। स्त्रियों के लिए पति का प्रेम और पति का आदर स्वर्ग से भी अधिक सुखप्रद है। जो स्त्री ऐसा नहीं समझती, वह अत्यन्त नीच है।

"हे नाथ, यदि पति प्रसन्न न रहे तो पतिव्रता स्त्री को स्वर्गलाभ में भी सुख नहीं होता। स्वामी की सेवा को छोड़कर वह स्वर्ग भी नहीं जाना चाहती।

"पति चाहे दरिद्र हो, रोगी हो, वृद्ध हो, कुरूप हो, पापी हो, कैसा ही क्यों न हो, स्त्री के लिए वह देवता है। स्त्री को उचित है कि वह जो कुछ आज्ञा दे, सदा ही प्रसन्नतापूर्वक उसका पालन करे।

"हे स्वामिन्! जो स्त्री सच्चरित्र है, स्नेहशील है, कभी अपने पति से कोई कड़ी बात नहीं कहती, सदा उसके साथ सद्व्यवहार करती है, उसका मुँह देखने में स्वर्ग का सा सुख समझती है, उसकी सेवा में अपने को भूली रहती है, जिसे स्त्री-धर्म का पूरा ज्ञान है और उसका पालन करने के लिए सदा अग्रसर रहती है, पति-धर्म ही जिसका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुख्य धर्म है, पतिव्रत ही जिसका प्रधान व्रत है, पति के सुख में जिसे सुख है; पति के दुःख में जिसे दुःख है, पति जिसके लिए देवता है, पति जिसके लिए सर्वस्व है, वही स्त्री पतिव्रता है, वही स्त्री सती है। मैं ऐसी स्त्री से सदा प्रसन्न रहती हूँ।

"हे नाथ! जो स्त्री पति की सेवा करने में और पति के वशीभूत रहने में सब से अधिक आनन्द समझती है, स्वामी के कुछ कड़ी बात कहने या क्रुद्ध होने पर भी बदले में कुछ न कहकर सदा उसे प्रसन्न करने की चेष्टा करती है, जो पर पुरुष का मुँह भी नहीं देखती, पति के दरिद्र, रोगी, क्रोधी, अङ्गहीन अथवा कोढ़ी होने पर भी मन वचन कर्म से उसकी सेवा करती है और उसमें पूर्ण श्रद्धा रखती है, जो गृह-कार्य में चतुर है, पुत्रवती है, पति परायणा है, सारे सुखभोग और आनन्द ऐश्वर्य से मुँह फेरकर एकमात्र पति की सेवा में लीन रहती है, जो नित्य प्रातःकाल उठकर घर को झाड़-बुहारकर साफ़ करती है, सदा सुव्यवस्थित रीति से घर का काम-धन्धा करती है, पति के साथ मिलकर व्रत-उपवास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रखती है, अतिथि का यथोचित सेवा-सत्कार करती है, सास-ससुर को प्रसन्न रखती है, दीन-दुखियों पर दया करती है, वह स्त्री स्वर्गलोक को प्राप्त होती है।

द्रौपदी और सत्यभामा का संवाद

एक दिन सत्यभामा पाण्डवों के यहाँ द्रौपदी से मिलने गईं। वहाँ उन्हें यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि पाण्डवगण द्रौपदी से बहुत ही प्रसन्न रहते हैं। कभी स्वप्न में भी उनका अनादर नहीं करते और सदा ही उनकी रुचि के अनुकूल कार्य करते हैं। बातों-बातों में सत्यभामा ने द्रौपदी से पूछा—"देवि! तुमने किस जादू के बल से पाण्डवों को इस प्रकार अपने वश में कर रक्खा है? बताओ तो सही, क्या कोई मन्त्र जानती हो? अथवा किसी व्रत या यज्ञ-अनुष्ठान के द्वारा तुमने यह सुख प्राप्त किया है? क्या कोई ऐसी औषधि जानती हो, जिसके द्वारा तुम अपने पतियों को इस प्रकार अपने वश में कर सकी हो? बहन, तुम्हारा इतना अधिक सम्मान और प्रभाव देखकर मुझे सन्देह होता है कि हो न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो, तुमने किसी अद्भुत उपाय का अवलम्बन किया है। क्योंकि पति की इतनी अधिक प्यारी मैं और किसी स्त्री को नहीं देखती। जान पड़ता है, तरह-तरह के सुन्दर वस्त्र-आभूषणों और शृङ्गार आदि के द्वारा ही अपने पतियों का मन वश में किये रहती हो।"

सत्यभामा की बातों को सुनकर द्रौपदी हँसने लगीं और कहा—"सखि! तुमने यह कैसी अद्भुत बात कही? मन्त्र, जादू या औषधि-प्रयोग से तो नीच स्वभाव की स्त्रियाँ अपना स्वार्थ सिद्ध किया करती हैं। ये उपाय उन्हीं के लिए हैं। पतिव्रता स्त्री कभी इन उपायों का सहारा नहीं लेतीं। वरन् इनसे अत्यन्त घृणा करती हैं। मुझे स्वप्न में भी ऐसी आशा न थी कि मैं तुम्हारे मुँह से ऐसी बात सुनूँगी। बहन, मन्त्रादि के द्वारा पति वश में नहीं होते। बल्कि यदि पति को किसी तरह यह पता चल जाता है कि उसकी स्त्री इन घृणित उपायों से उसे वशीभूत करना चाहती है तो वह उसे काली नागिन के समान भयावनी समझकर सदा उससे अलग रहता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। कारण यह है कि इन सब उपायों से कभी पति का जीवन संशय में पड़ जाता है। मूर्ख स्त्रियाँ प्रायः इन उपायों से अपने पति के जीवन के नाश का कारण बन बैठती हैं। कितनी ही पापिनी स्त्रियाँ पति को वशीभूत करने के लिए औषधियों का प्रयोग करती हैं। ऐसा करने से किसी को जलोदर हो जाता है, कोई कुष्ठ रोगी हो जाते हैं, किसी की आँखें जाती रहती हैं, कोई बहरे हो जाते हैं। इसलिए बहन, इन उपायों से स्त्रियों का भला नहीं होता। बल्कि हित के विपरीत ही फल होता है।

"सखि, पति का मन लुभाने और उन्हें प्रसन्न रखने के लिए स्त्रियों को एकमात्र पतिसेवा और पतिभक्ति का अवलम्बन करना चाहिये। मैं किन उपायों से पाण्डवों की ऐसी प्यारी बनी हूँ, वह तुम्हें सुनाती हूँ—

"बहन, मैंने सदा ही एकाग्रभाव से पाण्डव और उनके साथ ही साथ उनकी अन्यान्य स्त्रियों की भी सेवा-शुश्रूषा की। पतियों के निकट मैंने कभी किसी प्रकार का गर्व नहीं किया। कड़ी बात कहना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

या आज्ञा न मानना तो दूर रहा, मैंने उन देवताओं के इशारे का भी कभी उल्लङ्घन नहीं किया। उनको देखे बिना मुझे क्षण भर भी शान्ति नहीं मिलती। जब वे कहीं बाहर चले जाते तो मैं सारे सुख-भोग को त्यागकर उन्हीं की कुशल-कामना से व्रत-पूजन आदि किया करती हूँ और सदा ब्रह्मचर्य का पालन करती हूँ। जब वे लौट कर आते हैं तो शीघ्र ही उठ कर उनके चरणों में प्रणाम करती हूँ और तन मन से उनकी सेवा में लग जाती हूँ।

"बहन! मेरी तरह पति की होकर रहना ही स्त्रियों का एकमात्र धर्म है। पति ही स्त्री का देवता है, वही उसका सर्वस्व है। इसलिए उसकी इच्छा के विरुद्ध कार्य करना स्त्री के लिए सर्वथा अनुचित है। पति के समान स्त्री के लिए कोई दूसरा देवता नहीं है। देखो, पति ही उसके सब सुखों का मूल है। उसी के प्रसाद से वह सन्तानलाभ करती है, घर में भोजन-वस्त्र से सुखी रहती है, व्यवहार की सब चीज़ें उसी के द्वारा प्राप्त होती हैं, संसार में यश होता है, नाम होता है, फिर ये लौकिक लाभ ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं, किन्तु एक दिन पति के द्वारा ही उसे स्वर्ग-लाभ होता है। भला, ऐसे पति को क्या कभी स्वप्न में भी असन्तुष्ट करना उचित है ? मैं कभी अपने पति से पहले नहीं सोती और न उनसे पहले भोजन करती हूँ ! उनकी इच्छा का उल्लङ्घन करके घर का कोई काम-धन्धा नहीं करती, उनकी मरज़ी से खाती हूँ, उनकी मरज़ी से पहनती हूँ। किसी अति सुन्दर पर पुरुष की ओर भी—चाहे वह गन्धर्व, किन्नर अथवा देवताओं में से ही क्यों न हो—मैं कभी आँख उठाकर नहीं देखती। खाने-पीने में जो वस्तु उन्हें अरुचिकर जान पड़ती है मैं भी उसे विष के समान त्यागे रहती हूँ और उन्हें भोजन करा लेने के बाद स्वयं भोजन करती हूँ। मैं उनकी हर बात को इशारे ही से समझकर उसी के अनुसार कार्य करने लगती हूँ।

"मैं सदा शान्तभाव से रहती हूँ।

"ससुर की आज्ञा और उनकी सेवा से कभी मुँह नहीं मोड़ती। व्रत, पूजा, उपवास तथा अन्यान्य शुभ कार्य किया करती हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मैं सदा ही अपनी सास को अच्छे भोजनों और अच्छे वस्त्रों से संतुष्ट रखती हूँ। अपने लिए मैं उन से अच्छे भोजनों अथवा वस्त्रों की इच्छा नहीं करती और कभी कोई ऐसी बात नहीं कहती, जिससे उनका जी दुखे।

"शक्तिभर सदा ही अतिथि, अभ्यागत और ब्राह्मण की सेवा करती हूँ।

"बहन, मैं सदा ही पाण्डवों के आय-व्यय के हिसाब की देख-भाल स्वयम् करती हूँ। प्रतिदिन घर को झाड़-बुहारकर साफ़ रखती हूँ। घर की सब सामग्री यथास्थान सजाये रहती हूँ, और नित्य ठीक समय पर भोजन तैयार कर लेती हूँ।

"दुष्टा स्त्रियों के साथ बातचीत कभी नहीं करती।

"आलस्य से दूर रहकर काम-काज में समय व्यतीत करती हूँ। बहुत हँसी और बहुत क्रोध से घृणा करती हूँ। जिस-तिस के साथ हास-परिहास या वार्त्तालाप नहीं करती और न उधर-उधर बैठती हूँ।"

"मैं अकेली अपने पतियों के सारे परिवार का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पालन करती हूँ। गाय-भैंस आदि पाण्डवों के घर के समस्त जीवों के पालन-पोषण का भार भी अपने ऊपर लिये रहती हूँ।"

"बहन, इन्हीं सब उपायों से मैं अपने पतियों को वशीभूत करने में सफल हुई हूँ। यन्त्र-मन्त्र आदि घृणित उपायों से नहीं।"

"सखि, तुम कभी इन निन्दनीय उपायों को काम में लाने का विचार भी अपने मन में न लाना। यदि पति को सदा के लिए वश में करना चाहती हो, तो सुनो, मैं तुम्हें बताती हूँ। इन उपायों से तुम्हें अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी।"

"अपने पति को नित्य ही अपने स्वाभाविक प्रेम का परिचय देती रहो और उत्तम भोजन, उत्तम वस्त्र तथा पुष्प, चन्दन, माला इत्यादि अच्छे-अच्छे पदार्थों की भेंट से सदा उनकी पूजा और सेवा करती रहो। घर के द्वार पर पति की आवाज़ सुनते ही अपने स्थान से उठकर भक्तिपूर्वक उन्हें प्रणाम करो।"

"वे यदि किसी नौकर-नौकरानी को कोई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काम करने की आज्ञा दें तो तुम झट अपने आप उठकर वह काम कर डालो। उनका कोई काम शक्ति रहते नौकर-नौकरानी से न कराओ।"

"पति तुम से जो बात कहै, वह चाहे छिपाने योग्य न हो, तब भी तुम उसे किसी पर प्रकट न करो।"

"सदा ही इस बात को ध्यान में रखते हुए काम करो कि पति तुम्हारे एकमात्र प्रभु हैं, सर्वस्व हैं, अर्द्धाङ्ग हैं। वे यदि भूल से किसी कुमार्ग पर चलने के लिए तैयार हों तो अत्यन्त नम्रतापूर्वक बड़ी बुद्धिमानी के साथ समझाबुझाकर अथवा अन्य उचित उपायों के द्वारा उन्हें उस मार्ग से मोड़ लेना चाहिये। पति के धर्म-कर्म में सहायक होने के कारण ही स्त्री का एक नाम सहधर्मिणी भी रक्खा गया है। यदि स्त्री अपनी चेष्टाओं से पति को गुणी और धार्मिक न बना सके तो वह सहधर्मिणी कैसे कही जा सकती है?

"बहन, इन सब उपायों को काम में लाने पर तुम्हारे पति अश्वय ही तुम्हारे ऊपर अत्यन्त स्नेह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रक्खेंगे। साथ ही संसार में तुम्हारा यश फैलेगा।"

द्रौपदी की इन बातों से सत्यभामा को अत्यन्त हर्ष हुआ और मुक्तकण्ठ से पतिव्रत धर्म की प्रशंसा करते-करते उन्होंने द्रौपदी से विदा ली। चलते समय वे कहने लगीं—

"सखि, तुम्हारे इन उपदेशों को पालन करने पर भविष्य में स्त्री-समाज का बहुत ही कल्याण होगा। भगवान् से प्रार्थना करती हूँ कि तुम्हारे ये उपदेश-वाक्य घर-घर में स्त्रियों के हृदय के बीच सदा ही जाग्रत रहें।"

Durga Kley
1.10.41

॥ इति शुभम् ॥

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

Printed by K. P. Dar, at The A. L. J. Press, Allahabad
Published by Pandit R. N. Tripathi, Hindi-Mandir, Prayag

SPS
305.4364 P 95 K
10522

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

कविता-कौमुदी, पहला भाग—हिन्दी ... ... ३)

कविता-कौमुदी, दूसरा भाग—हिन्दी ... ... ३)

कविता-कौमुदी, तीसरा भाग—संस्कृत ... ... ३)

कविता-कौमुदी, चौथा भाग—उर्दू ... ... ३)

कविता-कौमुदी, पाँचवाँ भाग—ग्राम-गीत (छप रहा है) ३)

पथिक—खंडकाव्य, सादा ॥)
सचित्र सजिल्द १)
मिलन—खण्डकाव्य ... ॥)
मानसी ... ॥)
स्वप्न—खण्डकाव्य ... ॥)
भूषण-ग्रन्थावली ... १)
कुल-लक्ष्मी ... १।)
दम्पति-सुहृद् ... १।)
सद्गुरु-रहस्य ... २॥)
अयोध्याकांड सटीक... १)
हिन्दी-पद्य-रचना ... ।)
सुभद्रा ... ... ॥)

बाल-कथा कहानी,
पहला भाग ... ।=)
,, ,, दूसरा भाग ... ।=)
,, ,, तीसरा भाग ... ।=)
रहीम (संशोधित संस्करण) ।-)
नीति-शिक्षावली ... =)
प्रेम ... ... ।=)
बालकों के लिये रीडरें—
चार भाग =), ≡), ।-), ॥)
कन्या-शिक्षावली—चार
भाग ... -), =), ≡), ।)
हिन्दी-प्राइमर, सचित्र... -)

मिलने का पता—हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग

हमारे यहाँ हिन्दुस्तान भर के सुप्रसिद्ध हिन्दी-पुस्तक-प्रकाशकों की पुस्तकें विक्री के लिये मौजूद रहती हैं। प्रसिद्ध प्रकाशकों के नाम नीचे दिये जाते हैं:—

१ गङ्गा-पुस्तकमाला
२ हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर
३ हिन्दी-पुस्तक-एजेंसी
४ काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा
५ चाँद-कार्यालय
६ ज्ञान-मंडल
७ बाबू मैथिलीशरण गुप्त
८ नवलकिशोर प्रेस
९ बर्मन-कम्पनी
१० इण्डियन प्रेस
११ श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस
१२ लहरी प्रेस
१३ हरीदास ऐण्ड कम्पनी
१४ साहित्य-भवन
१५ प्रताप प्रेस
१६ लाला रामनारायणलाल
१७ तरुण भारत-ग्रन्थावली
१८ अभ्युदय प्रेस
१९ उपन्यास-बहार-आफिस
२० सस्ता साहित्य-प्रकाशक-मंडल
२१ ला० रामदयाल अग्रवाल
२२ खड्गविलास प्रेस
२३ रत्नाश्रम
२४ हिन्दी-पुस्तक-भंडार
२५ आरा-नागरी-प्रचारिणी-सभा
२६ हिन्दी-प्रेस
२७ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन
२८ भारत-जीवन प्रेस
२९ हिन्दी-पुस्तक-भवन
३० छात्र-हितकारी-पुस्तक-माला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE